अमृत वर्ष 2025

Nitesh Gupta & Sunil Kumar Gupta

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Nitesh Gupta & Sunil Kumar Gupta 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7542-015-6

Cover design: Rohit
Typesetting: Namrat Saini

First Edition: January 2026

समर्पित

महाकुंभ 2025 का समापन हो गया। सनातन एवं सनातनियों की आस्था भरपूर तौर पर नजर आई, कुछ लोग विभिन्न कारणों से डुबकी स्नान कर नहीं पाये। मन में डुबकी के चाहत की टीस तो रही परंतु मन ही मन प्रयागराज को याद करते हुए माँ गंगा, यमुना एवं सरस्वती (संगम) को बार बार नमन किया। कहते है महाकुंभ में देवतागण भी पधार जाते है जिससे डुबकी स्नान बहुत पुण्य हो जाता है।

मैं सभी सनातनियों, साधु संतों, देवताओं, परवरदिगार एवं अपनी माँ को यह किताब समर्पित करता हूँ।

नीतेश गुप्ता

प्राक्कथन

दो घड़ी, आधों घड़ी आधों में पुनि आध, तुलसी चर्चा राम की हरै कोटि अपराध।

(तुलसीदास जी ने सुसंगती के महत्व का जिक्र करते हुए कहा है एक घड़ी,आधी घड़ी या चौथाई घड़ी जितना भी समय मिले सत्संग या राम चर्चा से जाने अनजाने करोड़ों - करोड़ों पाप धुल जाते हैं।)

तात स्वर्ग अपबर्ग, धरिअ तुला एक अंग। तूल न ताहि सकल मिली, जो सुख लव सत्संग।।

(हे तात ! स्वर्ग और मोक्ष के सभी सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए तो भी वे सब मिलकर दूसरे पलड़े पर रखे हुए क्षण भर के सत्संग के सुख के बराबर नहीं हो सकते।)

गोस्वामी तुलसीदास जी ने इन दोहों के द्वारा हर सनातनी, हर मनुष्य को साधु, संत, ज्ञानियों, गुरु की सीख एवं संगति को बहुमूल्य बताया है। कुंभ डुबकी स्नान हर साल आता है परंतु तीसरे तथा छठे साल में इसका महत्व बढ़ जाता है। साल 2025 का कुंभ महाकुंभ कहलाया क्योंकि ऐसा संयोग हर 144 सालों बाद आता है। हम सभी इस महान उत्सव के साक्षी बने, यह हमारा सौभाग्य है। जाहिर है कुछ लोगों ने डुबकी का सौभाग्य नहीं पाया परंतु इस पर्व के प्रति आस्था, निष्ठा भी पुण्य देते हैं। मैं सोचता हूं हर भारतवासी अपने धर्म एवं संस्कार को इसी तरह संजोते रहे तो सनातन एवं सनातनी जो अजर अमर है, सदा रहेगा।

उत्सव धर्मी होना मनुष्य का स्वभाव है। हमारे पर्व और त्योहार हमें आनंद देते हैं, इसी आनंद से हम उत्सवधर्मी बन जाते हैं। भारत की संस्कृति भी उत्सव धर्मी है, हम इसी समाज में रहते हैं। सनातनियों ने कभी एकादशी तो कभी पूर्णिमा को भी त्योहार में शामिल कर दिया। साथ शादी – ब्याह के धार्मिक रस्मों - रिवाजों ने त्यौहार में अपना योगदान किया है। उत्सव केवल खाने,पीने, नए कपड़ों तक सीमित नहीं होता यह हमें पारिवारिक, सामाजिक समरसता, सहयोगिता, सहकारिता का आभास कराते हैं। हमने जन्म मृत्यु को भी उत्सव से जोड़ा। अपनों के जाने का गम जब मृत्यु लेकर आती है तो कुछ दिनों तक धार्मिक पूजन, भोज करते हैं। ऐसे में संबंधियों, पड़ोसियों, दोस्तों का साथ धीरे-धीरे हमारे गम को कुछ कम करने में सहायक होते हैं। हम जीने का हौसला प्राप्त करते हैं। उत्सव धर्मी बनने से आनंद में गोता लगाने का, स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी खुशी के रंगों में सरावोर करने का मौका मिलता है।

मैं एक दृष्टिबाधित हूँ, महाकुंभ के अमरत्व की दास्तान पढ़ते पढ़ते मैंने अपने पिताजी के सहयोग से इसे किताब के पन्नों में गढने का प्रयास किया है ताकि बहुत सी अनजानी बातें सभी लोग जान सके। आने वाले युवा भी इससे रुबरु हो सके। जय भोले नाथ।

लेखक - नितेश गुप्ता

सह - लेखक - सुनील कुमार गुप्ता

विषय सूची

आर्शीवचन...1

अमृत वर्ष 2025...28

सनातन धर्म, महाकुंभ पर्व...............................54

कुम्भ के किस्से 86

हरि कीर्तन..186

आर्शीवचन

माँ-बाप को ईश्वर के समरूप दर्जा दिया गया है तो गुरु उस ईश्वर के साथ एकरूप होने में रास्ता दिखाने वाला बताया गया है। मनुष्य का बचपन बहुत निर्भीक, अबोध होता है। कहा जाता है कुम्हार के चाक पर जैसा हाथ फेरो वैसा बर्तन बन जाता है। बचपन भी ऐसा ही है जैसे संस्कार दो वैसा ही बच्चा बन जाता है। संस्कार का एक हिस्सा है बड़ों का सम्मान। बड़ों के सम्मान की शुरुआत होती है उन्हे आदर करने से, उन्हें आदर मिलता है उनके पैर छूने से। याद करे प्रभु श्री राम का प्यार, आशीर्वाद और भक्ति पाने के निषाद राज ने उनके पैर छूने के साथ-साथ पैर पखाड़े तथा उस चरणामृत से अपने समाज का भी उद्धार किया।

तुलसीदास ने लिखा हैः-

मांगी नाव न केवटु आना, कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।
चरन कमल रज कहुं सबु कहई, मानुष करनि मूरि कछु अहई।।

राम ने केवट से नाव मांगी पर वह लाता नहीं। वह कहने लगा मैंने तुम्हारा मर्म जान लिया। तुम्हारे चरण कमलों की धूल के लिए सब लोग कहते है कि वह मनुष्य बना देने वाली कोई जड़ी है।

एहि प्रति पालऊँ सबु परिवारु, नहिं जानऊँ कछु अऊर कबारू।
जौ प्रभु पार आवसि गा चहहू, मोहि पद पदुम पखान कहहू।।

मैं तो इसी नाव से सारे परिवार का पालन पोषण करता हूँ। दूसरा कोई धंधा नही जानता। हे प्रभु यदि तुम अवश्य ही पार

जाना चाहते हो तो मुझे पहले अपने चरण कमल पखारने के लिए कह दो।

बड़ो के पैर छूने एवं पखारने की परंपरा बहुत पुरानी है लेकिन इस प्रक्रिया में बहुत बदलाव आया है जो सराहनीय नहीं है। हम केवल बिना छूये ही प्रकिया पूरी करना चाहते है। मुझे याद आता है फिल्म सूर्यवंशम का वो हिस्सा जिसमें अमिताभ बच्चन (गाँव के मुखिया) गाँव के प्रधान की हैसियत से अपने आई ए एस बहू से मिलने जाते हैं। उन्होंने बेटा हीरा एवं बहू दोनों को नकारा करार कर घर से बहिष्कार कर दिया था, परन्तु लगन और मेहनत ने उन्हें धन, शोहरत सभी कुछ दिया। बहु अपने आई ए एस बनने का सपना भी पूरा कर ली। जब मुखिया बहू से मिलने आते है तभी आफिस के काम को रोककर ससुर को खास कहकर आदर देना, प्रणाम के लिए हाथ जोड़ना, सहेली से फोन पर ससुर के जन्मदिन की बात बताना और सबसे बहुमूल्य पेपर वेट को गिराकर, झुककर ससुर के दोनों पैरों को स्पर्श करना। ऐसा दृश्य प्रस्तुत करता है किस तरह नफरत करने के बाद भी माँ-बाप, बड़ों का सम्मान करना चाहिए। पैर छूना कोई रश्म नही है यह प्रेम, अपनापन एवं दुआओं का वो जज्बा है जिसकी छाँव में हम हमेशा महफूज रहते है। ये सभी बातें हमें हमेशा बड़ो के सम्मान करने की ओर इशारा करते है, मैं कुछ लोगों के जीवन से परिचय करवाता हूँ। जाने-अनजाने लोगों ने आशीर्वाद, प्यार की उन पर बरसात कर दी। ऐसे लोगों की समाज-सेवा भुलाए नहीं भूलते।

सिख परंपरा में बहुत ही सुंदर अभिवादन है- सत श्री अकाल ! यह दुनिया के सबसे अच्छे अभिवादनों में से एक है। इसमें सत से अभिप्राय है सत्य, श्री का अर्थ है धन और अकाल से आशय है शाश्वत, यानी सत्य ही वास्तविक धन है, जो शाश्वत है। यह जो अविनाशी पारलौकिक दिव्यता है, वही सत है, वही

वास्तविक धन है। तो आप सभी ने, जिन्होंने भी ध्यान किया है, अपने अंतर में उतरकर वास्तविक धन प्राप्त किया है, यही सत्य है। यही सत श्री अकाल है जो बोले सो निहाल सत श्री अकाल ! जो भी यह कहता है, वह ऊपर उठता है। निहाल का अर्थ है उत्कर्ष; यानी तुम्हारा उत्थान होगा। कहते हैं, सत श्री अकाल का उद्घोष न केवल आपको शौर्य से भर देता है, बल्कि यह आपको शाश्वत अस्तित्व की भावना से भी भरता है।

आज भी सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह जी के संदेश कितने प्रासंगिक हैं। वह कहते हैं- 'तुम्हें शक्तिवान होना चाहिए, मगर अपने दिल से नरम रहना चाहिए। तुम्हें अपने अंतर से आध्यात्मिक होना चाहिए। तुम एक संत सिपाही बनो, यानी संत और सैनिक, एक साथ।' उनके कहने का आशय यह है कि तुम्हें अन्याय के विरुद्ध, किसी प्रकार के जुल्म के खिलाफ खड़े होना चाहिए। तुम ऐसे संत नहीं हो सकते, जो सिर्फ यह कहे कि ठीक है, जो होता है, उसे होने दो! तुम्हें न्याय के पक्ष में खड़ा होना चाहिए और साथ ही, एक संत की तरह अपने भीतर से करुण होना चाहिए। यह गुरु गोबिंद सिंह जी ही थे, जिन्होंने दृढ़ता और कोमलता के इस दुर्लभ संयोजन को स्थापित किया। जब वह देह त्याग रहे थे, तब उन्होंने कहा था, 'मेरे बाद ग्रंथ ही तुम्हारा गुरु होगा। इसमें सारा ज्ञान संगृहीत है। यही अब से तुम्हारे गुरु हैं; तुम्हारे मार्गदर्शक प्रकाश!' इसीलिए समस्त गुरुद्वारों में आप पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहिब पाएंगे। इस ग्रंथ में मानवता के कल्याण के लिए पिरोए गए ज्ञान अनमोल हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में सोलह विभिन्न संतों की कहानी और उनकी शिक्षाएं संकलित हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में कहा गया है, एक ओंकार सत नाम, केवल एक

ओम् है, जो अविनाशी, अनंत का सच्चा नाम है। ओम् वह शाश्वत ध्वनि है, जो व्यक्ति की चेतना की गहराई में विद्यमान है।

जब आप सागर तट पर जाएंगे और उसकी लहरों से निकलने वाली ध्वनि को ध्यान से सुनेंगे, तो आपको 'ओम्' की आवाज सुनाई पड़ेगी। जब आप किसी पहाड़ की चोटी पर जाकर हवा को सुनेंगे, तो आपको 'ओम्' की ध्वनि सुनाई देगी। इस जन्म से पहले हम सब 'ओम्' में थे। इस जन्म के बाद हम उसी ब्रह्मांडीय ध्वनि 'ओम्' में विलीन हो जाएंगे। सृष्टि की गहराई में अब भी वह ध्वनि गूंजती रहती है।

श्री श्री रविशंकर

दक्षिण कोरिया की प्रसिद्ध साहित्यकार हान कांग की किताबों में इंसानी हिंसा के विविध रूप उभरते हैं। छह साल पहले एक साक्षात्कार में उन्होंने बताया था, 'मैं इस बात की मूल वजह जानना चाहती थी कि किसी इंसान को गले लगाना मेरे लिए इतनी तकलीफदेह बात क्यों है और मैं अपने अंदर टटोलती चली गई।'

53 वर्षीया हान कांग का साहित्य विविध सवालों के जवाब अपने अंदर ही टटोलने के अभियान जैसा है। कोई अचरन नहीं, आज दुनिया हान कांग के साहित्य का खजाना टटोल लेना चाहती है। साल 2024 साहित्य का नोबेल पुरस्कार हान कांग को देने की घोषणा हुई है। दक्षिण कोरियाई इतिहास में पहली बार किसी साहित्यकार को साहित्य का शीर्ष सम्मान मिला है। हान को पढ़ने वाले और उनके लेखन के मुरीदों के लिए उन्हें नोबेल मिलना ऐसा है, मानो वह इसके लिए ही बनी हों। कोरियाई प्रायद्वीप आज पूरी दुनिया में अपने विभिन्न रंग-रूप

और कलेवर में उपस्थित है और साहित्य इसका एक बड़ा हिस्सा है। किसे पता था कि हाल्यू (कोरियाई वेब) से शुरू हुई दक्षिण कोरिया की यह यात्रा साहित्य के नोबेल तक पहुंच जाएगी। हान कांग की सबसे प्रसिद्ध किताब 'द वेजिटेरियन' के अंग्रेजी में अनुवादित संस्करण को साल 2016 में मैन बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। तब से आज तक हान वैश्विक पटल पर अपने पाठकों का प्रेम अर्जित करती आ रही है। हान को साहित्य का संस्कार अपने पिता हान संग-वॉन से विरासत में मिला है। निस्संदेह, यह हान के 85 वर्षीय पिता के लिए भी बहुत खुशी का मौका है। पिता प्रतिष्ठित लेखक है, उन्हें भी उम्दा साहित्य के लिए अनेक सम्मान मिल चुके हैं। बेटी हान को नोबेल मिलने की खबर पर प्रतिक्रिया देते हुए उनके लेखक पिता ने कहा है कि "हान कांग की किसी भी रचना को खारिज नहीं किया जा सकता। यह दुख-तकलीफ और इंसानी जज्बात को जिस तरह अपनी कथा में पिरोती है, अपनी कृति को अद्भुत, अति सुंदर और पठनीय बना देती है।'

अपने लेखन में मौजूद गाढे अंधेरे और गंभीरता के बारे में पूछे जाने पर हान बताती है, 'मुझे हमेशा यह महसूस होता है कि उपन्यास लिखते समय में लगातार सवाल करती रहती हूँ, और साथ ही, मैं इंसानी हिंसा और इसे अस्वीकार करने की संभावना या उसके घटित न होने की उम्मीदों के बारे में लंबे समय से चले आ रहे अपने सवाल से जूझना चाहती हूं।' वह अपनी कृतियों के जरिये अपने सवालों को पाठकों तक पहुंचाना चाहती हैं, ताकि जवाब खोजने में आसानी हो।

जहां एक ओर, हान की शुरुआती किताबों में मनुष्यों के बीच के अलगाव, हिंसा, विछोह के कारण मिलने वाले आघात जैसे विषय दिखाई पड़ेंगे, वहीं बाद की कृतियों में हिंसा, तंत्र की वजह से इंसानों पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष-परोक्ष सामाजिक-मानसिक दवाव और बने-बनाए ढांचे को तोड़कर इंसान को इंसान के रूप में देखने की चाह पुरजोर नजर आती है। एक विशेषता यह भी है कि हान की किताबों में किरदार आमतौर पर स्वयं स्त्रियां होती हैं या उनका कथानक स्त्री-जीवन के इर्द-गिर्द बुना होता है। हान के स्त्री पात्र आक्रामक, बहुत मुखर और हिंसक हुए बिना विरोध दर्ज कराते हुए व्यवस्था पर कड़ी चोट करते हैं। द वेजिटेरियन में वह कोरियाई समाज के 'मांसाहार' की प्रवृत्ति पर तगड़ी चोट करती हैं। वहीं उनकी दूसरी प्रसिद्ध कृति द व्हाइट बुक में उन्होंने सफेद रंग को ही अपना पात्र बना दिया है और जीवन-मृत्यु, सुख-दुख के संतुलन को दर्शाया है। साल 2023 में प्रकाशित अपनी किताब आई डू नॉट बिड फेयरवेल में स्त्रियों के माध्यम से हिंसा, मानवीय संबंधों में आने वाले अलगाव से पैदा होने वाले दुख व शोक को सामने रखा है। उनका यह उपन्यास हिंसा और युद्ध के बाद मिलने वाले दुख से उबरने के लिए किए जा रहे संघर्षों की कहानी है। हान के नोबेल जीतने से कोरियाई साहित्य का विस्तार होना तय है। हिंदी में उनकी रचनाओं का अनुवाद वैसे उपलब्ध नहीं है, जैसे अंग्रेजी में सुलभ है। बेशक, आज जब अनेक देश युद्ध में उतरे हुए हैं, तब हान कांग का साहित्य अमन-चैन के काम आ सकता है।

चाहे जैसा भी माहौल हो। दृढ़ता से काम करते हुए उसमें से अपने लिए आवश्यक ऊर्जा ले लीजिए। ऐसा ही हमारा जीवन होना चाहिए। अपने बारे में जिम्मेदारी का बोध होने पर ही कोई

दूसरों के लिए जिम्मेदारी लेकर उसको रास्ता दिखा सकता है। जो लोग इस तरह सजग होकर किसी लक्ष्य के साथ जीते हैं, वही सफल हो पाते हैं। आचार्य विनोबा भावे ने राजघाट में एक विराट प्रार्थना सभा के प्रवचन में कहा था, ईश्वर की राह पर चलते हुए मरना भी जिंदगी है और शैतान की राह पर जिंदा रहना भी मौत है। गांधी जी ईश्वर की राह पर सच्चाई और भलाई की राह पर चलने की निरंतर कोशिश की, धन्य है उनका जीवन और धन्य है उनकी मृत्यु। लोगों के सेवा-भाव, बलिदान, हमें यही सीख देती है।

सिकंदर को सिकंदर महान (Alexender The Great) कहा गया है क्योंकि उसने अपनी सभी लड़ाइयां जीती। इतिहास हमेशा उसे याद करता है। वह युनान का रहने वाला था। बहुत कम उम्र मे राजा बना एवं महज 32 की उम्र में उसकी मृत्यु हो गई। उसकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि सफल राजाओं में उसकी गिनती होती थी। मृत्यु की अंतिम वर्षों में जब वह मृत्यु शैया पर लेटा था, अपने अनुयायियों से कहा, जब मेरी मौत हो तोः

1. मेरे जनाजे को राज्य के एक प्रतिष्ठित एवं कुशल डॉक्टर से कंधा लगवाना था ताकि दुनियाँ जान सकें मृत्यु से लड़ने की कोई दवा नहीं है।
2. कब्र में जब मुझे रखा जाए तो मेरे दोनों हाथ बाहर रहें ताकि सभी को यह प्रेरणा मिले हम इस संसार में कुछ भी लेकर नहीं आये थे तथा कुछ भी लेकर नहीं जा सकते हैं।
3. मेरे जनाजे के चारो तरफ बहुमुल्य हीरे जवाहरात सजा देना, जिससे लोग समझें सभी कुछ यहीं छूट जाना है।

तातपर्य है कि मृत्यु सभी के साथ बराबर का व्यवहार करती है।

विश्व में दो सबसे सुप्रसिद्ध और आदर्श पत्र माने गए हैं उनमें से एक है घनश्याम दास बिड़ला का पुत्र के नाम तथा दूसरा अब्राहम लिंकन का शिक्षक के नाम पत्र।

प्रथम पत्रः श्री घनश्याम दास बिड़ला (G.D. Birla) का अपने बेटे के नाम लिखा हुआ पत्र इतिहास के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में से एक माना जाता है। 1934 में अपने पुत्र बसंत कुमार जी बिड़ला (बी के बिड़ला) को एक अत्यन्त प्रेरक पत्र लिखा था।

चिरंजीवी बसंत,

यह जो लिखता हूं उसे बड़े होकर और बूढ़े होकर भी पढ़ना, अपने अनुभव की बात कहता हूँ। संसार में मनुष्य जन्म दुर्लभ है और मनुष्य जन्म पाकर जिसने शरीर का दुरुपयोग किया वह पशु है, तुम्हारे पास धन है, तंदुरुस्ती है, अच्छे साधन है, उनको सेवा के लिए उपयोग किया तब तो साधन सफल है अन्यथा वे शैतान के औजार हैं। तुम इन बातों को ध्यान रखना। धन का मौज- शौक में कभी उपयोग न करना ऐसा नहीं की धन सदा रहेगा ही इसलिए जितने दिन पास में है उसका उपयोग सेवा के लिए करो अपने ऊपर कम से कम खर्च करो, बाकी जनकल्याण और दुखियों का दुख दूर करने के लिए व्यय करो। धन शक्ति है इस शक्ति के नशे में किसी के साथ अन्याय हो जाना संभव है इसका ध्यान रखो कि अपने धन के उपयोग से किसी पर अन्याय ना हो।

अपनी संतान के लिए भी यही उपदेश छोड़कर जाओ। यदि बच्चे मौज शौक आराम वाले होंगे तो पाप करेंगे और हमारे व्यापार को चौपट करेंगे। ऐसे नालायकों को धन कभी ना देना उनके हाथ में जाए उससे पहले ही जन कल्याण के किसी काम में लगा देना या गरीबों में बाँट देना। तुम उसे अपने मन के अंधेपन से संतान के मोह में स्वार्थ के लिए उपयोग नहीं कर सकते। हम

भाइयों ने अपार मेहनत से व्यापार को बढ़ाया है यह समझकर कि सभी लोग धन का सदुपयोग करेंगे।

भगवान को कभी ना भूलना, वह अच्छी बुद्धि देता है, इंद्रियों पर काबू रखना वरना वह तुम्हें डूबो देगी नित्य नियम से व्यायाम,योग करना। स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी संपदा है। स्वास्थ्य से ही कार्य में कुशलता आती है, कुशलता से कार्य सिद्धि और कार्य सिद्धि से समृद्धि आती है। सुख समृद्धि के लिए स्वास्थ्य ही पहली शर्त है। मैंने देखा है कि स्वास्थ्य संपदा से रहित होने पर करोड़ों अरबों के स्वामी भी कैसे दीन-हीन बनकर रह जाते हैं। स्वास्थ्य के अभाव में सुख साधनों का कोई मूल्य नहीं। इस संपदा की रक्षा हर उपाय से करना। भोजन को दवा समझ कर खाना। स्वाद के वश में होकर खाते मत रहना। जीने के लिए खाना है ना कि खाने के लिए जीना है।

घनश्याम प्रसाद बिरला

द्वितीय पत्रः अब्राहम लिंकन जो अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति थे उन्होंने अपने पुत्र के शिक्षक के नाम अंग्रेजी में पत्र लिखा उसका हिंदी अनुवाद।

हे शिक्षक !

मैं जानता हूँ और मानता हूँ कि ना तो हर व्यक्ति सही होता है और ना ही सच्चा होता है किंतु तुम्हें सिखाना होगा कि कौन बुरा है और कौन अच्छा। दुष्ट व्यक्तियों के साथ-साथ आदर्श प्रणेता भी होते हैं, स्वार्थी राजनीतिज्ञों के साथ-साथ समर्पित नेता भी होते हैं। दुश्मनों के साथ-साथ मित्र भी होते हैं, हर विरुपता के साथ सुंदर चित्र भी होते हैं। समय भले ही लग जाए

पर यदि सीखा सको तो उसे सीखना कि पाए पाँच पैसे से अधिक मूल्यवान है स्वयं एक कमाना।

पाई हुई हार को कैसे झेले, उसे यह भी सिखाना और साथ ही सिखाना, जीत की खुशियां मनाना। जितनी जल्दी हो सके उसे जानने देना कि दूसरों को आतंकित करने वाला स्वयं कमजोर होता है, वह भयभीत और चिंतित है क्योंकि उसके मन में स्वयं चोर है। उसे दिखा सको तो दिखाना किताबों में छुपा खजाना। उसे वक्त देना चिंता करने के लिए की आकाश के परे उड़ते पंछियों का आह्लाद, सूर्य के प्रकाश में मधुमक्खियां का निनाद, हरी-भरी पहाड़ियों से झांकते फूलों का संवाद कितना विलक्षण होता है और अविस्मरणीय..... अगाध.....

उसे यह भी सिखाना कि वह सदय के साथ सदय हो किंतु कठोर के साथ कठोर। लकीर का फकीर बनकर उस भीड़ के पीछे ना भागे जो करती हो निरर्थक शोर। उसे सिखाना कि वह सब की सुनते हुए अपने मन की भी सुन सके, हर तथ्य को सत्य की कसौटी पर कसकर गुन सके। यदि सीखा सको तो सीखना कि वह दुख में भी मुस्कुरा सके, घनी वेदना से आहत हो पर खुशी के गीत गा सके। उसे यह भी सीखाना की आंसू बहते हो तो उन्हें बहने दे इसमें कोई शर्म नहीं......कोई कहता हो-कहने दे।

उसे सीखाना, वह सनखियों के कनखियों से हंस कर टाल सके पर अत्यंत मृदु भाषी से बचने का ख्याल रखें। वह अपने बाहुबल वा बुद्धिबल का अधिकतम मोल पहचान पाए परंतु अपने हृदय व आत्मा की बोली ना लगवाए। वह भीड़ के शोर में भी अपने कान बंद कर सके और स्वतः की अंतरात्मा की सही आवाज सुन सके। सच के लिए लड़ सके और सच के लिए अड़ सके। उसे सहानुभूति से समझाना पर प्यार के अतिरेक से मत बहलाना, क्योंकि तप-तप कर ही लोहा खरा बनता है, ताप पाकर ही सोना निखरता है। उसे साहस देना ताकि वक्त पड्ने पर अधीर बने, सहनशील बनाना ताकि वह वीर बने। उसे

सिखाना कि वह स्वयं पर असीम विश्वास करें ताकि समस्त मानव जाति पर भरोसा व आस धरे।

यह एक बड़ा सा लंबा चौड़ा अनुरोध है पर तुम कर सकते हो क्या इसका तुम्हें बोध है? मेरे और तुम्हारे दोनों के साथ उसका रिश्ता है, सच मानो मेरा बेटा एक प्यारा सा नन्हा सा फरिश्ता है। (हिंदी अनुवाद मधुंपत अगस्त 2004)

आज 9 अगस्त 2025 रक्षाबंधन या राखी का पर्व है। राखी के पर्व की याद आते ही भाई बहन के रिश्तों की याद बरबस आ जाती है। यह पर्व भारत के अलावा कुछ और देशों में मनाई जाती है। राखी का पर्व के दिन हर भाई या बहन इसे मना रहे होंगे यह जरूरी नहीं है। कुछ बहनों के भाई नहीं है तो कुछ भाईयों के बहन नहीं हो सकते हैं। कुछ लोगों ने इस रिश्ते को कड़वाहट से सींचकर रिश्ता ही छिन्न-भिन्न कर दिया। इस पर्व के कुछ ऐतिहासिक एवं पौराणिक तथ्य जिसकी उत्पत्ति प्राचीन कथाओं में है। इंद्र की पत्नी इंद्राणी द्वारा बाँधा गया रक्षा सूत्र, देवी लक्ष्मी द्वारा राजा बलि को बांधी गई राखी और श्री कृष्णा की चोट पर द्रौपदी द्वारा बांधी गई साड़ी का टुकड़ा। मुगल काल में भी इसका प्रमाण मिलता है जब सम्राट शाह आलम द्वितीय ने एक हिंदू महिला का सम्मान करने के लिए इस परंपरा का पालन किया।

इंद्र और इंद्राणीः दैत्य वृगासुर के आक्रमण के दौरान देवी इंद्राणी ने इंद्र की रक्षा के लिए एक रक्षा सूत्र तैयार किया और उनकी कलाई पर बांध दिया। जिससे इंद्र युद्ध में विजय हुए, तभी से बहनें अपने भाइयों की कलाई पर रक्षा सूत्र बाँधने लगी।

लक्ष्मी और राजा बलिः इस दूसरी कथा के अनुसार माँ लक्ष्मी ने राजा बलि के हाथ पर राखी बांधी और उसने भगवान विष्णु को मांग लिया। इसी के बाद भाई बहन का यह पर्व मनाया जाने लगा।

कृष्ण और द्रौपदीः जब भगवान की उंगली कट गई थी तो द्रौपदी ने अपनी साड़ी का टुकड़ा काटकर उनकी उंगली पर पट्टी बांधी दी। इससे प्रभावित होकर कृष्ण ने उनकी रक्षा करने का वचन दिया जो रक्षाबंधन की परंपरा का आधार है।

ऐतिहासिक प्रमाण बताते हुए रक्षाबंधन का उल्लेख प्राचीन काल से ही चला आ रहा है यह केवल भाई-बहन का त्यौहार नहीं अपितु रक्षा सूत्र बांधकर हम किसी की भी रक्षा करने का वादा करते हैं।

आशीर्वचन के संदर्भ में हमारे मित्र डॉ मोहन का जिक्र करना चाहता हूँ, हर रोज दो लाइन ज्ञान की बातें वॉट्सएप पर लिखकर सुबह की शुरुआत राम-राम के साथ करते हैं। उनके शब्द मैं इकट्ठा कर प्रस्तुत कर रहा हूँ। उनका परिचय उन्हीं के लिखे शब्दों में साझा करता हूँ।

मैं लखनऊ का रहने वाला पेशे से होम्योपैथिक डाक्टर हूँ। मेरे पिता एवं दादाजी लखनऊ में ही रहते थे। अपनी पढ़ाई पूरी कर उत्तर-प्रदेश राज्य में होम्योपैथिक डॉक्टर के पद पर तैनाती हुई। उत्तर-प्रदेश के विभिन्न शहरों, गाँवों, कस्बों में मैंने पूरे सहयोग, मुहब्बत एवं लगन से लोगों की सेवा की, लोगों का बहुत प्यार और सम्मान भी मिला।

मैंने महसूस किया कि मनुष्य के लिए दवा से अधिक दुआ, अच्छे विचार तथा ज्ञानियों की सीख कारगार होती है। अच्छे विचारों को बार-बार कलमबद्ध कर लोगों को याद दिलाना पड़ता है। सन् 2015 में मैं सेवानिवृत्त हो गया। अपने दो बच्चों की परवरिश में मशगूल हो गया। पत्नी का देहांत 10 साल पहले ही हो चुका था अतः माँ बाप दोनों की जिम्मेदारी संभाला, उनकी शादी कर दी। इन हालातों में जीवन के बहुत सारे अनमोल पहलुओं और क्षणों को निहारनें का मौका मिला। शुरु कर दिया सुबह की शुरुआत ज्ञान के दो लाइन और नित्य राम-राम के साथ शायद पढ़ने वालों को कुछ सुकून, ज्ञान मिलें।

- हमेशा सकारात्मक सोच बरकरार रखिए। हर बन्द रास्ते और रुकावट के बावजूद एक रास्ता उस तक पहुंच ही जाता है।
- आईना आप हर जगह ले कर नहीं जा सकते लेकिन निगाहों की निगरानी यह काम बहुत मुस्तैदी से करती हैं। अपने भगवान के साथ शुरू करके परीक्षण कर सकते हैं।
- कठोरता के पीछे कोमलता मन का मालिक होता है हर पुरुष में उसका भार उठाने का हुनर बचपन से ही आ जाता है। आंधी, पानी और, तूफान उसके हौसले को डिगा नहीं पाते।
- शान्ति और खुशी के माहौल को केवल एक घुन चौपट कर देता है वह है उधारी, कर्ज से जो बचा वह तर गया।
- प्रेम इन्सानी जीवन का दोराहा है जहां से एक रास्ता समर्पण तो दूसरा चाहत और लूट की ओर। पहले वाले रास्ते में कष्ट तो बहुत मिले लेकिन प्रेमी (भगवान) से मिलते ही सारी थकान आनन्द, उत्साह और धन्य हो गई। दूसरे में खुद को आनन्द के साथ साथ आत्मग्लानि और शरम का लबादा ओढ़ मुंह छिपा घर लौट आए।
- जिन्दगी तुम बहुत जल्दी में रहती हो। बैठो कुछ बातें करनी हैं, कुछ हिसाब करना है। मकसद समझते ही ज़िन्दगी खिलखिला कर हंसी और फुर्र से चल पड़ी।
- जिक्र उनकी बेवफाई का चर्चा में आ गया,बस करने का सलीका जो ना था।
- जीवन और ज्ञान की डगर कहीं पर से और कहीं पर भी शुरू हो जाया करती हैं। अर्जुन के लिए ज्ञान रणभूमि में था।
- केवल आंखों के हिलने को समझने वाली मां और बिना बोले सुनने वाले भगवान में कोई अन्तर नहीं है दोनों को दिल में ही रहना भाता है। दोनों का साथ आनन्ददायक है।

- मंजिल के रास्ते दर्द और कष्टकारी होते हैं जब कि मंजिल पर खड़े होना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और आनन्द का सोपान होता है।
- निगाहों के तकाज़े का मज़ा लिया जाए देख कर, घूरकर और नैनों में बसा कर उसका दीदार किया जाए।
- भगवान है कोई गैर तो नहीं जल्दबाजी और हड़बड़ी में इस मंजर को क्यों गंवाया जाए।
- आप और सबके लिए उनकी मां ही सबसे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उनका बिकल्प कभी हो ही नहीं सकता। इसीलिए आप उन्हें नहीं भी चाहते हैं तब भी आपको उतना ही चाहती हैं जितना आप सोच भी नहीं सकते। बस इस आंचल का आनन्द लीजिए । बहुत सारी बलाएं दूर रहने वाली हैं।
- घर तुम्हारा तो कुछ मर्जी तो होनी ही चाहिए। बस एक खिड़की अपनी मर्ज़ी की ज़रूर बनवा लीजिए जिसके पल्ले अन्दर की तरफ खुलते हों। बहुत सुकून देगी।
- राम की एक ही सबसे बड़ी खासियत है। देख लें तो तर जायें, और छू लें तो डूबना तय है।
- ज़ख्म की दुकान पर कभी भी मरहम नहीं मिलता हां खंजर तेज़ करने का असबाब उम्दा किस्म का मिलेगा।
- राम न तो खोजने की वस्तु है और ना ही तर्क वितर्क का विषय। वो तो आस्था का केंद्र बिंदु, समर्पण का आधार और श्रद्धा का पुंज है जो आपकी सभी सम और विषम परिस्थितियों का सारथी है।
- सांस तू घट रही या फिर बढ़ रही है इस पर ध्यान बिल्कुल भी नहीं जाता। तूने मुझे जिंदगी दी है, उसमें हमने जीने का मकसद निकाल लिया है।
- हम जो कुछ भी हैं दूसरों की मेहरबानी से हैं लेकिन फिर भी तुर्रा हम का रखते हैं। जीवन मां बाप की देन। शिक्षा

गुरु की देन। व्यापार समाज की देन। समाजिक सम्मान परिवार की देन।

- जलाने वाले का हश्र, माचिस की तीली की तरह होता है। मुंह से रगड़ा जाना तो जायज है।लेकिन जलाने के बाद बूट से रगड़ तक डाला जाता है।

बेमिसाल उद्यमी पदम् विभूषण श्री रतन एन टाटा (28/12/37-09/10/2024) दूसरों के लिए जी गए जिंदगीः वह शालीनता से अपनी बात रखा करते थे, जिससे उनके व्यवहार में विश्वास झलकता था। रतन ने कभी सुर्खियों में आने की कोशिश नहीं की, चर्चा में आने वाले लोग उन्हें खोजते रहे। रतन टाटा जैसे बहुत कम लोग होते हैं, जिनको देखकर आप कह सकते हैं कि 'जीवन यदि दूसरों के लिए न जिया, तो। तो फिर क्या जिया !'

रतन ने शुरू से ही अपना जीवन दूसरों को समर्पित कर दिया था। मुझे (एन के सिंह अध्यक्ष 15 वां वित्त आयोग) दशकों तक उन्हें जानने और उनके साथ काम करने का सौभाग्य मिला। उनसे मेरी आखिरी मुलाकात इसी साल 27 मार्च को मुंबई के उनके घर में हुई थी। हमने कई विषयों पर बात की, जिनमें से एक मेरी आत्मकथा भी थी, जिसकी एक प्रति मैंने उन्हें भेंट की थी। मैने उनसे उनकी आत्मकथा के बारे में भी पूछा था, जिसके जवाब में अपनी चिर-परिचित विनम्रता के साथ उन्होंने कहा था, मैंने आत्मकथा नहीं लिखी है। हां, एक जीवनी जरूर तैयार की गई है, जो किसी काम की नहीं, क्योंकि मुंबई के विलिंगडन क्लब के किस्से-कहानियों में शुमार होना फिजूल है!

जीवन के तमाम पहलुओं में रतन का नाम प्रतिष्ठा, प्रशंसा और विस्मय पैदा करता है। वह संस्थाओं और उनकी स्वायत्तता का सम्मान करने वाले चंद लोगों में एक थे। संस्थाओं का निर्माण आसान होता है, लेकिन उनको अनवरत चलाए रखना कहीं अधिक मुश्किल। वरिष्ठ प्रबंधकों में फैसले लेने के अधिकार सहित स्वामित्व को बांट देना किसी भी लोकाचार में स्वाभाविक नहीं माना जाता, हमारे देश में तो और भी नहीं। फिर भी, रतन टाटा ने एक बार कहा था, नेतृत्व का मतलब सिर्फ प्रभारी होना नहीं है, बल्कि अपने अधीनस्थ तमाम लोगों की देखभाल करना भी है।

अपनी कई जिम्मेदारियों में मुझे रतन के साथ मिलकर काम करने का सौभाग्य मिला। वह जापान गए थे, जिसकी चर्चा उन्होंने पिछली मुलाकात में भी की और जापानी कार्य-संस्कृति के बारे में बताया- विश्वास, कंपनी के प्रति अटूट वफादारी और एक-दूसरे का सम्मान करने की संस्कृति।

उन्होंने कई संस्थान स्थापित किए, जिनमें टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, टाटा इनोवेशंस सेंटर्स, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च शामिल हैं। इन सभी ने भारत की विकास-गाथा में बहुमूल्य योगदान दिया है। इन संस्थानों को पर्याप्त संसाधन, प्रतिभा और सबसे महत्त्वपूर्ण स्वायत्तता मुहैया कराने से वे फले-फूले।

वह भारत और भारतीयों के बारे में हमेशा आशावादी रहे और वाकई वैसा ही जीते रहे, जैसा मार्क ट्वेन ने कहा था- खुद को खुश करने का सबसे अच्छा तरीका है, किसी दूसरे को

खुश करने की कोशिश करना। रतन के साथ कोई भी मुलाकात प्रसन्नता और उम्मीद से बेजान नहीं रही। महात्मा गांधी कहते थे, खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है, दूसरों की सेवा में खो जाना। रतन ने इसे अपने जीवन में उतार लिया था।

देश के एक उज्ज्वलतम उद्यमी रतन नवल टाटा की विदाई से जो शून्य बना है, उसकी पूर्ति कभी नहीं हो पाएगी। उनके चले जाने से जो शोक की लहर उठी है, वह दुर्लभ है। पूंजीवाद के गलाकाट दौर में एक रतन टाटा होना क्या मायने रखता है, यह अपने आप में आर्थिक और समाजशास्त्रीय अध्ययन का विषय है। ऐसे उद्यमी किस माटी से बनते हैं? उन्हें किन जीवन मूल्यों की जरूरत होती है? ऐसे उद्यमियों को कौन सा शिक्षा संस्थान सीखा-पढ़ाकर तैयार करता है? नमक से लेकर बस तक आप टाटा के उत्पाद गिनते चले जाएंगे और कहीं भी आपको निराशा का एहसास नहीं होगा। जिस दौर में देश के ज्यादातर युवा उद्यमी अरबपति बनते ही विदेश जा बसने को लालायित हैं, वहीं यह याद रखना चाहिए कि रतन टाटा विदेश से पढ़कर लौटे, तो अपने देश के होकर रह गए। इसी देश से कमाया, तो इसी देश को लौटाया। आज के युवाओं को यह बात गांठ बांध लेनी चाहिए, जो रतन टाटा कह गए हैं, 'अगर आप तेज चलना चाहते हैं, तो अकेले चलिए और अगर बहुत आगे जाना चाहते हैं, तो साथ चलिए।'

रतन टाटा की व्यावसायिक भावभूमि को समझना होगा। एडम स्मिथ ने दुनिया को पूंजीवाद समझाया, तो कार्ल मार्क्स व फ्रेडरिक एंजेल्स ने साम्यवाद का पाठ पढ़ाया, पर

गांधीजी ने दोनों में से कुछ-कुछ लेकर अपना 'हिंद स्वराज' गढ़ा। इसी 'हिंद स्वराज' के इर्दगिर्द भारत में अनेक आला कंपनियों ने आजाद भारत को अभावों से निकालकर आगे ले जाने का जोश-जज्बा-जुनून दिखाया। यह कैसे भुला दिया जाए। उनके नेतृत्व में टाटा समूह नित नई बुलंदियों पर चढ़ता चला गया। विशाल टाटा परिवार उत्तराधिकारी खोज लेगा, पर रतन टाटा की विरलता सदैव प्रतिमान रहेगी। वह कहते थे, 'जिस दिन मैं उड़ने में सक्षम न रहूंगा, वह दिन मेरे लिए सबसे दुखद होगा।' दुर्भाग्य, वह दिन आ गया, पर उनको याद करने की सार्थकता इसी में है है कि उनकी व्यापक विरासत को विस्तार दिया जाए।

वृद्धावस्थाः

बल, रूप और यौवन से मत्त कोई भी मनुष्य वृद्धावस्था प्राप्त हुए बिना मद से मुक्त नहीं होता है।

अश्वघोष

बुढ़ापा शरीर का उतना धर्म नहीं है, जितना मन का।

विद्यानिवास मिश्र

वृद्धावस्था से पहले मुझे भली तरह जीवित रहने की चिंता थी, वृद्धावस्था में भली तरह से मरने की।

सेनेका

बुढ़ापा मरी हुई अभिलाषाओं की समाधि है या पुराने पाप का पश्चाताप ।

प्रेमचंद

बुढ़ापा, यकीन मानिए, एक अच्छी और सुखद चीज है। यह सच है कि आपको धीरे से मंच से उतार दिया जाता है, पर फिर आपको दर्शक के रूप में सबसे आगे आरामदायक कुर्सियों पर बिठा दिया जाता है ।

कंफ्यूशियस

आप कितने बूढ़े हैं, ये मायने नहीं रखता। बात यह है कि आप कैसे बूढ़े हुए हैं।

जूल्स रेनार्ड, फ्रांसीसी लेखक

बूढ़ा होने के बारे में शिकायत न करें। यह एक ऐसा विशेषाधिकार है जिससे बहुत सारे लोग वंचित रहे हैं।

मार्क ट्वेन

प्रेम शब्द साखी कबीर की, प्रेम दधीचि का अस्थिदानः

प्रेम का कैनवास बहुत व्यापक है। मिसाल के लिए, माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम, भक्त का भगवान के प्रति प्रेम, पति-पत्नी का परस्पर प्रेम, अवतारों तीर्थंकरों-पैगंबरों का हर प्राणी से प्रेम आदि। त्रेता युग के अवतार श्रीराम का जटायु के प्रति प्रेम ही तो था कि उनकी आंखों से प्रेमाश्रु निकले और उन्होंने भावविह्वल होकर जटायु कां दाह-संस्कार किया। द्वापर के अवतार श्रीकृष्ण का सुदामा के प्रति मित्रता से परिपूर्ण प्रेम ही तो था कि सुदामा जब उनसे बड़े संकोच के साथ मिलने आए, तो उनकी दयनीय दशा देखकर केशव की आंखों से अविरल आंसू बह निकले- देखि मुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोये। पानी परात को हाथ छुयो नहि, नैनन के जल सों पग धोये।।

यह तीर्थंकर महावीर स्वामी का प्रेम-भाव ही तो था कि उन्होंने उस ग्वाले को क्षमा कर दिया, जिसने उनकी ध्यानावस्था में उनके कानों में कीलें ठोकी थीं, जिससे खून बह निकला था। यह पैगंबर ईसा मसीह का प्रेम-भाव ही था कि उन्होंने उन सभी विरोधियों को क्षमा कर दिया, जिन्होंने उन्हें काटों का ताज पहनाकर, कंधों पर अपना सलीब स्वयं ढोते हुए सूली पर चढ़ा दिया था। पैगंबर हजरत मोहम्मद साहब ने उस वृद्धा के घर जाकर प्रेम-भाव से उसका हाल पूछा, जो उन पर हमेशा कचरा फेंका करती थी। इसी प्रेम-भाव के तहत उन्होंने उसे माफ भी कर दिया। भगवान गौतम बुद्ध ने अंगुलिमाल जैसे उस दुर्दांत डाकू को, जो हत्या करके अपने शिकार की अंगुली काटकर उसकी माला पहनता था, प्रेम-भाव दर्शाकर क्षमा कर दिया था। अंगुलिमाल गौतम बुद्ध के उस प्रेम-भाव से प्रभावित होकर उनका अनुयायी हो गया।

संत मदर टेरेसा का कुष्ठ रोगियों से यह प्रेम-भाव ही था कि वह आजीवन उनकी सेवा में समर्पित रहीं। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में देखें, तो महर्षि दधीचि प्रेम-भाव के अद्वितीय-अनुपम उदाहरण हैं। जब ब्रह्मा से इंद्र को पता चला कि महा-तपस्वी महर्षि दधीचि की हड्डियों से बने वज्र से ही दैत्यों को हराया जा सकता है, तो इंद्र ने महर्षि से उनकी हड्डियों का दान मांगा। महर्षि ने इंद्र का निवेदन स्वीकार करके तपस्या द्वारा देह त्याग कर दिया, ताकि उनकी हड्डियों से बने वज्र से देवताओं को विजय प्राप्त हो सके। इसीलिए कहा जाता है- प्रेम मनुष्यत्व का विधान है, प्रेम समर्पण का संविधान है, प्रेम शब्द साखी है कबीर की, प्रेम दधीचि का अस्थिदान है। देखा जाए, तो देश के, प्रति समर्पण

प्रेम का ही पावन स्वरूप है। सुखदेव, राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाकुल्ला खां, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद का बलिदान देश के प्रति प्रेम-भाव की सर्वोच्च मिसाल है। महात्मा गांधी भी प्रेम द्वारा हृदय-परिवर्तन के विश्वासी थे और उन्होंने इसे अहिंसा व सत्याग्रह से चरितार्थ भी किया।

कहने का मतलब यह है कि भाव के धरातल पर प्रेम अपने-आप में व्यापक अर्थ रखता है। सरलता और निश्छलता के ताने-बाने से बुना हुआ विश्वसनीयता का वस्त्र है प्रेम। प्रेम, पाखंड की पहेली नहीं, पवित्रता की पोथी है। सदाशयता की टकसाल में ढला हुआ सौहार्द का सिक्का है। प्रेम, यानी मानवता का मकान; सद्भाव की सुगंध; सहिष्णुता का संबंध; पावनता का प्रवाह; और नैतिकता का निर्वाह है। प्रेम,यानी क्षमा वीरस्य भूषणम्। प्रेम,यानी वसुधैव कुटुम्बकम् । अहंकार और प्रेम साथ-साथ नहीं रह सकते। कबीर ने कहा भी है- जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाहि, प्रेम गलि अति सांकरी, तामें दो न समाहिं।

दरअसल, प्रेम मन की मुंडेर पर निश्छलता का दीपक है, जिससे पवित्रता का प्रकाश निकलता है। प्रेम ऐसा राग है, जिसमें देह की कामना नहीं, त्याग की भावना है। प्रेम प्रकृति और पुरुष की रागात्मक अनुभूति है, पर प्रिय के हितचिंतन में त्याग का जज्बा ही उसकी परिणति है। प्रेम वह नहीं है, जो स्मार्टफोन, इंटरनेट, लैपटॉप के इस दौर में शुरू तो दैहिक आकर्षण से होता है, मगर शोषण के गलियारे से गुजरता हुआ अंत में स्त्री-देह के प्रति-चित्रों के माध्यम से वाट्सएप पर प्रतिशोध और ब्लैकमेलिंग में बदल जाता है। वर्तमान में प्रेम के संदर्भ में यू-ट्यूब वा अन्य

किसी माध्यम से भाषा के धरातल पर अभद्रता की जो आंधियां चल रही हैं, अश्लीलता के जो अंधड़ चल रहे हैं, वे निंदनीय हैं।

अजहर हाशमी (साहित्यकार एवं शिक्षाविद)

उल्लास बिना क्या जीनाः भारतीय भोज्य पदार्थों को पकाना आसान काम नहीं है। अत्यंत मनोयोग के साथ तैयार करने पर ही उनमें स्वाद आता है। जिन लोगों को खुशी से जीना नहीं आता, वहीं लोग बिकने वाले भोज्य पदार्थों को खरीदकर खाएंगे। बात यही नहीं है कि उस तरह के खाद्य पदार्थों में आवश्यक पौष्टिकता नहीं होती, अहम बात यह है कि स्नेह को घोलकर उन्हें नहीं पकाया गया होगा। मेरी दादी या मां खाना तैयार करते समय खुशी के गीत गाते हुए इस काम में लगी रहती थीं। उनकी भक्ति और उनका स्नेह उस भोजन को ज्यादा पौष्टिक बना देता। किसी भी बच्चे के मन में यह ख्याल नहीं आएगा कि उस पर ठीक तरह से ध्यान नहीं दिया जा रहा है। वह जीवन को नफरत के साथ नहीं देखेगा।

त्योहार के दिनों में तो कई भारतीय परिवार साथ मिलकर पूरी लगन से भोजन तैयार करते हुए एक अपूर्व स्नेह-बंधन में बंध जाते हैं। उत्सव का आनंद पेट भर खाने में नहीं है, मन की भावना में है। आपका ध्यान खुश रहने में ही केंद्रित रहना चाहिए। आप क्यों ऐसा सोचते हैं कि विविध प्रकार के व्यंजन और पकवान बनाना है। फिर उसे खाना है, उसके बाद ही खुशी मनानी चाहिए? पहले अपने आप को ही एक उत्सव के रूप में बदल लीजिए। सब्जी काटने को भी एक उत्सव के रूप में बदलकर त्योहार के दिन की शुरुआत करके देखिए। सही समझ के बिना, जीने के ढंग में उल्लास के बिना, त्योहारों व उत्सवों को

केवल रस्मी रूप में लेंगे, तो वह व्यर्थ का मनोरंजन बनकर रह जाएगा।

एक पादरी अपनी तीर्थयात्रा के दौरान सेंट जॉन के शिविरों में भी आए। वहां बड़े उल्लास के साथ नाना प्रकार के उत्सव समारोह हो रहे थे। देश-विदेश के व्यंजन तैयार करके लोगों को परोसे जा रहे थे। एक तरफ तीरंदाजी, दौड़ की प्रतियोगिताएं हो रही थीं। पादरी के मन में इस बात का रंज हो रहा था कि परमपिता की स्तुति छोड़कर ये लोग तमाशे में समय बरबाद कर रहे हैं? एक जगह विदूषक वेश में कोई आदमी लोगों की नकल उतारते हुए सबका मनोरंजन कर रहा था, वह पादरी के हाव-भाव की भी नकल उतारने लगा। एक समय पर आकर खुद पादरी दिल खोलकर हंसने लगे। फिर उन्होंने उस विदूषक को अपने साथ भोजन करने के लिए बुलाया और उससे पूछा, 'तुम यह सब क्यों करते हो?'

उस व्यक्ति ने जवाब दिया, 'जीवन में पूरी लगन होनी चाहिए। यदि आप जीवित हैं, तो आपके हाथों-पैरों को खूब हिलना चाहिए। गाकर, नृत्य करते हुए आनंद से उछलते रहना चाहिए। खुद भी हंसना चाहिए, दूसरों को भी हंसाना चाहिए।' यह सुनकर पादरी को एहसास हुआ कि वह जीवन का नया सबक सीख रहे हैं, जो अब तक उनकी समझ में नहीं आया था।

सद्गुरु जग्गी वासुदेव

प्रेमियों पर हमला यानी संविधान पर हमलाः बसंत ऋतु को प्रेम का मौसम माना जाता है। सदियों से जाने कितने रचनाकार बसंत और प्रेम पर रचनाएं रचते रहे हैं। यह संयोग ही है कि संत वैलेंटाइन की याद में मनाया जाने वाला वैलेंटाइन्स

डे भी इसी मौसम में आता है। कुछ लोग जरूर इस दिन का विरोध करते हैं, लेकिन जो प्रेम की व्यापकता समझते हैं, वे इसका खुलकर स्वागत करते हैं। वास्तव में, किसी के प्रति आकर्षित हो जाना सहज मानवीय स्वभाव है। मगर समाज के एक तबके ने प्रेम और कौन किसे अपना जीवनसाथी बनाए, इसे हमेशा नियंत्रित करने की कोशिश की है। यही कारण है कि प्रेम पर, जिसे हमेशा स्वच्छंद रहना था, सामंती काल में समाज हावी होने लगा। आगे चलकर सामंती व्यवस्था का अंत तो हुआ, लेकिन कई सामाजिक नियम जस के तस बने रहे। यह तो भला हो लोकतंत्र का कि इसने ऐसे समाज का सपना दिखाया, जिसमें समानता और व्यक्तिगत अस्मिता का स्थान सर्वोपरि रखा गया।

भारत में संविधान ने सबको समान अधिकार दिए हैं। इसी संविधान ने अंतरजातीय तथा अंतरधार्मिक विवाहों को भी बिल्कुल जायज माना है। संविधान ने जीवनसाथी चुनने के हक को भी व्यक्तिगत निर्णय बताया है। बावजूद इसके हमने प्रेम पर पहरा बढ़ते देखा है। रही-सही कसर बाजारवाद ने पूरी कर दी. है, जिसने प्रेम को एक बिकाऊ वस्तु बना डाला। संत वैलेंटाइन ने जहां प्रेम के लिए बलिदान दिया था, वहीं बाजार ने मोल तय कर दिया है। सुंदरता के नए मानक तैयार होने लगे हैं। सौंदर्य और प्रसाधन के नए-नए उत्पादों ने 'सिक्स पैक' और 'जीरो फिगर' को सुंदरता का प्रतीक बना डाला है। बाजारवाद के कारण ही आकर्षण के स्वाभाविक नियम बदले हैं, जिसके कारण प्रेम करने की आजादी पर कट्टरपंथी हमले भी बढ़े हैं।

वास्तव में, प्रेम करना दो लोगों के बीच का बराबरी से लिया गया व्यक्तिगत निर्णय है। इसमें समाज का किसी भी प्रकार

हस्तक्षेप गलत है। आज महिला हो या पुरुष, वे जिम्मेदार पदों पर बड़े से बड़े फैसले तो ले सकते हैं, लेकिन सहज रूप से प्रेम करने से बचते हैं, क्योंकि रूढ़िवादियों द्वारा निशाने पर लिए जाने का डर उनको सताता है। हमें समझना होगा कि सबके लिए एक बेहतर दुनिया बराबरी के समाज से ही आएगी। एक ऐसी बराबरी की दुनिया, जहां प्रेम करने की आजादी हो, जो हमें अपने संविधान से हासिल भी है। प्रेम और शादी करने का अधिकार हमारा सांविधानिक हक है और व्यक्तिगत निर्णय। इसलिए वैलेंटाइन्स डे को निशाना बनाने वाले लोग सीधे-सीधे भारतीय संविधान को निशाना बना रहे हैं। **अभिनव सब्यसाची**

इश्क का एक खास दिन नहीं हो सकताः मिर्जा गालिब का एक शेर है- रोने से और इश्क में बेबाक हो गए, धोए गए हम इतने कि बस पाक हो गए। प्रेम वास्तव में एक दैवीय गुण है। अपूर्णता में पूर्णता का भाव, एक सुंदर-सा जज्बा, एक बेहद खूबसूरत एहसास। प्रेम ही इस लोक में शाश्वत है, बाकी सब नश्वर है। भारत की संस्कृति भी प्रेममय रही है, जिसका सबसे बड़ा उदाहरण तो बसंत पंचमी का पावन त्योहार है। बसंत पंचमी को वसंतोत्सव और मदनोत्सव भी कहा जाता है। प्राचीन समय में स्त्रियां इस दिन अपने पति की कामदेव के रूप में पूजा करती थीं, क्योंकि मान्यता है कि इसी दिन कामदेव और रति ने सर्वप्रथम मानव हृदय में प्रेम और आकर्षण का संचार किया था। यही प्रेम और आकर्षण दोनों के अटूट संबंध का आधार बना। कहने का अर्थ यह है कि प्रेम का कोई विशेष दिन हो ही नहीं सकता। यह. हर दिन, हर घड़ी, हर पल किया जा सकता है। यह भी कि प्रेम सिर्फ 'बॉयफ्रेंड' या 'गर्लफ्रेंड' के लिए नहीं होता,

क्योंकि प्रेमी और प्रेमिका की अवधारणा कहीं अधिक गहरी है। प्रेम सिर्फ रोमांस और यौनाचार भी नहीं है, बल्कि यह एक पवित्र, गहरा, निःस्वार्थ रिश्ता है। वास्तव में, प्यार सबके लिए है। मगर पश्चिमी देशों के प्रभाव में यह सिर्फ एक दिन, यानी 'वैलेंटाइन्स डे' में सिमट गया है। लगता यही है कि मुहब्बत अब तिजारत बन गई है। इसका बाजारीकरण हो गया है। बॉलीवुड और ड्रग्स माफिया ने इसमें अहम भूमिका निभाई है, क्योंकि इससे उनका कुत्सित स्वार्थ सधता है। माना तो यह भी जाता है कि जिस तरह करवा चौथ दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे फिल्म से घर-घर में पहुंचा, उसी तरह, वैलेंटाइन्स डे यश चोपड़ा की फिल्म दिल तो पागल है की देन है।

भावनाओं के बजाय अगर आंकड़ों की बात करें, तो पिछले तीन वर्ष में भारत में 40 लाख से अधिक लड़कियों में बांझपन और 30 लाख में कैंसर पाया गया। इस तथाकथित 'डे' के बाद मुश्किल से 10 दिन के अंदर गाइनोकोलॉजिस्ट के पास लड़कियों की भीड़ लग जाती है। मीडिया में एक विज्ञापन भी आता है- सिर्फ एक कैप्सूल से 72 घंटों के अंदर अनचाही प्रेग्नेंसी से छुटकारा पाएं। कई लड़कियां इन गोलियों को बस निगल जाती हैं, जबकि ज्यादातर को इनका कंपोजिशन तक पता नहीं होता। तो, बच्चे आपके हैं, इसलिए उनकी जिम्मेदारी भी आपको ही निभानी होगी। यही समय है वैलेंटाइन्स डे जैसे कुकर्म को बढ़ावा देने वाली मानसिकता को रोकने का। पश्चिमी बाजारू मानसिकता को नकारने का। बाजारीकरण का काला सच समझिए और युवा पीढ़ी को इस मृग-मरीचिका से बचाइए।

विनय सिंह बैस

अमृत वर्ष 2025

समय का कालचक्र सरकते-सरकते आज हम सभी नए साल ई0 सन् 2025 का स्वागत कर रहे हैं। दुनियाँ के सभी देशों के लोग एक जनवरी 2025 के आगमन के साथ ही खुशी में डूब गए। 31 दिसंबर 2024 बीते दिनों की बात हो गई। हम जानते हैं कि समय की गणना लंदन के ग्रीनविच में स्थित रॉयल वेधशाला से होती है। ग्रीनविच के वेधशाला में प्राइम मेरेडियन एक धातु लाइन से चिन्हित किया गया है।1884 के अंतरराष्ट्रीय मेरिडियन सम्मेलन में जानकार खगोलविदों के बैठक में प्राइम मेरिडियन को मान्यता दी गई। समय की गणना होने लगी।

ग्रीनविच से पूर्व दिशा में समय पहले हो जाता है वहीं पश्चिम में आगे, यही कारण है जब भारतवासी रात्रि 12 बजे नए साल की शुरुआत करते हैं तो स्विट्जरलैंड साढ़े सात घंटे पहले साल के आगमन का जश्न मना चुका होता है। अमेरिका में यही जश्न भारतीय समय के 10 घंटे बाद मनाया जाता है।

भारत में ई0 सन् के साथ विक्रम संवत से भी दिन, महीने, साल की गणना होती है जिसकी शुरुआत मार्च अप्रैल माह से होती है। चैत्र से शुरू होकर फाल्गुन पर खत्म होती है। ईसवीं सन् ईसा मसीह के जन्मकाल से शुरू होता है। 365 दिनों का साल जनवरी से शुरू होकर दिसंबर में खत्म होता है। विक्रम संवत् की शुरुआत 57 ईसा पूर्व में हुई थी। इसे भारतीय कैलेंडर का एक अहम् संवत् माना जाता है। राजा विक्रमादित्य ने शकों को हराने के बाद इसकी शुरुआत की थी। हिंदू धर्म में मनाए जाने वाले त्योहारों और धार्मिक आयोजन के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

भारत भूमि आदिकाल से ही त्याग, तप, आस्था और धर्म का अखंड स्रोत रहा है। यह ऐसा स्रोत है जिसे बार-बार मिटाने की कोशिश की गई परंतु तप और आस्था ने हर संकट को मिटा दिया। इस भूमि की पर्वतों में ऋषियों की साधना संचित है, नदियों में वेदों की ऋचाएं प्रवाहित हैं, और वायु में सनातन संस्कृति का शाश्वत संदेश गूंजता है। इतिहास साक्षी है जब-जब इस पुण्य भूमि पर संकट का अंधकार छाया तब तब कोई ज्योति प्रज्वलित होकर जनमानस को जाग्रत करती रही। वर्ष 2013 के 16-17 जून में केदार नाथ मंदिर के पास बादल फटने, भारी बारिश के भयानक आपदा को भुलाए नहीं भूलता। आस्था की ज्योति के रूप में एक पत्थर पहाड़ों से लुढ़क कर मंदिर की रक्षा की। बहुत श्रद्धालुओं की जान गई परन्तु आज वह पत्थर भी पूजनीय हो गया। महादेव का मंदिर सुरक्षित रहा ताकि हमेशा श्रद्धालु उनके दर्शन का लाभ उठा सके। केदारनाथ भारतभूमि के बारह ज्योतिर्लिंग में से एक है। सिलसिलेबार बारह ज्योतिर्लिंग के नाम हैं।

सोमनाथ- गुजरात, मल्लिकार्जुन- आंध्र प्रदेश, महाकालेश्वर मध्य प्रदेश, ओंकारेश्वर- मध्य प्रदेश, केदारनाथ- उत्तराखंड, भीमाशंकर- महाराष्ट्र, काशी विश्वनाथ- उत्तर प्रदेश, त्रयंबकेश्वर- महाराष्ट्र, बैद्यनाथ- झारखंड, नागेश्वर- गुजरात, रामेश्वरम्- तमिलनाडु, घृष्णेश्वर- महाराष्ट्र। हिमालये तू केदार ज्योति लिंग के साथ बद्री विशाल हमारे चार धामों में से एक धाम उत्तराखंड में बसा है। यह धाम भारत के उत्तर में है जहाँ विष्णु भगवान का मंदिर है। दक्षिण का धाम रामेश्वरम् है, जहां भगवान राम ने शिव जी को स्थापित किया। तमिलनाडु में स्थित भगवान शिव का मंदिर धाम और ज्योतिर्लिंग दोनों है। पूर्व का धाम श्री जगन्नाथ पुरी जिसका ज्योतिर्लिंग श्री वैद्यनाथ है।

उड़ीसा का यह धाम भगवान जगन्नाथ कृष्ण की नगरी है तथा ज्योतिर्लिंग झारखंड में है। पश्चिम का धाम द्वारका जिसका ज्योतिर्लिंग सोमनाथ है। गुजरात का यह धाम भगवान कृष्ण का निवास स्थान है। इन ज्योर्तिलिंग के साथ-साथ लखनऊ के आस-पास कई ऐसे महादेव के मंदिर है जिनका जिक्र मैं कर रहा हूँ।

द्वापर युग के श्री अवसानेश्वर महादेवः बाराबंकी का अवसानेश्वर महादेव स्वयंभू द्वापर युग का शिवलिंग है। अज्ञातवास के समय पांडव इस स्वयंभू शिवलिंग की पूजा अर्चना करने के लिए आए थे। प्राचीन मंदिर में जलाभिषेक करने के लिए सावन में जिले के ही नहीं बल्कि गैरजनपदों से भी भक्त पहुंचते हैं। शिवरात्रि पर भक्तों की भारी भीड़ होती है। इस संबंध में अवसानेश्वर मंदिर समिति के अध्यक्ष संजय गिरि ने बताया कि अवसानेश्वर महादेव स्वयंभू हैं इनकी ख्याति दूर दूर तक है।।

त्रेता युग के श्री जलशायी नाथ महादेवन धामः सरोजनीनगर के परवर पश्चिम में श्री जलशायी नाथ महादेवन धाम मंदिर का इतिहास बहुत प्राचीन हैं। यहां त्रेता युग से भगवान शंकर विराजमान है। मान्यता है कि शिवलिंग यहां स्थित तालाब में स्वयं प्रकट हुए थे। यह सिद्ध शिवलिंग है। ऐसी किवदंतियां हैं कि इस शिवलिंग पर अलग-अलग युगों में भगवान श्रीराम, श्री कृष्ण व पांचों पांडव ने जलाभिषेक भी किया है। मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेश सिंह सोमवंशी ने बताया कि गांव के. बुजुर्गों के अनुसार मंदिर में विराजमान शिवलिंग करीब डेढ़ किलोमीटर लम्बे गाइज नामक तालाब के बीचो बीच स्वयं प्रकट हुए थे। इसीलिए इसका नाम जलसाईं नाथ महादेव जी (जलशायी) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

मंदिर के तालाब में भगवान श्रीराम ने स्नान कर महादेव जी का जलाभिषेक किया। इसीलिए यह तालाब रामकुंड के नाम से प्रसिद्ध है। राजेश सिंह ने बताया कि कुंड के पश्चिम में टीले पर राम जानकी मंदिर व तीन सौ मीटर की दूरी पर वासुदेव राधा

कृष्ण मंदिर सहित कई छोटे, बड़े मंदिर स्थापित हैं। इनमें हजारों साल पुरानी मूर्तियां हैं।

द्वापर युग के श्री मूर्तेश्वर महादेव मंदिरः मोहनलालगंज विकास खंड के कोराना गांव स्थित मूर्तेश्वर महादेव मंदिर का इतिहास द्वापर युग से जुड़ा है। प्राचीन मूर्तेश्वर महादेव मंदिर में शिवलिंग का एक तरफ का हिस्सा टूटा हुआ है। मंदिर के महंत भगवान दास ने बताया कि कथाओं के आधार पर ऐसा कहा जाता है कि बहुत पहले दीपावली के समय एक युवक रूई बेचने जा रहा था। उसने मूर्तेश्वर महादेव की महिमा के बारे सुन रखा था। इसी आस में उसने मनौती मानी कि अगर उसकी रुई बिक गई तो पूजा करेगा। रुई नहीं बिकी तो घर लौटते समय युवक ने कुल्हाड़ी से शिवलिंग पर प्रहार कर दिया। शिवलिंग का सिरा टूट गया। महंत जी ने बताया कि कहा जाता है कि शिवलिंग से रक्त निकलने लगा। युवक ने रूई से रक्त रोकने का प्रयास किया। लोगों इसे अशुभ माना। इसके बाद बाबा को चंदन और घी से लेप किया गया।

पहले यह शिवालय बहुत छोटा सा बना था। यहां पूजन दर्शन करने वालों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती थी। गांव के पास रहने वाले एक व्यक्ति ने बच्चे की कामना लेकर मंदिर में बाबा का अभिषेक किया। कुछ ही दिनों में पत्नी ने गर्भ धारण किया और विवाह के 20 वर्ष बाद उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। जिसके बाद उन्होंने मंदिर का निर्माण करवाया। अब लोगों के सहयोग से भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है।

महंत जी ने बताया कि माना जाता है कि शिवलिंग की स्थापना पांडवों ने अज्ञातवास में की थी। मान्यता है कि आज भी अदृश्य शक्ति मंदिर में पूजा करने आती हैं। मंदिर में शिवरात्रि और सावन के सोमवार को बाबा के दर्शन पूजन के लिए भक्तों

की कतार लगती है। वहीं आम दिनों में बड़ी संख्या में भक्त मंदिर में पूजन-अर्चन करते हैं।

त्रेता युग के श्री झारखंडी नाथ महादेव मंदिरः काकोरी से बढ़ौना रोड़ स्थित श्री मौनी बाबा आश्रम में श्री झारखंडी नाथ महादेव जी का मंदिर है। प्राचीन मंदिर को बड़ा महादेवन भी कहा जाता है। मंदिर के महंत श्री श्री 108 राम आसरे दास महाराज जी ने बताया कि बड़े महादेवन मंदिर में स्थापित शिवलिंग की स्थापना त्रेता युग में हुई थी। माता सीता को वाल्मीकि आश्रम छोड़ने जाने के समय वीरवर लक्ष्मण जी इसी स्थान पर रुके थे, यहीं पर शिवलिंग की स्थापना की। इस मंदिर के प्रति लोगों की अटूट आस्था है। इसके अलावा आश्रम में श्री राम दरबार, बजरंग बली व दुर्गा मां विराजमान हैं। यह आश्रम अयोध्या स्थित मौनी मांझा आश्रम से संबंद्ध है।

इस मंदिर के साथ यह मान्यता भी जुड़ी है कि जब कभी सूखे की स्थिति होती है तो किसान बड़े महादेवन में बाबा झारखंडी नाथ का पूजन-अर्चना करते हैं। इससे बारिश हो जाती थी। इसके साथ ही भक्तों द्वारा सच्चे मन से की गई हर मनोकामना भी पूर्ण होती है। मंदिर में विशाल श्रीराम महायज्ञ का आयोजन भी होता है। जिसमें अयोध्या जी से साधु संत बड़ी संख्या में शामिल होते हैं।

इस पावन स्थल पर संत-महंतों ने मौन रखकर वर्षों तपस्या की है। बुजुर्ग बताते हैं कि सर्वप्रथम यहां महंत श्री 1008 श्री मौनीदास जी महाराज आये थे, जो मौन रहते थे। फिर महंत श्री श्री 1008 शत्रुघ्न दास जी महाराज यहां रहे। वर्तमान में मंदिर के महंत श्री श्री 108 राम आसरे दास जी महाराज ने भी 21 वर्षों तक मौन तपस्या की है।

डालीगंज, लखनऊ श्री मनकामेश्वर मठ मंदिरः ग्रंथों व पुराणों में लिखा है कि भगवान भोलेनाथ बहुत दयालु है, भक्तों के मात्र जलाभिषेक करने से प्रसन्न हो जाते है। सैकड़ों साल पुराना श्री मनकामेश्वर मठ मंदिर के भोलेनाथ भी भक्तों की मनोकामनाएं बहुत जल्दी पूरी करते हैं। डालीगंज के राजीव गांधीनगर की राजरानी पिछले कई साल से मंदिर दर्शन करने आती है। वह बताती हैं कि मंदिर के आसपास का इलाका पहले जंगल जैसा था, पूरे इलाके में नरकूल के पेड़ लगे थे। धीरे-धीरें विस्तार होने लगा। भक्त दिनेश पांडेय ने बताया कि मंदिर में दर्शन करने से बहुत सकून मिलता है। महंत देव्या गिरी ने बताया भक्त 40 दिन तक मंदिर में भोलेनाथ की पूजा अर्चना करते हैं, उसकी कामनाएं पूरी होती हैं। विवाह की मनोकामना लेकर भी भक्त आते हैं। उन्होने बताया कि सावन के सोमवार और शिवरात्रि में भक्तों को सुलभ दर्शन की सुविधा का पूरा प्रयास रहता है। सरकार के सहयोग से ही गोमती तट पर मनकामेश्वर उपवन घाट भी बनाया गया है, जहां हर माह की पूर्णिमा पर गोमती आरती होती है।

मनकामेश्वर मन्दिर का इतिहास सैकड़ों साल पुराना है। भक्त बताते हैं कि इस मंदिर का विकास महंत राम गिरि बाबा के कार्यकाल में हुआ। उनका सोटा डंडा आज भी है। महंत राम गिरि बाबा ने इसी सोटे से शिवलिंग पर प्रहार किया था, जिससे दूध की धारा निकली थी। महंत ने यह कार्य एक भक्त के कहने पर किया था। भक्तों ने बताया कि महंत राम गिरि के बाद उक्त भक्त मनकामेश्वर मंदिर का महंत हुआ।

मोहान रोड़, लखनऊ श्री बुद्धेश्वर मंदिरः मोहान रोड़ स्थित श्री बुद्धेश्वर महादेव मंदिर प्राचीन शिव मंदिरों में एक है। इस शिवालय में पौराणिक काल से बाबा अपने भक्तों को दर्शन दे रहे हैं। माता सीता और वीरवर लक्ष्मण जी ने भी इस मंदिर

में भगवान भोलेनाथ की आराधना की थी। इस पुण्य स्थान पर विश्राम और सरोवर में स्नान भी किया था। इस मंदिर में बुधवार को शिव पूजन का विशेष महत्व है। बुद्धेश्वर मंदिर में सावन माह में सोमवार के साथ ही बुधवार को शिव पूजन का विशेष महात्म है। सावन माह के प्रत्येक बुधवार को हजारों श्रद्धालु भगवान भोलेनाथ को जल देकर दर्शन प्राप्त करते हैं। यहां रोज रुद्राभिषेक किया जाता है।

वीरवर लक्ष्मण व माता सीता ने बुधवार को भगवान शिव की विशेष पूजा की थी। जिसके बाद भोलेनाथ ने दर्शन भी दिए थे। इसीलिए मंदिर को बुद्धेश्वर मंदिर कहा गया। महंत लीलापुरी जी महाराज बताते है कि मंदिर त्रेतायुग से पुराना है। भपटामऊ गांव पहले भाट गांव के नाम से जाना जाता था। भाट ने ही इस मंदिर का निर्माण करवाया था। वाल्मीकि आश्रम जाते समय माता सीता मंगल के दिन इस मंदिर में पहुंची थीं। उन्होंने मंदिर में बने सरोवर में स्नान किया था। मान्यता है कि बुद्धेश्वर महादेव मंदिर में पांच बुधवार को दर्शन-पूजन करने से भगवान शिव अपने भक्तों की सभी मनोकामना पूर्ण करते हैं। ऐसा भी कहा जाता है कि श्री बुद्धेश्वर बाबा की पूजा अर्जना करने से भक्त को बुद्धि और ज्ञान की प्राप्ति होती है।

महानगर, लखनऊ श्री नर्मदेश्वर महादेव मंदिरः रामलीला मैदान के बगल में स्थित श्री नारायण स्वामी परमहंस जी महाराज कैलाशवासी मंदिर (श्री नर्मदेश्वर महादेव मंदिर) पर लोगों की आस्था अगाध है। इस मंदिर में सिद्ध स्वयंभू शिवलिंग विराजमान हैं। इनकी स्थापना 1986 में हुई थी। इस शिवलिंग को नर्मदा नदी से निकाल कर लाया गया था। इसी कारण इसे नर्मदेश्वर महादेव कहा जाता है। मंदिर का प्रबंधन श्री नारायण आश्रम चैरिटेबल ट्रस्ट के जिम्मे है। मंदिर के फाउंडर ट्रस्टी राहुल गुप्ता ने बताया कि मंदिर की स्थापना पूज्य 108 श्री

नारायण स्वामी जी महाराज कैलास वासी द्वारा की गई थी। महाराज जी ने 12 वर्ष तक लगातार सुबह तीन बजे रुद्राभिषेक करके शिवलिंग को सिद्ध किया। मंदिर में शिवरात्रि, रामनवमी, गुरु पुर्णिमा, जन्माष्टमी, अन्नकूट, कार्तिक पूर्णिमा के पर्व उत्सव के रूप में मनाये जाते हैं।

पूज्य 108 श्री नारायण स्वामी जी महाराज कैलास वासी ने दो जून 2000 में 144 वर्ष की आयु में महासमाधि ली। मंदिर परिसर में उनका समाधि स्थल भी है। ट्रस्टी राहुल बताते हैं कि महाराज जी ने 1914 व 1919 में प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश सेना की ओर से सहभागिता की थी। 1921 में प्रिंस ऑफ वेल्स द्वारा मिलिट्री क्रास से सम्मानित किये जाने बाद उन्होंने सन्यास ले लिया। चीन से युद्ध (1962) के बाद पिंडारी ग्लेसियर में तपस्या की। लोहारखेत में कुटिया बनायी।

मंदिर में श्री नर्मदेश्वर महादेव जी का प्रतिदिन रुद्राभिषेक और भव्य शृंगार किया जाता है। सुबह आरती व 12 बजे भोग लगाया जाता है। शाम को नित्य सामूहिक प्रार्थना छह बजे से 7.30 होती है। : आरती और प्रसाद वितरण के बाद रात 8.30 बजे पट बंद हो जाते हैं। सोमवार शाम भजन संध्या और मंगलवार को सुंदरकांड पाठ होता है।

बंथरा, श्री झाडेश्वर महादेव मंदिरः सई नदी के तट पर हरौनी स्थित श्री झाडेश्वर महादेव मंदिर का इतिहास बहुत प्राचीन है। मान्यता है कि त्रेता युग में शिवलिंग की स्थापना भगवान श्री राम के पिता राजा दशरथ ने की थी। मौजूदा समय में इस प्राचीन मंदिर को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने के लिए राज्य सरकार ने 1.5 करोड़ की धनराशि उपलब्ध

करायी है। मंदिर परिसर में एक संस्कृत विद्यालय (गुरुकुल) भी है, जिसमें बटुक सनातन धर्म की शिक्षा ग्रहण करते हैं। हरौनी के अजीत कुमार वर्मा व पूर्व बीडीसी अतुल कुमार सिंह माखन ने बताया कि यहां पूजा से मनोकामना पूरी होती है।

इस मंदिर के बारे में बाबा झाड़ेश्वर महादेव जन कल्याण समिति के कोषाध्यक्ष नारायण कुमार शुक्ला ने बताया कि श्रवण कुमार वृद्ध व अंधे माता-पिता को तीर्थयात्रा कराने जा रहे थे। उसी दौरान वन में शिकार करते समय, राजा दशरथ ने जानवर समझ कर तीर चला दिया। वह तीर श्रवण को लग गया, उनकी मृत्यु हो गई। पश्चाताप के लिए राजा दशरथ ने सई नदी के किनारे छह शिवलिंग स्थापित किए। झाड़ेश्वर मंदिर का शिवलिंग भी इसमें है।

पूर्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) स्वाति सिंह और इस समय विधायक डॉ राजेश्वर सिंह के प्रयास से राज्य सरकार ने मंदिर को विकसित करने के लिए दो किस्तों में 70 लाख और 80 लाख उपलब्ध कराए। जिससे मंदिर का कायाकल्प हुआ है। मंदिर में शिवलिंग की पूजा की बागडोर बेंती निवासी पुजारी राजन गोस्वामी के बाद उनके परिवार की खुशी के हाथों में है।

गोसाईंगंज, श्री गोमतेश्वर महादेव मंदिरः सलेमपुर गांव में स्थित शिवालय में विराजे गोमतेश्वर महादेव सैकड़ो वर्ष पहले गोमती नदी, सलेमपुर घाट पर विराजते थे। 1960 की भीषण बाढ़ में मंदिर टूट गया और शिवलिंग गोमती नदी में समा गया।

महेश शुक्ला ने बताया कि उनके दादा हरिशंकर शुक्ला सलेमपुर में खजांची थे। एक दिन सपने में उन्हें नदी के अंदर मंदिर के गर्भ ग्रह में शिवलिंग दिखा। उन्होंने चर्चा पड़ोसी मित्रों से की। उनके मित्र सम्पतराम, पूर्वीदीन, बिहारी कश्यप ने

शिवलिंग को नदी से बाहर निकालने की ठान ली। मल्लाहों के साथ सभी उसी स्थान पर पहुंच गये। एक गोताखोर नदी में कूदा और उसने बताया कि शिवलिंग नीचे है। शिवलिंग को नदी के बाहर निकाला। मंदिर का निर्माण कर स्थापित किया। गोमती से निकले शिवलिंग को भक्त गोमतेश्वर महादेव नाम से पूजने लगे। सलेमपुर घाट पर स्थित यह गोमतेश्वर शिवलिंग 500 वर्ष पुराना है। मंदिर का निर्माण यहां की रियासत के दरोगा गंगाप्रसाद ने कराया है।

लखनऊ, श्री भंवरेश्वर मंदिरः लखनऊ, उन्नाव व रायबरेली की सीमा पर भगवान शंकर सदियों से भंवरेश्वर रूप विराजमान हैं। मंदिर से कई किंवदंतियां जुड़ी हैं। बुजुर्ग बताते हैं कि एक दिन एक चरवाहे की गाय खो गई। वह खोजने निकला तो उसने गाय को जंगल में एक शिवलिंग पर अपने स्तन से दूध चढ़ाते देखा। इसके बाद लोग यहां आकर पूजा करने लगे। कहा जाता है कि मुगल काल में औरंगजेब के आदेश पर जब मंदिरों पर आक्रमण हो रहे थे, उसकी सेना यहां आई। शिवलिंग तोड़ने लगी। प्रहार करते ही यहां से लाखों भंवरे निकल पड़े और सैनिकों पर टूट पड़े। भंवरों के आक्रमण से सैनिक मूर्छित होने लगे और उनको वहां से भागना पड़ा। पहले यह मंदिर भीमेश्वर नाम से जाना जाता था लेकिन औरंगजेब की सेना को भंवरों द्वारा भगाए जाने के बाद मंदिर का नाम भंवरेश्वर हो गया। तबसे यहां इसी रूप में पूजा अर्चना शुरू हो गई।

कहा जाता है कि पांडव अपने अज्ञातवास के दौरान यहां आए थे और भीम ने इस शिवलिंग की स्थापना की। भंवरेश्वर महादेव का बहुत महत्व है। सुदौली की रानी गणेश कुमारी द्वारा 1942 में भव्य मंदिर का निर्माण कराया गया। मंदिर समिति के सुनील गिरि बाबा ने बताया कि सावन के सोमवार और महाशिवरात्रि पर कई जिलों के लाखों भक्त पूजन को आते हैं।

ज्योतिर्लिंग के साथ हमारे चार धाम है- बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी और रामेश्वरम्। धाम एवं ज्योतिर्लिंग के प्रति आस्था को याद करते हुए कटरा में स्थित देवी मां वैष्णो देवी मंदिर तथा कपिल मुनि से समर्पित गंगा सागर और उसका स्नान श्रद्धालुओं के प्रेम और आस्था को हमेशा बल देता रहता है। वर्ष 2025 में विजयादशमी महोत्सव हर्ष उल्लास से बीता। संसार में बुराई और अच्छाई के बीच संघर्ष की महागाथाएं हमेशा होती रही हैं, परंतु जीत हमेशा अच्छाई, सत्य की हुई है। बुराई और अच्छाई के संघर्ष में रामायण का स्थान ऐसी ग्रंथ में है जो और किसी ग्रंथ की नहीं है। एक महारथी रावण के विरुद्ध पैदल तपस्वी राम का जय घोष सदा से प्रेरणा स्रोत रहा है। तपस्वी राम की तुलना में वैभव पति रावण का आकर्षण ज्यादा दिखता है किंतु रावण के आकर्षण का खोखलापन कदम-कदम पर जाहिर है। मां दुर्गा के नौ दिनों की पूजा दसवें दिन विदाई होती है। इसी दिन रावण वध हुआ था, हम उस दिन रावण का पुतला जलाकर जश्न मनाते हैं। आज का दिन 2 अक्टूबर 2025 भी इतिहास का दिन होगा क्योंकि दशहरे की चमक के साथ महात्मा गांधी जी का जन्मदिन तथा पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का भी जन्मदिन है। विजयदशमी के पावन पर्व पर सन् 1925 में नागपुर की पुण्य भूमि पर डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी ने राष्ट्र जागरण का दीप प्रज्वलित किया। एक शताब्दी पूर्व की छोटी सी ज्योति आज विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी सांस्कृतिक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में अखंड राष्ट्रदीप बनकर भारत की आत्मा को आलोकित कर रही है। डॉक्टर हेडगेवार ने अनुभव किया की स्वतंत्रता तभी सार्थक होगी, जब समाज भीतर से दृढ़, संगठित और चरित्रवान बनेगा। आज के संघ का शताब्दी पर्व किसी संस्थान के इतिहास का उत्सव नहीं बल्कि त्याग, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति से उपजी उस

साधना का वंदन है, जिसने माँ भारती के परम वैभव की राह प्रशस्त की। यह उपलब्धियों का स्मरण नहीं आने वाली शताब्दियों के लिए नवयुग संकल्प का आह्वान है।

हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की याद आती है जो हमेशा सादा जीवन व्यतीत करते थे। जब वह प्रधानमंत्री बने तब उनके पुत्र श्री अनिल शास्त्री जो बाद में केंद्रीय मंत्री भी रहे ने बताया, एक बार वह शास्त्री जी के कमरे में सोने गए कमरे में प्रवेश करने में कुछ मिनट बाद उन्होंने कहा अनिल मैंने देखा है कि आपको बड़ों का प्रणाम करना नहीं आता। आपके हाथ केवल घुटनों तक जाते हैं, पैर तक नहीं। अनिल ने तुरंत उत्तर दिया नहीं मैं तो ठीक से प्रणाम करता हूं। शास्त्री जी ने कहा ऐसी बात नहीं है, पर अनिल अपने बात पर डटे रहे। आगे कहते हैं अगर मेरे पिता के अलावा कोई और पिता होता तो अवश्य अपने पुत्र को कोई ना कोई दंड देता। शास्त्री जी ने कहा हो सकता है मेरे देखने में कुछ गलती हुई हो। कहा मैं आपसे बडा हूं, आपका पिता हूं इसलिए आपको बताना चाहता हूं कि बड़ों को प्रणाम कैसे किया जाता है। देखते ही देखते उन्होंने झुक कर मेरे पैर छू लिए और बड़े आदर के साथ प्रणाम किया। आगे उन्होंने कहा अगर इस तरह प्रणाम करते हो तो मैं अपनी गलती मानता हूं परंतु अगर आपको अपने प्रणाम करने में कुछ त्रुटि लगे तो मैंने जो ढंग बताया, उसे अपनाने की कोशिश करें। अनिल ने अपने मन की बात कही मैं शायद यह बताने में असमर्थ हूं कि मेरी गलती की इतनी बड़ी सजा मुझे मिली।

नए वर्ष की आगमन एवं खुशी मनाने के उपलक्ष्य पर ओशो ने कहा, दिन तो रोज नया होता है लेकिन रोज नए दिन को न देख पाने के कारण हम वर्ष में कभी-कभी नए दिन को देखने की कोशिश करते हैं। ई0 सन् 2025 जनवरी की शुरुआत भारतवासियों के लिए जश्न के साथ-साथ चार विभिन्न महापर्व मनाने की खुशी लाया है। जब हमने 1947 में स्वतंत्रता दिवस

का पहला झंडा फहराया था, उससे 2025 स्वतंत्रता दिवस का 75 वाँ वर्ष हुआ। जाहिर है हम भारतवासियों के लिए यह अमृत वर्ष ही है।

अमृत वर्ष 2025 अब बुढ़ापे की ओर अग्रसर है, जो भारतवासी के साथ-साथ विदेशो में भी रहने वाले लोगों के दिल में छाप छोड़ गया। ग्रहों के गति और चाल के संयोग ने उपहार में वो पर्व दिया, जो इतिहास में दर्ज हो गया। उन्हीं पर्व का जिक्र मैंने इस पुस्तक में किया है।

एकः मकर संक्रांति, पूरा देश भारत
दोः रामलला मंदिर की पहली वर्षगांठ, अयोध्या, उत्तर प्रदेश
तीनः गणतंत्र दिवस हीरक जयंती, स्वतंत्रता के 76वें वर्ष में प्रवेश, नई दिल्ली
चारः महाकुंभ प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

मकर संक्रांतिः

सूर्य के मकर रेखा से कर्क रेखा की ओर जाना उत्तरायण कहलाता है। शास्त्रानुसार उत्तरायण देवताओं का दिन है। सूर्य के धनु से निकलकर मकर राशि में प्रवेश को मकर संक्रांति कहते हैं। इस बार मकर संक्रांति पर विष्कुंभ योग और पुनर्वसु नक्षत्र का सहयोग बना रहा है। चंद्रमा कर्क राशि में होंगे। मकर संक्रांति के एक दिन पहले सोमवार दिनांक 13/01/25 को लोहड़ी का पर्व है तथा पौष पूर्णिमा है। ज्योतिषाचार्य पंडित दिवाकर त्रिपाठी पूर्वांचली के अनुसार मकर संक्रांति पर्व उत्तर प्रदेश में खिचड़ी, तमिल में पोंगल, राजस्थान एवं गुजरात में उत्तरायण, हरियाणा व पंजाब में माघी तथा पूर्व भारत में भोगाली बिहू के नाम से मनाया जाता है। काले तिल का दान एवं खाने का प्रचलन है। प्रयागराज में संगम तट पर इस दिन कुंभ मेला एवं स्नान की

शुरुआत के साथ एक माह का कठिन कल्पवास भी शुरू होता है।

मकर संक्रांति विक्रम संवत हिंदू कैलेंडर के अनुसार वह समय है जब सूर्य 12 राशियों में से एक मकर राशि में प्रवेश करता है। धान की नई फसल चावल, पोहा (चिवड़ा), गुड़, तिल व दही से बने व्यंजनों का देवता को भोग लगाते हैं, खाते भी हैं। रामचरितमानस में इसके स्वाद की विशिष्टता का उल्लेख है। बालकांड में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैः

मंगल सगुन सुगंध सुहाए, बहुत भांति महिपाल पठाए।
दधि चिवरा उपहार अपारा, मरि कांवरि चले कहारा।।

यह राम विवाह का प्रसंग है। जब भगवान राम की बारात अयोध्या से चलती है तो राजा जनक ने रास्ते में बारातियों के लिए बहुत प्रकार के सुगंधित और सुहावने मंगल द्रव्य और शगुन पदार्थ भेजें, जिसमे दही-चिवड़ा भी एक था। तिल से बने व्यंजनों का भी सर्दियों में बहुत गहरा ताल्लुक है। तिल अपनी प्रकृति में तीखा, मधुर, भारी, स्निग्ध, गर्म तासीर का, कफ व पित्त को कम करने वाला और बलदायक होता है। इसलिए मकर संक्रांति में इसे दान और पान (भोजन के रूप में ग्रहण) का विशेष महत्व होता है। उपनिषदों में मगध में उपजाई जाने वाली दस फसलों में चावल, गेहूं, जौ, तिल, खजूर, कुल्थी का जिक्र है। उत्तर वैदिक काल में तिल, रेडी और सरसों का जिक्र है। माना जाता है कि तिल पहला बीज है जिससे तेल निकाला गया, इसलिये इसका नाम संस्कृत में तैल पड़ा यानि तिल से निकला हुआ, हिन्दी में यही तेल हो गया। अथर्ववेद में तिल के दैनिक सेवन के साथ आध्यात्मिक प्रयोग का वर्णन मिलता है। तिल हवन में प्रयोग होता है तो तर्पण में भी। धार्मिक के साथ-साथ सामाजिक रीतियों में भी तिल की महत्ता है। बिहार का गया शहर तो तिल से बने व्यंजनों का स्थापित शहर बन गया

है। महर्षि पाणिनी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक अष्टाध्यायी में पलल नामक सुस्वाहु मिष्ठान का जिक्र किया है जिसे तिल का चूर्ण, शर्करा का गुड़ मिलाकर बनाया जाता था। मकर सक्रांति जिसे खिचड़ी के नाम से जाना जाता है में नए चावल के साथ दाल मिलाकर खिचड़ी बनाई जाती है। माना जाता है कि चूँकि चावल की तासीर ठंडी होती है और दाल की गरम इसलिए जिस तरह इस समय गर्मी और ठंडक का आना जाना लगा रहता है उसी तरह का समायोजन आहार में किया जाता है ताकि बदलते मौसम का स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव न पड़े।

संक्रांति से मतलब है- सत्य के संग क्रांति, संत के संग क्रांति। जो ज्ञान के संग है, सत्य के संग है, संत के संग है वह यह जानता है कि मुझे बाहर कुछ ढूढ़ने की जरूरत नहीं है। मेरा आनंद तो मुझमें ही है क्योंकि मैं अस्ति- भाति-प्रिय स्वरूप हूँ। ये देह मैं नहीं हूँ, देह का जन्म मेरा नहीं, देह का मरण मेरा नहीं, देह का रोग मेरा नहीं, देह की अशुद्धि मेरी नहीं। मैं तो नित्यमुक्त, सच्चिदानंद, आनादि अनंत, निर्वचनीय विलक्षण स्वरूप हूँ। जब सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है तो मकर सक्रांति होती है। मकर राशि शनि की राशि है। शनि का नाम तपस्या, त्याग, खोज, संन्यास वीतरागता का है। शनि वैराग्य का चिन्ह है इसे शिव का अंश बोलते है। शनि सूर्यपुत्र भी है। विष्णु पुराण और ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मकर संक्रांति के दिन उत्तरायण पक्ष शुरू होता है। उत्तरायण पक्ष देवताओं का दिन है। दक्षिणायन पक्ष देवताओं की रात्रि है। इसलिए उत्तरायण पक्ष शुभ प्रारंभ है। जब साधक की संकल्प शक्ति और गुरु कृपा का संगम होता है तो साधक के भीतर सक्रांति घटित होती है और ज्ञान के वैराग्य का सूर्य उदित होता है। आकाश की पंचायत के सरपंच है सूर्य जो प्रकृति के संविधान के तहत युगों-युगों से अग्नि व प्रकाश के पॉवरहाउस बने हैं। आकाशीय पंचायत के सरपंच सूर्य दिव्य रूप

से आध्यात्मिक के अधिवक्ता हैं और भव्य रूप से ऊर्जा के प्रवक्ता हैं।

सूर्य के ऊर्जा की पूंजी मेष से मीन तक 12 राशियों के बही खाते में जमा रहती हैं जिसे सूर्य संक्रांति पर जांचते हैं। सूर्य की पंचायत में बृहस्पति, गुरु, बुध, मंगल पंच की तरह होते हैं जिसके सरपंच सूर्य हैं। राहु केतु छाया ग्रह है तथा शनि इस प्रक्रिया के तटस्थ रहते हैं। सरपंच सूर्य का कार्य सृष्टि के लिए कल्याणकारी है इसलिए जागृत अक्षय ऊर्जा स्रोत के रूप में सूर्य कल भी थे, आज भी है और सदा रहेंगे। अथर्ववेद में कहा गया है, प्रकट होते हुए आप सदैव नए नवेले प्रतीत होते हैं। सूर्योपनिषद में भी कही गई है सूर्य अर्थात आदित्य आनंदमय, विज्ञानमय और ज्ञानमय है। गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालिसा में लिखा है:

वालि समय रवि भक्ष लियो, तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो।

ताहि सो त्रास भयो जग को, यह संकट काहू सो जात न टारो।

देवन आनि करी विनती, तब छाड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।।

हे बजरंगबली हनुमान जी, बचपन में आपने सूर्य को लाल फल समझ कर निगल लिया था जिससे तीनों लोकों में अंधेरा हो गया। सारे संसार में विपत्ति छा गई थी, लेकिन इस संकट को कोई भी दूर न कर सका। जब सभी देवताओं ने आकर आपसे विनती की तब आपने सूर्य को अपने मुंह से बाहर निकाला। इस प्रकार सारे संसार का कष्ट दूर हुआ। हनुमान जी सूर्य को निगलने में इसलिए सफल हो गए क्योंकि हनुमान जी स्वयं ऊर्जा के स्रोत हैं। सूर्य की ऊर्जा दिव्य है। सूर्य नमस्कार का बारह मंत्र बारह महीना और बारह राशियों का प्रतीक है।

हनुमान चालिसा में 40 चौपाई, 418 शब्द, 1041 अक्षर के साथ 11 बार राम का तथा 108 बार हनुमान का नाम आता है।

रामलला मंदिर अयोध्याः

गुरुवार दिनांक 16 जनवरी 2025 को सोनभद्र जिले के मुख्यालय रॉबर्ट्सगंज के डायट परिसर में विधायक खेल महाकुंभ के समापन समारोह में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, "काशी विश्वनाथ, श्री राम मंदिर और महाकुंभ नये भारत की पहचान है। हर कोई काशी, अयोध्या और प्रयागराज जाने को इच्छुक है।

श्री राम जन्मभूमि के संदर्भ में कई तिथि व तारीख महत्वपूर्ण हैं, 22 दिसंबर 1949, 30 अक्टूबर व 2 नवंबर 1990, 6 दिसंबर 1992 तथा 22 जनवरी 2024 पर प्राण प्रतिष्ठा तथा 22 जनवरी 2025 को पहली वर्षगांठ। अयोध्या धाम में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का प्रथम वर्षगाँठ पौष शुक्ल द्वादशी (11 जनवरी) को मनाई जाएगी। रामलला के विराजमान होते ही रामनगरी अवधपुरी में बढ़ती श्रद्धालुओं की संख्या से रोजगार और व्यापार को मानो पंख लग गए हैं। महाकुंभ में स्नान कर श्रद्धालु अयोध्या रामलला के दर्शन हेतु आ रहे हैं।

गणतंत्र दिवसः

दिल्ली में बुधवार 29/01/25 को "बीटिंग द् रिट्रीट" समारोह के दौरान विजय चौक रोशनी में नहाया नजर आया। इस दौरान मधुर संगीत और रायसीना हिल्स पर सेना के बैण्ड की धुनों ने दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया। विजय चौक पर आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु, उपराष्ट्रपति, जगदीप

धनखड़, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और अन्य केंद्रीय मंत्री शामिल हुए। यह कार्यक्रम गणतंत्र दिवस समारोह के समापन का प्रतीक है।

26 जनवरी 1950 को सुबह सवा दस बजे भारत की स्वतंत्र्य साधना अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करने में कृतकार्य हो गई। यद्यपि 15 अगस्त 1947 को ही भारत स्वतंत्र हो चुका था, किंतु 26 जनवरी के ऐतिहासिक दिन का विशेष महत्व है। राजनीतिक रूप से पूर्ण स्वतंत्र भारत ने नवनिर्वाचित राष्ट्रपति के पथ-प्रदर्शन में नवनिर्मित विधान को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाया है और इसका एकमात्र उद्देश्य भारत की सर्वतोन्मुखी उन्नति, शांति एवं समृद्धि और साथ ही विश्व शांति में योग देना है। 31 तोपों की गड़गड़ाहट के साथ जब राजभवन में गवर्नर जनरल श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने सर्वप्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य के स्थापना की घोषणा की तो 32 करोड़ भारतीयों के हृदय आनंदातिरेक से परिपूर्ण हो गये। उन्होंने अनुभव किया कि एक शताब्दी के सतत बलिदान का फल उनके सामने मुर्तरुप में प्रकट हुआ और देशवासी एक नए पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद का हिंदी में राष्ट्रपति के पद की शपथ लेना और दरबार हाल में अपना प्रथम भाषण हिंदी में देना इस बात के सूचक थे कि अब जन-बाणी को उसके उपयुक्त स्थान पर प्रतिष्ठित किया जा रहा है। राजेंद्र बावू के उद्बोधन “इस देश में आज से न कोई राजा है न कोई प्रजा, या तो सबके सब राजा है या तो सब के सब प्रजा। इतिहास में यह पहला अवसर है जब सारा देश (कश्मीर से कन्याकुमारी तक, काठियावाड़ और कच्छ से कोकोनाड़ा और कामरूप तक) एक से विधान के शासन सूत्र में बंधकर 32 करोड़ मनुष्यों के सुख-दुख की जिम्मेदारी अपने हाथ में ले रहा है। ये शब्द अनुभव कराते हैं कि देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति तभी संभव है जब हम सभी

अपना-अपना योगदान दें। गणराज्य दिवस पर केवल राजधानी में ही चहल-पहल नहीं रही, बल्कि देशभर में तथा विदेशों में भी इसे बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया गया।

15 अगस्त 1947 को हम स्वतंत्र हुए अतः स्वतंत्रता दिवस पर्व मनाते हैं। इस दिन हमारा तिरंगा प्रधानमंत्री द्वारा ध्वजारोहण किया जाता है। भारत आजाद हुआ तथा इसलिए झंडा नीचे से ऊपर जाकर फहराया जाता है मानो ब्रिटिश झंडा उतारकर भारतीय झंडा फहराया जाता है देश के मुखिया होने के कारण 15 अगस्त 1947 का ध्वजारोहण प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने किया था। 26 जनवरी 1950 को हमारा संविधान लागू हुआ था भारत एक गणतंत्र देश बन गया अतः गणतंत्र दिवस पर्व मनाते हैं। संविधान का मसौदा तैयार करने की शुरुआत डॉक्टर बी0 आर0 अंबेडकर की ओर से 26 नवंबर 1949 को हुई और यह 26 जनवरी 1950 को असर में आया। यह तारीख भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से साल 1930 में 26 जनवरी को ही पूर्ण स्वराज घोषणा का सम्मान करने के लिए चुनी गई थी। गणतंत्र दिवस का भव्य, समारोह नई दिल्ली के कर्तव्य पथ (पूर्व में इसे किंग्सवे कहा जाता था,1947 में इसे राज पथ कहा जाने लगा, 2022 में इसे कर्तव्य पथ कर दिया गया) पर भारतीय झंडा फहरा कर किया जाता है। गणतंत्र दिवस का भव्य समारोह पर 1950 से परेड के रूप में होता है जहां भारत के राष्ट्रपति के साथ विदेश के कोई राष्ट्रप्रमुख कार्यक्रम के अतिथि के रूप में मौजूद होते हैं। राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। 26 जनवरी 1950 को स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराए जाने के बाद भारत में गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया। उस दिन इंडोनेशिया के राष्ट्रपति डॉक्टर सुकर्णों अतिथि थे। गणतंत्र दिवस की 75 साल पूरे होने पर भी इंडोनेशिया के ही राष्ट्रपति प्रबीनो सुबियांतो 76वें गणतंत्र दिवस 2025 के मुख्य अतिथि रहे।

संविधान हमारी सामूहिक अस्मिता का आधार है। 76वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या देश के नाम संबोधन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि संविधान भारतवासियों की सामुदायिक अस्मिता का मूल आधार है। यह विलक्षण ग्रंथ सभी नागरिकों को एक परिवार की तरह एकता के सूत्र में पिरोता है। देश में जो व्यापक परिवर्तन हुआ है वह संविधान के उस रूप रेखा के बिना संभव नहीं था।

संविधान लागू होने के अमृत महोत्सव काल में देश के हर नागरिक के लिए न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मसमर्पित करने वाले नायक भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को कृतज्ञ राष्ट्र का नमन। प्रदेशवासियों को लोकतंत्र एवं सामाजिक समता को सर्वोपरि बनाने वाले 76वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। यह पर्व हमें अमर सेनानियों के स्मरण के साथ ही बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर के बनाए संविधान एवं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के विजन “विरासत एवं विकास के अनुरूप भेदभाव रहित शक्तिशाली आत्मनिर्भर राष्ट्र बनाने के लिए संकल्पित होने की प्रेरणा देता है। **योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश**

गीता और कुरआन लिखने के बाद मेलूपुर, काशी के निवासी हाजी इरशाद अली बनारसी युवाओं को संविधान के प्रति जागरूक करने के लिए 24/30 इंच बनाए कपड़ों पर दो साल से संविधान लिख रहें है। प्रस्तावना के साथ दिनांक 25/01/25 तक दो भाग लिख चुके हैं। उन्होंने कहा, पाँच साल में संविधान के सभी अध्याय लिखेंगे। उनके पिता मिट्टी से कपड़ों पर लिखा करते थे। कपड़ों पर लिखने के लिए इरशाद गंगा नदी की मिट्टी, गंगाजल और गोंद की स्याही बना कर नकट के पौधे के कंडे से लिखते हैं। संविधान के 22 भाग हैं। उन्होंने कहा,

संविधान पूरा होने के बाद पहली प्रति देश को समर्पित करने के लिए देश के राष्ट्रपति को भेंट करेंगे। इरशाद द्वारा लिखे गए संविधान के अंशः

भारत का संविधान इतिहास (संक्षेप में) जुलाई 1946 में द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटेन में नयी सरकार ने भारत के संबंध में अपनी नई नीति की घोषणा की तथा संविधान निर्माण करने वाली समिति को बनाने का निर्णय लिया। भारतीय संविधान सभा का निर्माण "भारत के संविधान" की रचना के लिए किया गया था। संविधान सभा की कार्यवाही 6 दिसंबर सन् 1946 ई को जवाहरलाल नेहरू द्वारा पेश किए गए एक उद्देश्य प्रस्ताव के साथ प्रारंभ हुई थी। भारतीय संविधान लिखने वाली सभा में 299 सदस्य थे।

महाकुंभ 2025:

महाकुंभ भारत की विराट संस्कृति और पुरातन धरोहर का भव्य समागम है। जैसे एक विशाल समुद्र अपने गर्भ में अनमोल रत्नों का भंडार और गूढ़ रहस्यों को एकत्रित कर वर्षों तक उनका संरक्षण करता है उसी तरह यदि हम महाकुंभ को भारत की सनातन परंपरा, धर्म-कर्म, भक्ति- उपासना और दर्शन शास्त्रों की भिन्न शैलियों का संरक्षक कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह भव्य समागम न केवल भारत में प्रचलित अनेक विचारधाराओं का अद्वितीय समावेश है, बल्कि एक महोत्सव है, एक प्रतीक है। एक प्रतिशब्द है भारत की अखंडता का उनके गौरवमयी इतिहास का, उसकी आध्यात्मिक विरासत का। महाकुंभ एक नाद है जिसमें भारत में उपजे और पल्लवित हुए सभी आध्यात्मिक मार्गों के स्पंद हृदय को झंकृत करता है। यही कारण है कि यह सभी भक्तों के लिए आविस्मरणीय अनुभव बन

जाता है। अनेक ऊर्जा से स्पंदित हुआ महाकुंभ का भव्य महोत्सव जीवन रुपांतर का द्वार है।

महाकुंभ के आरंभ के संबंध में पुराणों में समुद्र मंथन की कथा आती है। समुद्र मंथन में पहले विष कलश प्राप्त हुआ जिसे कोई लेने को तैयार नहीं था तो भगवान शिव ने पी लिया और नीलकंठ बन गए। मंथन की संपूर्णता कच्छपावतार भगवान विष्णु के सहयोग से हुई जो वस्तुतः अमृत कलश ही नहीं, अमृत सागर हैं। आगे फिर मंथन जारी रहा और अमृत कलश प्राप्त हुआ, जिसका पान करने हेतु देवताओं और दानवों में घनघोर युद्ध हुआ। उसी क्रम में इंद्र पुत्र जयंत अमृत कलश को छिपाने जा रहे थे। उनसे प्रयाग, पूर्व में इलाहाबाद, हरिद्वार,उज्जैन, तथा नासिक में बारह-बारह दिनों तक दानवों ने युद्ध किया। जयंत तथा दानवों की लड़ाई ग्रहों के जिस योगा-योग में हुई थी उसी योगा-योग में समुपस्थित होने पर मुमुक्षो जनों ने, देवताओं के पक्ष-पातियों ने प्रयाग आदि स्थलों पर एकत्रित होना शुरू कर दिया। कुंभ मेला इसी एकीकरण का विराट स्वरूप है। भगवान विष्णु ने मोहिनी अवतार लिया,देवताओं की विजय हुई और अमृत का लाभ मिला। युद्ध के दरमियान उपरोक्त चार स्थलों पर अमृत की कुछ बूंदे गिर गई। मिट्टी पर गिरने के कारण इनका पान संभव नहीं था। गिरे हुए अमृत बिंदुओं के माध्यम से अमृतत्व की संप्राप्ति भी संभव है तथा साधकों ने प्राप्त भी किया होगा। उन स्वल्प अमृत बिंदुओं की प्राप्ति के व्याज से समायोजित मेला ने अमृत के सागर का निर्माण कर दिया, जिसका पान करके मानव जीवन धन्यता को प्राप्त करता है।

आदि शंकराचार्य ने भी ऐसा विधान किया था कि इन चार स्थानों में संत समाज और धर्मानुरागी एकत्रित हो। कुछ विद्वानों का कहना है कि पहला कुंभ उत्सव भगवान शिव ने रखा था। भगवान शिव का संबंध ज्ञान, विज्ञान, धर्म से है। शिव की

सवारी नंदी है जो धर्म का सक्रिय रूप है। पुरुषार्थ के चार स्तंभ है धर्म, कर्म, काम और मोक्ष। इन चारों का विचार हो और उनकी गति उर्ध्वगामी हो सके, इसलिए महाकुंभ का महत्व बढ़ जाता है।

विद्यया अमृतमश्नुते के माध्यम से वेद भगवान ने ज्ञान द्वारा ही अमृतत्व प्राप्ति की उद्घोषणा की। देव ऋषि नारद ने सात्वस्मिन् परमप्रेम रूपी अमृत स्वरूपा च के सूत्र के माध्यम से ईश्वर भक्ति को ही अमृत स्वरूप माना है। इन दोनों ही अमृतों की प्राप्ति कुंभ मेला द्वारा संपादित होती है।

कुंभ (कलश या घड़ा) से मानव का दोस्ताना सदियों से रहा है। कुंभ मेला हर साल मकर संक्रांति से शुरु होता है। हर छः वर्ष के बाद अर्ध कुंभ आता है, पूर्ण कुंभ हर 12 वर्षों के बाद आता है तथा महाकुंभ 144 वर्षों के बाद मनाया जाता है। जाहिर है महाकुंभ हर मानव के लिए विशेष है क्योंकि कुछ लोग ही इस महान पर्व को देख पाते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने रविवार 10/01/2025 को मन की बात की 118वीं कड़ी में महाकुंभ को एकता, आनंद, समता और समरसता का असाधारण संगम करार दिया। उन्होंने कहा, हजारों वर्षों से चली आ रही इस परंपरा में कहीं कोई भी भेदभाव और जातिवाद नहीं है। कुंभ के साथ पुष्कर और गंगासागर मेले की भी चर्चा करते हुए कहा कि यह पर्व सामाजिक मेलजोल, सद्भाव और एकता को बढ़ाने वाले हैं। जब युवा पीढ़ी अपनी सभ्यता के साथ, गर्व के साथ जुड़ जाती है तो उसकी जड़े और मजबूत होती हैं और उसका स्वर्णिम भविष्य भी सुनिश्चित हो जाता है। पौष द्वादशी के दिन अयोध्या में राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की वर्षगांठ का भी जिक्र किया।

ओशो ने कहा है कि आज की सबसे बड़ी जरूरत है कि लोग धार्मिकता को समझे जिसे लोग धर्म समझते हैं, वे धर्म नहीं चट्टाने हैं। धार्मिकता तो एक बढ़ती हुई सरिता है जो पग-पग पर मोड़ लेती है। निरंतर अपना मार्ग बदलते हुए अंततः सागर तक पहुंचकर समा जाती है। धार्मिकता हृदय की खिलावट है। अपनी आत्मा अपनी ही सत्ता के केंद्र बिंदु तक पहुंचने का नाम है। आदमी किसी धर्म में पैदा नहीं होता। धर्म आदमी के भीतर पैदा होता है। धर्म की परिभाषा भगवान महावीर ने की है। वस्तु, स्वभाव और धर्म अर्थात हर वस्तु का जो स्वभाव है वही उसका धर्म है। पानी का धर्म है नीचे की ओर बहना, भाप का धर्म है हवा में उड़ना, अग्नि का गर्मी पैदा करना तथा माटी का धर्म है, स्थिर रहना। मनुष्य भी निसर्ग का हिस्सा है। उसे अपना धर्म ढूंढना जरूरी है। काश पूरी धरती पर धार्मिकता फैल सकती तो सारे धर्म विदा हो जाते। यह मनुष्य जाति के लिए एक महान वरदान होगा। जब-जब मनुष्य केवल मनुष्य होगा, चारों और प्रेम ही प्रेम होगा।

आस्था और आध्यात्मिकता के अविस्मरणीय अनुभव प्रयागराज महाकुंभ 2025 पर संदेशः

“महाकुंभ संस्कृतियों का संगम है। श्रद्धा और समरसता का संगम है। अनेकता में एकता का संदेश देता प्रयागराज,महाकुंभ 2025 मानवता के कल्याण के साथ ही सनातन से साक्षात्कार कर रहा है। भारत की एकता के जीवंत प्रत्येक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना के महासंगम प्रयागराज,महाकुंभ 2025 का भव्य एवं दिव्य आयोजन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व व मार्गदर्शन का सूफल है।“ **योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश**

“आज देश एक साथ विकसित भारत के संकल्प की तरफ तेजी से बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि इस महाकुंभ से निकली आध्यात्मिक सामुहिक शक्ति हमारे संकल्प को और मजबूत बनाएगी। महाकुंभ स्नान, ऐतिहासिक एवं अविस्मरणीय के साथ-साथ मां गंगा, यमुना सरस्वती की त्रिवेणी से मानवता का कल्याण हो हम सब की यह कामना है। संगम नगरी में आने वाले हर श्रद्धालुओं को मैं शुभकामनाएं देता हूँ।

चिरस्मरणीय जन सैलाब, अकाल्पनिक दृश्य और समता समरसता का असाधारण संगम इस बार कुंभ में कई दिव्य योग भी बन रहे हैं। महाकुंभ का यह उत्सव विविधता में एकता का उत्सव मनाता है। महाकुंभ भारत की शाश्वत, आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक और आस्था व सद्भाव का उत्सव है।“

महाकुंभ महात्मः

सहस्त्र कार्तिके स्नानम् माघे स्नानशतानी च । बैसाखे नर्मदा कोटिः कुंभ स्नातेन तत्फलम् ।।

कार्तिक महीने में हजार बार, माघ में सौ बार, वैशाख में करोड़ बार गंगा- नर्मदा आदि में स्नान करने से जो फल प्राप्ति होती है, वही फल एक बार कुंभ स्नान करने से प्राप्त हो जाता है।

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

सनातन धर्म, महाकुंभ पर्व

कुंभ यानी कलश या घड़ा से मनुष्य का नाता बहुत पुराना है। विभिन्न उत्सव या आध्यात्मिक मौकों पर कलश का उपयोग निश्चित है। यहां तक की हमारी मृत्यु के बाद नदी या जल में अस्थि विसर्जन कलश में ही किया जाता है। मिट्टी के कलश तो इन अवसरों की अधिकतर शोभा बढ़ाते हैं। 144 वर्ष बाद दुर्लभ सहयोग में लगे इस बार के महाकुंभ में पुण्य प्राप्ति को हर कोई ललायित है। साल 2025 में आया महाकुंभ की शुरुआत 13 जनवरी से होकर 26 फरवरी 2025 को समापन होगी। जैसा कि हम सभी जानते हैं कुंभ में नदी में स्नान का महत्व है। महाकुंभ के दरमियान हम उन जगहों पर स्नान करते हैं जहाँ समुद्र मंथन में अमृत की कुछ बूंदें छलक कर गिर गई थी। ज्ञानियों का कहना है कि प्रयागराज कुंभ का विशेष महत्व है क्योंकि हमें प्रयागराज के तट पर गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम पर स्नान करने का पुण्य प्राप्त होता है। 144 साल बाद दुर्लभ संयोग का महाकुंभ बहुत फलदाई है। करीब 45 दिनों तक महाकुंभ में कुछ विशेष दिन, विशेष स्नान किया जाता है।

प्रथम (शाही स्नान) - पौष पूर्णिमा 13 जनवरी दिन सोमवार महाकुंभ की शुरुआत वर्ष की पहली पूर्णिमा की रात जो उज्जवल और सुंदर चाँदनी रात का प्रतीक है।

द्वितीय (अमृत स्नान व शाही स्नान) - मकर संक्रांति 14 जनवरी दिन मंगलवार किसानों के लिए एक प्रमुख त्योहार जो खुशी और खिचड़ी के साथ मनाया जाता है।

तृतीय (द्वितीय अमृत स्नान) - मौनी अमावस्या 29 जनवरी दिन बुधवार अमावस्या के दौरान जो मौन और अध्यात्मिक अनुष्ठान द्वारा चिन्हित है।

चतुर्थ (तृतीय अमृत स्नान व शाही स्नान) - सरस्वती पूजा, बसंत पंचमी 3 फरवरी, दिन सोमवार वसंत ऋतु के आगमन के रुप में मनाई जाती है जब पेड़ों पर नये पत्ते उगने लगते हैं।

पंचम (पवित्र स्नान) - माघी पूर्णिमा 12 फरवरी, दिन बुधवार वर्ष की दूसरी पूर्णिमा की रात, एक और चांदनी रात।

षष्ठ (पवित्र स्नान) - महाशिवरात्रि 26 फरवरी, दिन बुधवार महाकुंभ समाप्त।यह त्योहार भगवान शिव को समर्पित है। आम के पेड़ों पर नई कलियाँ खिलने लगती हैं।

महाकुंभ में श्रद्धालुओं की गिनती सन् 1886 से शुरू की गई। 1886 में श्रद्धालुओं की संख्या 10 लाख थी, आजादी के बाद स्वतंत्र भारत का पहला कुंभ सन् 1954 में पड़ा। पंडित जवाहरलाल नेहरू तत्कालीन प्रधानमंत्री थे। इलाहाबाद के ही रहने वाले थे, यह स्वाभाविक था कि वह स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहले कुंभ का सफल बंदोबस्त के लिए बहुत चिंतित थे। जमुना प्रसाद त्रिपाठी मेले की पुलिस व्यवस्था के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक थे। नेहरू जी ने मेले बंदोबस्त के निरक्षण हेतु आए थे। श्री त्रिपाठी ने नेहरू जी के पास पहुंचकर सेल्यूट किया। उस समय प्रधानमंत्री बहुत अधिक सुरक्षा घेरे में नहीं होते थे। प्रधानमंत्री ने दाहिने हाथ से उनकी पीठ थपथपाकर शाबासी दी जिसका मतलब था कि इससे बढ़िया इंतजाम हो ही नहीं सकता। जाहिर है वह खुशी एक पुलिस अधीक्षक के लिए कितना बड़ा होगा कि देश के प्रधानमंत्री द्वारा एक पुलिस अधीक्षक को शाबाशी हासिल हुई। 24 घंटे में ही ऐसी घटना घटी कि दूसरे दिन आधी रात को जब श्री त्रिपाठी थके हारे अपने घर में घुसे तो पत्नी का स्वर सुनाई

दिया देखो हत्यारा आ गया। प्रधानमंत्री शाबाशी हासिल करने के दूसरे दिन का वर्णन सुनाया हिंदी के वरिष्ठ कथाकार मार्कंडेय ने जो छात्र थे और दारागंज के एक ऊंचे टीले से नीचे गंगा तट पर असंख्य नर मुंडों के प्रवाहों को देख रहे थे। उन्होंने बताया कि अगर बंधे से चावल छींटा जाता तो एक भी दाना जमीन पर नहीं गिरता। अचानक उन्होंने देखा की भीड़ में कुछ अजीब सी हलचल हुई और दूर से ऐसा लगा कि लोग एक-दूसरे पर लेटते जा रहे हैं। जब तक ऊपर के लोग कुछ समझते सड़क और तट की गहराई एक समान हो गई। अधिकारिक संख्या कुछ भी हो आमजन में प्रचलित विश्वास के अनुसार स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस पहले कुंभ की असफल व्यवस्था के चलते हजारों लोग मारे गए।

सन् 1954 के अनुभवों से सबक लेकर 1965 के कुंभ में पुलिस व्यवस्था के प्रभारी थे श्री केपी श्रीवास्तव। जमीनी अनुभवों और व्यावहारिक सूझ – वूझ के धनी श्रीवास्तव ने हर स्टेक होल्डर को विश्वास में लेते हुए मेला क्षेत्र का चप्पा चप्पा छान डाला। दुर्घटना न होने पाए इसके लिए जो आपात योजनाएं तथा ट्रैफिक प्लान बनाएं, उनमें न सिर्फ रचे बसे थे बल्कि कुंभ सफलतापूर्वक संपन्न कराने के दो दशक बाद भी कई किस्तों में घंटों ट्रैफिक प्लान और आपातकालीन योजनाओं के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्हें एक बार भी स्थानों और व्यक्तियों के नाम की पुष्टि करने के लिए किसी कागज को देखने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

सन् 1989 में कुंभ के लिए श्री विभूति नारायण राय आईपीएस अधिकारी को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के लिए तैनाती हुई 1954 के अनुभवों के बाद सरकार बहुत सतर्क हो गई। इस कारण वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति एक साल पहले होने लगी। अभी श्री राय सेवा निवृत्त पुलिस अधिकारी है। उन्होंने

अपना अनुभव साझा करते हुए बताया मैं बहुत पहले प्रयागराज पहुंचकर कुंभ के प्रबंध से जुड़े व्यक्तियों और दस्तावेजों को खंगाल कर खुद को दुनिया के सबसे बड़े मेले का इंतजाम के लिए मानसिक एवं शारीरिक रूप से तैयार करता रहा। 1954 एवं 1965 के कुंभ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षकों से भी मिला। श्री त्रिपाठी सन् 1954 के पुलिस अधीक्षक की बूढ़ी आंखें चमकने लगी और घटना सुनाते-सुनाते उनका गला अवरुद्ध हो गया। उन्होंने एक अंग्रेजी कहावत का जिक्र करते हुए बताया सफलता और विफलता के बीच बहुत महीन रेखा होती है। वर्ष 1988-89 में देश खालिस्तानी चरमपंथ अपने उरुज पर था। कश्मीर भी जल रहा था तथा तरह-तरह की अफवाहें कुंभ के गर्दिश करने पर लगी थी। मेरी भी 1989 के कुंभ को लेकर दिल्ली में पेशी हुई । लंबी बैठक के बाद नेशनल सिक्योरिटी गार्ड के तत्कालीन महानिदेशक श्री वेद मरवाह ने मुझसे कहा, वापस जाने से पहले पहले मैं यह आश्वासन दूं कि कुंभ शांति से निपट जाएगा। मैं बस के पी श्रीवास्तव जैसे सूझ-बूझ वाले अधिकारी की याद दिलाया कहा कुंभ को सकुशल निपटा पाने की उम्मीद कर सकते हैं। कुंभ सकुशल निपट गया।

2019 के कुंभ में 25 करोड़ लोग शामिल हुए थे। विश्व के बड़े आयोजन जैसे रियो कार्निवल में 70 लाख, हज में 25 लाख और अक्टूबर फेस्ट में 72 लाख लोग शामिल होते हैं। गुरु यानी बृहस्पति नक्षत्र को ज्योतिष शास्त्र ने ज्ञान, संतान, मान, सम्मान, धार्मिक कार्य एवं भाग्य आदि का कारक माना है। गुरु का मार्गी होना सामान्य दृष्टि से शुभ माना जाता है। गुरु अपनी कक्षा 12 वर्षों में पूरा करता है तथा सूर्य एवं चंद्रमा की सीधाई में होने से एक दिखता है इसे तारामंडल की सिधाई (Constellation Alignment) कहते हैं। गुरु का इस तरह बारह वर्षों में अपनी कक्षा पूरी करना पूर्ण कुंभ कहलाता है। इस

तरह माघ मेला प्रतिवर्ष, अर्ध कुंभ मेला प्रति छः वर्ष, पूर्ण कुंभ मेला बारह वर्ष, महाकुंभ मेला प्रति 144 वर्ष आता है । कुंभ मेला को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में यूनेस्को द्वारा पहचान मिली है। 144 सालों बाद प्रयागराज में महाकुंभ का यह दुर्लभ सहयोग गंगा, यमुना एवं सरस्वती के संगम स्नान एवं पुण्य प्राप्ति को हर कोई ललायित रहा। इस महाकुंभ में 45 दिनों मे करीब 66.30 करोङ लोगों ने स्नान किया। अनेक संत, ज्ञानी, राजनीतिज्ञ, विशिष्ट व्यक्ति, व्यवसायीयों ने स्नान किया। प्रयागराज उत्तर प्रदेश में होने वाले इस महापर्व के लिए मुख्यमंत्री ने स्वयं अपनी देखरेख में सारे इंतजाम किए। मैं यह बताना चाहता हूं कि संगम तीन नदियों में गंगा जमुना का मिलन तो साफ-साफ दिखता है क्योंकि पानी का रंग अलग-अलग है, परंतु मां सरस्वती गुप्त रूप से यहां मिलती हैं। इनका महत्व विशेष है। आध्यात्मिक रूप से मां सरस्वती ज्ञान की देवी हैं। यही कारण है कि बसंत पंचमी पर त्रिवेणी संगम में स्नान का विशेष महत्व है। सन् 2025 के इस महापर्व में संगम तट पर बसी धर्म नगरी में देवी देवताओं की दिव्य प्रतिमाएं महाकुंभ को और भव्य बना रही है। मां सरस्वती बद्रीनाथ मानागांव जिला चमोली, उत्तराखंड से निकलती है। संगम के गुप्त रूप के बारे में कहा गया है कि सरस्वती के तट पर वेदव्यास ने भगवान गणेश से अपने वेद लिखने की सहायता मांगी। वेदों को लिखने के दरमियान सरस्वती के लगातार बहाव की आवाज से उन्हें वेद बोलने में कठिनाई लगने लगी। ऐसी स्थिति में उन्होंने सरस्वती नदी को पाताल लोक में बहने का आदेश दिया। बाद में दवर पाल बेनी माधव जो भगवान विष्णु के अवतार थे, मां सरस्वती को लौट जाने की इच्छा जाहिर की। मां सरस्वती एक कूप के रूप में प्रकट हुई। यहां अशोक ने अपने नाम पर अशोक किला बनवाया। इस किले में अशोक स्तंभ भी है। आजकल आम लोगों को किले में

जाने की मनाही है, क्योंकि यह भारतीय सेना की देखरेख में सैनिक कारतूस का खजाना है। महाकुंभ 2025 के दरमियान महाकुंभ स्नान के दिन प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नए बने अक्षय वट पातालपुरी के 1.5 किलोमीटर कॉरिडोर का शिलान्यास किया। 2016 में भारतीय सैनिकों ने बावली के स्रोत का संगम में मिलान को जानने के लिए भू-आकृति विज्ञानी एवं जलीय विज्ञानी के सहयोग से कुंड में 400-500 बड़े ड्रम से रंग को डाला, पाया गया कि यह पानी संगम में गंगा यमुना मिलन की जगह निकल गया।

इस 2025 के महाकुंभ में प्रशासन की ओर से इस धर्म नगरी की जिम्मेदारी जिला अधिकारी विजय किरन आनंद तथा डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल श्री वैभव कृष्ण को सौंपा गया है। समय-समय पर जरूरत के अनुसार वरिष्ठ अधिकारियों की तैनाती की जाती है। 4000 हेक्टेयर में बसाए गए महाकुंभ नगर अनूठा एवं सराहनीय है। इस नगर की जानकारीः

प्रयागराज की तहसीलें – सदर, करछना, फूलपुर, सोरांव सौरभ

महाकुंभ के कुल उपनगर - सात
कल्पवासी - 10 लाख
एलइडी स्ट्रीट लाइट - 67000
सुरक्षा के लिए कैमरा - 3000
घाट की लंबाई - 12 किलोमीटर
पार्किंग स्थल - 1850 हेक्टेयर
मेला की लंबाई - 400 किलोमीटर
टॉयलेट - 150,000
पब्लिक ठहराव - 25000
सफाई कर्मी - 15000
सड़के फिर से बनाई गई सड़के - 200

फ्लाईओवर - 14
ट्रेनों की संख्या- 13000
कुल खर्च- 7500 करोड़
कुंभ मेले में कुल राजस्व गांव- 67
पुलिस स्टेशन की संख्या- 56
पुलिस पोस्ट- 133
मेले में पांटून पुल- 31
टेंटो की संख्या- 175000
कुल क्षेत्रफल 4000 हैकटेयर
सेक्टरों की संख्या- 25 (1-2 परेड ग्राउंड में,3- बड़े हनुमान मंदिर के पास संगम क्षेत्र, 4- शास्त्री ब्रिज के नीचे दारागंज की ओर, 5- गंगा नदी के पार झांसी इलाके में, 6 से 10- नाग वासुकि मंदिर से लेकर शिवपुरी कुटी तक, 11 से 19 झूसी उत्तरी, झूसी उत्तरी, 20 से 22 झूसी दक्षिणी, 23 से 25 लोक क्षेत्र जहां टेंट सिटी बसाई गई।)

AI powered surveillance system, real time crowd monitoring, Police and disaster management team

इस महाकुंभ में एक से बढ़कर एक तपस्वी और हट योगी पहुंचे हैं। इनके कठिन और अविश्वसनीय तप को देखकर हर कोई हतप्रभ रह जाता है। सोमवार को पौष पूर्णिमा पर्व पर गंगा में पावन डुबकी के साथ ही संगम की रेती पर एक माह के कठिन कल्पवास की शुरुआत हो गई। कल्पवास 13 जनवरी से शुरू होकर 12 फरवरी तक हुआ। करीब 10 लाख लोगों ने कल्पवास किया। कल्पवास के नियम का कड़ाके की ठंड में पालन करना सबसे कठिन माना जाता है। इन नियमों में सत्य वचन, अहिंसा इंद्रियों पर नियंत्रण, प्राणियों पर दया भाव, ब्रह्मचर्य का पालन,

व्यसनों का त्याग, ब्रह्म मुहूर्त में जागना, नित्य तीन बार पवित्र नदी में स्नान, त्रिकाल संध्या, पितरों का पिंड दान, दान शामिल है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत, उपवास, देव पूजन, सत्संग और यथाशक्ति दान का दिया गया है।

किसी कुंभ की सबसे बड़ी खासियत नागा साधु होते हैं। प्रयागराज महाकुंभ के 25 सेक्टरों में सेक्टर 15 के बाद सेक्टर 16 में झूसी से संगम की ओर बढ़ते हैं तो मेले की रंगत चढ़कर बोलती है। विशाल शिबिर आकर्षक द्वार और करतब दिखाते संत सेक्टर 16 से 20 के बीच दिखे। सबसे अधिक श्रद्धालु इसी क्षेत्र में दिखे । सेक्टर 16 में किन्नर अखाड़े का शिविर दिखाई दिया जो उज्जैन कुंभ से अस्तित्व में आया। यह अखाड़ा 2019 में पहली बार प्रयागराज कुंभ में आया था।

संगम लोहार मार्ग पर लगे शिविर में आचार्य महामंडलेश्वर डॉक्टर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी दोपहर 12 बजे से सभी को आशीष देते हैं। यहीं बगल में स्वामी अड़ंगड़ानंद का विशाल शिविर आकर्षण का केंद्र है। आगे सेक्टर 17 में पहुंचते ही मेले के आचार्य और दंडीबाडा के संत दिखे। लक्ष्मी नारायण मंदिर शिविर में भागवत कथावाचक डॉक्टर अनिरुद्धाचार्य का शिविर लगा है। स्वामी राघवाचार्य और अन्य संतों का शिविर यहां पर है। भगवान श्री कृष्ण की रासलीला और कथा प्रवचन इस सेक्टर की खासियत है। सेक्टर 17 से 18 तक पहुंचते ही एक शिविर में तिरंगे दिख जाएंगे जो देशभक्ति से ओत-प्रोत करते हैं। यहां जम्मू-कश्मीर के संत स्वामी बालक दास के शिविर में अमर शहीदों के नाम यज्ञ होते हैं। इसी सेक्टर के अन्नपूर्णा मार्ग पर जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी का शिविर आकर्षण का केंद्र बना है। इसी सेक्टर में दंडी सन्यासियों के शिविर है, जहां कथा प्रवचन और भंडारे का आयोजन होता है तथा स्वामी अधोक्षजानंद देव तीर्थ का शिविर है।

आगे सेक्टर 19 में सनातन धर्म के सर्वोच्च गुरु शंकराचार्यों का शिविर दिखाई देता है। यहां शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वर नंद सरस्वती के शिविर लगे हैं। इस सेक्टर में प्रखर जी का पीपी एम अस्पताल भी है। आगे सेक्टर 20 में प्रवेश करते ही मेले की रंगत अलग हो जाती है। यहां पर सभी 13 अखाड़े हैं और नागा साधु दिखाई देते हैं। प्रतिदिन अखाड़े में महामंडलेश्वर बनाने का कार्यक्रम होता है।

जूना अखाड़े में महंत बाबा संत पुरी के शिविर में चार संतों के बीच गेरूआ वस्त्र में तीन साल के एक बच्चे को सभी ने कहा, यह बालक संत है। नाम है सरवन पुरी। गुरु सतपुरी ने उसे अपने गोद में बैठा लिया। अपने गले में पड़ी माला को बाल संत हाथ में लेकर तुतलाती आवाज में ओम नमः शिवाय का जाप शुरू कर दिया।

मेले में पहुंचे 128 वर्षीय पद्मश्री स्वामी शिवानंद एक सिद्ध तपस्वी, ध्यानी और ज्ञानी सबसे उम्र दराज संत है। 21 मार्च 2012 को तत्कालीन राष्ट्रपति राजनाथ कोविंद से पद्म श्री पुरस्कार पाया। 8 अगस्त 1896 को जन्मे स्वामी का आश्रम काशी के कबीर नगर में है। मेला क्षेत्र में साध्वी दिखने वाली हर्षा रिछारिया चर्चा में है।

श्रीधाम वृंदावन की ओर से सेक्टर 16 में लगाए गए श्री राधा किशोरी सेवा धाम शिविर में 20 साल की किशोरी मनु प्रिया का प्रज्ञा महात्मा पर 5 दिनों तक प्रवचन होगा। श्रीधाम के स्वामी सत्यम ने बताया कि जब वह 8 साल की थी तब से 2013 के प्रयागराज महाकुंभ से श्री मदभागवत् और राम कथा सुना रही है। महोबा की 15 साल की दिव्यांशी किशोरी अरैल क्षेत्र में श्री राम कथा सुना रही है। 12 साल की उम्र से श्रीमद् भागवत कथा और राम कथा सुना रही है।

गुड़िया से खेलने की उम्र में कथावाचिका बनी कथा व्यास अनुष्का पाठक 8 साल की है। उन्हें पिछले साल प्रधानमंत्री

बाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। श्रृंगवेरपुर के आनापुर में विद्यार्थी पब्लिक स्कूल की कक्षा पाँच की छात्रा मूल रूप से कुशीनगर की रहने वाली है।

महाकुंभ नगर में सेक्टर एक में बने अयोध्या की तरह बने राम मंदिर के प्रतिरूप में 23/01/25 गुरुवार से रामलाला के दर्शन शुरू हो गए हैं। 22/01/25 बुधवार को रामलला की प्रतिमा स्थापित की गई। इस प्रतिरूप में बांस बल्ली, फाइबर कोलकाता से लाया गया, का उपयोग हुआ है। रामलला की मूर्ति काटी से बनाई गई है तथा रांची की लाइटिंग की गई है।

गंगा बड़ी गोदावरी, तीरथ बड़े प्रयाग, धारा बड़ी समुद्र की, पाप कटे हरिद्वार- भारतीय संस्कृति में जल केवल जीने का नहीं, बल्कि मोक्ष का साधन है। चाहे जीते जी कुंभ जैसे आयोजन हो या मृत्यु पश्चात अस्थि विसर्जन हमारी संस्कृति में जल के बिना कोई संकल्प पूरा नहीं होता। पानी पिलाना पुण्य का काम होता है, कहा जाता है महाभारत में अभिमन्यु जब वह वीरों से घिर गया था तो पानी की मांग की। पानी बगल में था परंतु कर्ण ने अनदेखा कर दिया। इसके बदले रणभूमि में अर्जुन से लड़ते-लड़ते उसके रथ का पहिया उसी जल में धस कर फंस गया और अर्जुन उसे मार सका। पानी की महिमा बड़ी निराली है। बड़ो-बड़ो को पानी पिलाने वाले यहां कम नहीं है और ऐसों की कमी नहीं है, जिनको आंखों का पानी मर चुका है।

साध्वी डॉक्टर निधि भारती ऑपरेशन रिसर्च में दिल्ली विश्वविद्यालय की पीएचडी है। कुंभ में 8 फरवरी से मेगा कार्यशाला यूथ फर्स्ट का संचालन करेगी। साध्वी अदिति भारती दिल्ली के टेरी विश्वविद्यालय से पर्यावरण विज्ञान में एमएससी गोल्ड मेडलिस्ट रही हैं। श्रद्धालुओं के लिए 16 से 20 जनवरी तक देवी भागवत कथा भीतर की शक्ति को पहचानने हेतु प्रस्तुत

किया। साध्वी तपेश्वरी भारतीय गणित में मास्टर की डिग्री हासिल की है। 2011 में विश्व आध्यात्मिक संसद में सर्वश्रेष्ठ वक्ता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। कुंभ में 31 जनवरी को मेघा कार्यक्रम शिव आनंदम व गीतांजलि में प्रबुद्ध वर्ग को संबोधित करेंगीं।

साध्वी पदमा भारती दिल्ली कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग से एमटेक है। बीटेक में गोल्ड मेडलिस्ट रही है। गत 10 वर्षों से संस्थान के सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया ब्रांच के सामाजिक एवं आध्यात्मिक कार्यक्रम की देख-रेख करती हैं। 14 फरवरी से वह भागवत् गीता पर प्रेरक वार्ता करेंगी। साध्वी दीपिका भारती फैशन डिजाइनर है और निफ्ट की छात्रा रह चुकी है। 15 वर्षों से संस्थान के नारी सशक्तिकरण कार्यक्रम संतुलन की इंचार्ज है। 23 फरवरी को कुंभ में नारी उत्थान बैठक को मंचित करेंगी। वह कथावाचक भी है। डॉक्टर सर्वेश्वर ने केमिस्टी में आईआईटी दिल्ली से पीएचडी की है। 9 से 15 फरवरी तक महाकुंभ में आगंतुकों को भगवान शिव की कथा का रसपान करायेंगी।

महाकुंभ में सातों ग्रह एक ही कतार में रहते हैं यह न केवल अपार जन समूह का जमघट है। अपितु शुद्ध भक्तों में गहन आध्यात्मिक भावनाओं को प्रेरित करता है जूपिटर यानी बृहस्पति सबसे बड़ा ग्रह है जिसे अपनी कक्षा पूरा करने में 12 वर्ष लगते हैं। इसका गुरुत्वाकर्षण बहुत शक्तिशाली है। इसलिए सभी क्षुद्र ग्रहों को अपने स्थान पर रखता है। हमारा सबसे नजदीक ग्रह बुध है। जगत गुरु ने ग्रहों से शांति के लिए श्लोक बताया है।

ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरांत कारी भानुःशशि भुमि सुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्र शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहा शांति करा भवंतु।।

द्वारका पीठ के शंकराचार्य का आगमन मौनी अमावस्या पर अमृत स्नान के लिए हुआ। उन्होंने कहा, 144 वर्ष बाद

महाकुंभ का जिक्र पुराणों में है। यह समूचे विषय को अनेकता में एकता का संदेश देता है। जो लोग मूर्तियों को बुत और हिंदुओं को वुतपरस्त मानते हैं। उनका प्रवेश बंद होना चाहिए क्योंकि कुम्भ पर्व पर त्रिवेणी तट पर बसने वाला संपूर्ण क्षेत्र सनातनियों के लिए बिना ईट कंक्रीट छत के एक मंदिर के सदृश्य है।

आदि शंकराचार्य ने भी ऐसा विधान किया था कि सभी चार जगहों पर संत समाज एवं धर्मानुरागी एकत्र होते हैं। हमारे देश में मुख्य रूप से छह दर्शन है। इन सभी दर्शनों के जितने भी आचार्य, संत, ज्ञानी और दर्शन शास्त्री हैं, वे सभी लाखों की संख्या में कुंभ मेले में एकत्रित होते हैं।

डीएम महाकुंभ नगर विजय किरन आनंद की देख-रेख में अब तक का सबसे विशाल कुंभ महानगर जिसे राज्य सरकार उत्तर प्रदेश ने जिला घोषित कर रखा है। 25 सेक्टरों में 9 सेक्टर गंगा इस पार और 16 सेक्टर गंगा यमुना के उस पार। करीब 10,000 एकड़ का नगर अस्थायी परंतु पूर्ण विकसित है। डेढ़ महीने की उम्र वाला यह नगर लखनऊ, कानपुर एवं आगरा तीनों के सारे वाशिंदों को एक साथ बसाने की क्षमता रखता है। समय के साथ-साथ क्षेत्रफल बढ़ता गया है।

2001- 3695 एकड़ 11 सेक्टर

2013- 4784 एकड़ 14 सेक्टर बना

बृहद योजना एवं उच्च कोटि के इंतजाम का लाभ 19 जनवरी को साफ दिखा जब मेले के सेक्टर 19 में भयंकर आग लगी, 10 से अधिक टेंट जलकर खाक हो गए पर कोई घायल नहीं हुआ। दिन में टेंट सफेद, भगवा और पीले नजर आते हैं जो अंधेरा होते ही रोशनी में नहा जाते हैं। इन दिनों देश का सबसे उत्तम दर्शनीय स्थल महाकुंभ नगर है। 45 दिनों का परमानंद जहां कोई सोता नहीं है। रात 12:00 से ही स्नान शुरू हो जाता

है। स्नान की विशेष सुविधा एवं डुबकी की उत्तम सुविधा परंतु डूबने का कोई खतरा नहीं है। प्रशासन बार-बार घोषणा करती है "स्वच्छता रखें सावधान रहें" किसी को खोने का खतरा नहीं। दारागंज में गंगा जी के किनारे हरित माधव मंदिर सुंदर शिखर से जैसे ही कोटरे को पार करती है, सूर्य की लालिमा टकराती है सड़क पर लगे साउंड सिस्टम पर मधुर आवाज में अनूप जलोटा का भजन गूंजने लगते है। "जाना था गंगा पर प्रभु केवट की नाव चढ़े"।

महाकुंभ मेला क्षेत्र के सेक्टर 12 में स्थित शिविर में शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वर आनंद की परमधर्म संसद में शनिवार 8 फरवरी को पूरे विश्व में फैले हुए हिंदुओं की धार्मिक संस्थाओं को सुलझाने के लिए हिंदू धार्मिक नेतृत्व संरचना गठन करने का प्रस्ताव हर हर महादेव के उद्घोष के साथ पारित किया गया। परम धर्म संसद 1008 में आदेश पारित करते हुए शंकराचार्य ने कहा कि सदन एक ऐसी धार्मिक संरचना सुस्थापित करती है जो विश्व के किसी भी कोने में रहने वाली हिंदू जनता के धार्मिक सहायता के लिए तत्पर रहेगी। इस संरचना में विश्व से लेकर प्रदेश स्तर तथा संसदीय क्षेत्र से लेकर पंचायत स्तर और व्यक्ति स्तर तक पहुंच बनाई जाएगी। इनके प्रमुखों को क्रमशः परम धर्माधीश, प्रवर धर्माधीश, धर्माधीश, धर्माध्यक्ष, धर्म प्रमुख, धर्मासद, धर्माधायक धर्मदूत, धर्मवीर या धर्मप्रेमी कहा जाएगा। इनमें से जो लोग पूर्णकालिक रूप से सेवा देना चाहते हैं वह 1008 guru वेबसाइट पर पंजीकरण करा सकते हैं।

दिव्य, भव्य और डिजिटल महाकुंभ की आभा को निहारने वाला संगम में डुबकी लगाने के लिए देश-विदेश से आस्था की डोर में बने श्रद्धालु चले आ रहे हैं। बच्चे, बूढ़े, दिव्यांग,

लाचार, बीमार हर कोई बस किसी तरह संगम पहुंचना और डुबकी लगाना चाहता है। शनिवार को हमीरपुर से आए श्रद्धालु रामनिवास ने प्रयागराज जंक्शन पर ट्रेन से उतरते 3 साल के गुड्डू को कंधे पर बैठा लिया। अस्थमा से उनकी सांस फूल रही थी, लेकिन बच्चे को महाकुंभ दिखाने की खुशी के आगे सब भूल गए। 4 साल की बेटी आरूषी को कंधे पर बैठाकर उन्नाव से आए श्रद्धालु दिलीप कुमार ने बताया कि घर से संगम तक 40 किलोमीटर बच्ची को कंधे पर बैठाकर चला। अपने पिता विवेक के कंधे पर बैठे 3 साल के श्रेयांश ने पूछा पापा संगम कितनी दूर है।

वृष राशि गते जीवे मकरे चंद्र भास्करौ। अमावस्या तदा योगः कुंभस्यस्तीर्थ नायके।।

इस श्लोक से मौनी अमावस्या का महात्म समझाते हुए शंकराचार्य स्वामी अभिमुक्तेश्वरानंद सरस्वती कहते हैं कि जब सूर्य, चंद्रमा, मकर, गुरु वृष राशि पर हो और अमावस्या की तिथि हो तो तीर्थराज प्रयागराज में कुंभ का योग में मौनी अमावस्या ही प्रमुख पर्व है।

महाकुंभ की आभा ने खास मकसद से साइकिल से देशाटन पर निकलने वाले युवकों को भी आकर्षित किया। पर्यावरण की अलख जगा एक युवक सन्यासी हिमाचल प्रदेश से 1200 किलोमीटर की दूरी साइकिल से तय कर महाकुंभ पहुंचा। सोनभद्र के रेणुकूट निवासी राम बाहुबली का एक दिन काशी में मणिकर्णिका घाट पर जलते शवों को देख ह्रदय विचलित हो गये और उन्होंने गृहस्थ जीवन त्यागकर स्वामी बालक दास से दीक्षा ले ली। सन्यासी जीवन बिताते हुए वह पर्यावरण संरक्षण की अलख जगाने देशाटन पर साइकिल यात्रा शुरू कर दी। युवा संत बाहुबली अरुणांचल से हिमांचल फिर साइकिल चलाते-चलाते महाकुंभ क्षेत्र पहुंच गए। देश भ्रमण पर निकले संबलपुर, ओड़ीसा

के रूपम भाई 15 दिसंबर को घर से असम जाने के लिए निकले थे। साइकिल से 700 किलोमीटर की दूरी तय कर बिहार पहुंचे। सड़कों की भीड़ देखकर मौनी अमावस्या को प्रयागराज पहुंच गए। इसी तरह पल्लव शुक्ला मध्य प्रदेश के जबलपुर से महाकुंभ में पुण्य की डुबकी लगाने अकेले ही साइकिल से निकल पड़े। गुजरात अरावली से 1250 किलोमीटर साइकिल चलाकर महाकुंभ पहुंचे श्री कज्जन।

कुंभ मेले के नाम के साथ ही भारी भीड़, पवित्र नदी में डुबकी लगाना और इस माहौल में गूंजती भक्ति सभी को याद आती है। इन सब के बीच भव्यता की धड़कन बनते हिमाचल के आध्यात्मिक योद्धा जिन्हें पूरी दुनियाँ नागा के नाम से जानती है। भस्म से लिपट इन संतों के आस-पास एक अजब रहस्य महसूस होता है। बहुत सारे प्रश्न हर एक के मन में उपजते हैं। सभी जानने को उत्सुक रहते हैं आखिर नागा साधु कौन है, कैसे बनते हैं, पूरे साल कहां रहते हैं।

कहा जाता है आदिशंकराचार्य ने शास्त्र को बचाने के लिए शस्त्र उठाने की अपनी परिकल्पना को साकार करने के उद्देश्य से अखाड़ों की स्थापना की थी, जिनके सैनिक थे नागा संन्यासी। इन्हें धर्म सैनिक या अयोध्या सन्यासी भी कहते हैं। इतिहास में इनकी वीरता एवं युद्ध कौशल के कई उदाहरण है। नागाओं ने वक्त आने पर अंग्रेजों से भी 20-30 वर्ष डटकर मुकाबला किया था। अब तो सनातन की इस फौज में युवाओं का भी जुड़ाव हो रहा है। कठिन साधना करते हुए स्वयं को सनातन धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए समर्पित होना ही इनकी सोच है।

नागा संन्यासी बनने के लिए निर्धारित प्रशिक्षण एवं नियमबद्ध प्रक्रिया होकर गुजरना पड़ता है। पहले दो-तीन साल तक उन्हें अखाड़े के इतिहास परंपरा व साधु संतों के जीवन को समझाना होता है। गुरु की सेवा करनी होती है। इस दौरान गुरु

यह परखते हैं कि चेला कहीं मोह माया में तो नहीं भटक रहा है। सफल होने वालों का पांच संस्कार होता है जिससे उनके पंच परमेश्वर (चोटी गुरु, विभूति, गुरु, रुद्राक्ष गुरु, भगवा गुरु और लंगोटी गुरु) दीक्षा देते है। इससे पूर्व उन्हें सांसारिक जीवन में लौटने की तीन अवसर भी दिए जाते हैं । जो टिके रहते हैं उन्हें कुंभ मेले के दौरान पहले अवधूत बनाया जाता है और बीर्जाहवन संस्कार होता है। नागा संत के लिए गुरुओं के माध्यम से जारी की गई पर्ची रमता पंच के पास भेजी जाती है। रमता पांच उनके आचरण के आधार पर सहमति जताते हैं। फिर आचार्य महामंडलेश्वर के सामने आधा मुंडन होता है और आधी रात को गंगा में एक सौ आठ बार डुबकी लगाकर हवन होता है। इसके बाद भोर में चार बजे गंगा स्नान के बाद गुरु सन्यासी की चोटी काटते हैं फिर सन्यास की दीक्षा दी जाती है। दूधेश्वर पीठाधीश्वर महंत नारायण गिरी बताते हैं कि संन्यास से पूर्व सात पीढ़ी पिता, सात पीढ़ी माता और अपना पिंडदान करना होता है। राह चलते-फिरते कहीं प्राण निकल जाए तो क्षौर कर्म क्रिया व तेरहवीं आदि का नियम नहीं है। नागा संन्यासी बनने की प्रक्रिया में बारह से तेरह वर्ष लग जाते हैं जो बहुत तेज होते हैं, उन्हें दो या तीन वर्ष में भी दीक्षा पूरी कर दी जाती है। दीक्षा देने के दो से छः साल तक सन्यासी की हर गतिविधि पर पैनी नजर रखी जाती है। इस दौरान अखाड़े के नियमों का पालन करने पर उनकी क्षमता अनुसार पद का दायित्व सौंपा जाता है। यह भी सच है कि करीब पाँच प्रतिशत ऐसे भी संन्यासी है जो पुनः ग्रहस्थ जीवन में लौट जाते हैं। ये नागा संत प्रयाग में समय व्यतीत कर बाबा भोलेनाथ की नगरी काशी जाएंगे। वहां वह होली तक रुकेंगे। वहां शमशान की होली खेलने के पश्चात काशी से कूँच करेंगे। नारायण गिरी बताते हैं कि काशी के बाद ये नागा संत पूरे देश-विदेश में चले जाते हैं। कुछ हिमाचल में चले जाते हैं, कुछ नगरों व गांवों में चले जाते हैं। उनका निवास है हिमाचल की

गुफाएं, सुदूर, जंगल, आश्रम, गंगा जैसी पवित्र नदियों का तट। सहनशक्ति का अभ्यास करने के लिए नागा साधु किसी परिस्थिति की परवाह किए बिना नंगे पैर चलते हैं। दिवंगत साधु समाज में रहते हुए बिना सिला हुआ वस्त्र धारण करते हैं। ऐसा करना उनके नैतिकता से अलगाव का प्रतीक है उनकी दिनचर्या सुबह तीन बजे शुरू हो जाती है। खुद ही भोजन बनाकर एक समय करते हैं। फिर शाम चार बजे से त्रिसंध्या करते हुए रात्रि विश्राम करते हैं। खुद को ठंड हवा या गर्मी से बचाने के लिए भी अपने पूरे शरीर पर भस्म लगाते हैं। इसे पवित्र और शुद्ध माना जाता है। उनका समय सारणी अनोखा है। दिन में सोना और रात में ध्यान करना। 2025 की महाकुंभ में बारह हजार के करीब संन्यासियों को अलग-अलग अकाउंट में नागा संन्यासी बनाए जाने का अनुमान है। नागा बने एक तिहाई से ज्यादा सन्यासियों की आयु बीस से पैतीस साल की बीच है।

महाकुंभ में स्नान करने वाले लोगों में गरीब, अमीर, राजनीतिज्ञ, ज्ञानी उद्योगपति,साधु संत सभी लोग हैं परंतु अतिविशिष्ट लोगों की अगवानी करने में सबसे अधिक 17 बार स्नान उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया है।

राष्ट्रपति स्नान- 10 फरवरी 2025

उपराष्ट्रपति स्नान

राज्यपाल उत्तर प्रदेश स्नान- 16 फरवरी 2025

प्रधानमंत्री स्नान- 5 फरवरी 2025

विभिन्न धर्म गुरुओं, विशिष्ट व्यक्तियों ने स्नान कर महाकुंभ के लिए अपने विचार भी व्यक्त किए हैं। सभी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा किए गए प्रशासनिक सफलता एवं व्यवस्था की सराहना कीः

"श्रद्धा का यह विशाल समागम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अद्भुत एवं जीवंत प्रतीक है। महाकुंभ मानवता को एकता एवं आध्यात्मिकता का संदेश देता है। मां गंगा से प्रार्थना है कि वह सब पर अपनी कृपा बनाए रखें।"

द्रौपदी मुर्मू , राष्ट्रपति, भारत

धर्म और आध्यात्मिक की नगरी में जगह-जगह प्रवचन राम कथा हवन, पूजन यज्ञ हो रहा है। एक से बढ़कर एक जगतगुरु पिठाधीश्वर, विद्वान, कथाव्यास, श्रद्धालुओं को सत्संग प्रवचन से आध्यात्मिक सुख शांति प्रदान कर रहे हैं।

नारायण सेवा संस्थान उदयपुर की राम कथा में 15 साल के बाल कथावाचक पंडित शशि शेखर सेक्टर 18 अन्नपूर्णा मार्ग स्थित नारायण खालसा के शिविर में राम कथा सुनायेंगे। वे झांसी के मऊरानीपुर तहसील के निवासी है।

अगला कुंभ नासिक उसके बाद उज्जैन में होगा। 22 जनवरी को उत्तर प्रदेश सरकार मंत्रिमंडल की कैबिनेट मीटिंग अरैल में बनाए गए त्रिवेणी संकुल में हुई। 2019 में यह बैठक मेला प्राधिकरण कार्यालय में हुई थी। वीआईपी मूवमेंट के कारण आम जनता को परेशानी न हो इसलिए मीटिंग की व्यवस्था जगह में बदलाव की गई।

स्नान पर्वो पर श्रद्धालुओं का आगमन
पौष पूर्णिमा- 13 जनवरी, 1.65 करोड़
मकर संक्रांति- 14 फरवरी, 3.5 करोड़
मौनी अमावस्या- 29 जनवरी, 7.65 करोड़
बसंत पंचमी- 3 फरवरी, 2.57 करोड़
माघी पूर्णिमा- 12 फरवरी, 2.4 करोड़
शिवरात्रि - 26 फरवरी, 1.53 करोड़
कुल स्नान - 45 दिनों में 66.30 करोड़

रोज औसत स्नान - 1. 47 करोड़

माघी पूर्णिमा में स्नान, दान और यज्ञ का बड़ा महत्व है। मान्यता के अनुसार माघ पूर्णिमा पर प्रातःकाल स्नान करने से रोगों का नाश होता है एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह माघ का अंतिम स्नान है तथा कल्प वास समाप्त हो जाता है। इस दिन कुंभ संक्रांति भी है। सूर्य मकर राशि से निकलकर रात्रि 10:04 कर पर कुंभ राशि में प्रवेश करेगें।

आस्था की डुबकी लगाने के लिए प्रतिदिन देश-विदेश से लाखों श्रद्धालुओं के बीच कुछ शारीरिक रूप से अक्षम श्रद्धालु है जिनकी प्रबल इच्छा शक्ति, मां गंगा के प्रति उनकी आस्था व साहस के साथ सभी चुनौतियाँ बौनी साबित हो रही है। उन्हें यहां पहुंचने में जो परेशानियां हो रही है वह गंगा, जमुना व अदृश्य सरस्वती के संगम में पुण्य स्नान-दान करने से दूर हो जाती है। ऐसे ही अदम्य साहस के धनी मुरैना मध्य प्रदेश के रहने वाले पैसा बासठ वर्षीय पूर्व सैनिक शिवराज सिंह तोमर है। वे भारत की ओर से श्रीलंका भेजी गई शांति सेना में शामिल थे। उन्नाव के पचपन वर्षीय सत्येंद्र को बचपन में पोलियो हो गया था। सत्येंद्र परिवार के पांच सदस्यों के साथ संगम आए हैं। एक पैर से चलने वाले जोधपुर के राजस्थान की सखीराम सिर पर गठरी लादकर संगम पहुंची।

भारत एवं पाकिस्तान के बीच तल्खी किसी छिपी नहीं है। ऐसे माहौल में कराँची पाकिस्तान से पंचमुखी हनुमान मंदिर और श्मशान घाट के मुख्य सेवक रामनाथ मिश्रा चारसौ हिंदुओं और सिखों की अस्थियां लेकर भारत एक तर्पण करने आए हैं। अपनी मां कमला देवी पत्नी, बेटे देवेंद्र नाथ मिश्रा और दो बेटियों एवं एक भांजे के साथ सेक्टर चौबीस में प्रवास कर रहे हैं। अपने नौ साल के बेटे का जनेऊ संस्कार कराया, संगम में मुंडन कराया, पूरे परिवार के साथ स्नान किया। अस्थि कलश का पूजन अर्चन

कर 21 फरवरी को दिल्ली निगम बोध घाट पर करेंगे। इसके लिए संगम का पवित्र जल साथ ले जाएंगे। अस्थियों पर संगम जल चढ़ाने के बाद दिल्ली से हरिद्वार के लिए रथ यात्रा निकालेंगे और हरिद्वार के सतीघाट पर 22 फरवरी को 100 लीटर दूध की धारा में अस्थियों का विसर्जन होगा। पंचमुखी मंदिर पर कब्जा हो गया था, काफी संघर्ष के बाद खाली कराया गया। श्मशान घाट पर भी अस्थियों का घर बनाया गया जहां सात-आठ साल में जमा यह अस्थियां है। श्री मिश्र ने कहा 1500 सालों से उनके पूर्वज पंचमुखी हनुमान मंदिर की सेवा करते आ रहे हैं। उन्होंने कहा, कराँची की एक मात्र मिश्र परिवार है तथा मुख्यमंत्री की पहल पर उन्हें चार शहरों (प्रयागराज, काशी, मथुरा एवं अयोध्या) का वीजा मिला। योगी जी के प्रशंसक श्री मिश्र की इच्छा है कि योगी उनके बेटे को अपना शिष्य बना लें। उन्होंने कहा, योगी आदित्यनाथ पूरे नाथ संप्रदाय का नाम रोशन कर रहे हैं।

महाकुंभ मेले में अदाणी समूह के योगदान के लिए महंत, ज्ञानियों ने बहुत सराहना की। उनके प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा धार्मिक रसोई की व्यवस्था एवं निरंतर प्रसाद की तैयारी एवं वितरण के साथ गोल्फ कार्ट की व्यवस्था की गई है। इस्कॉन के संस्थापक ने भी मुफ्त प्रसाद की व्यवस्था की है।

माघी पूर्णिमा स्नान पर गोदान एवं तरह-तरह के दान दक्षिणा (तिल, चावल, दाल, घी, धोती, कंबल) का विशेष महत्व है। महाकुंभ की भीड़ की वजह से गाय-बछिया गंगा तट पर ले जाने की मनाही के कारण पुरोहितों ने श्रद्धालुओं को चांदी का गाय और बछिया के जरिए गोदान का संकल्प कराया। बुधवार बारह फरवरी को प्रयागराज में सांप्रदायिक सौहार्थ की मिशाल के तहत मुस्लिम समुदाय के लोगों ने स्नान करके लौट रहे हैं श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया।

महाकुंभ में विश्व रिकार्ड बनाने के अंतर्गत शुक्रवार नौ बजे सेक्टर चार स्थित राम घाट, सेक्टर सात स्थित भारद्वाज घाट और सेक्टर नौ स्थित मंगेश्वर घाट पर 300 से 500 लोग गंगा में एक साथ सफाई करेंगे। ऐसा विश्व रिकॉर्ड कहीं नहीं बना है। माघ पूर्णिमा के बाद फाल्गुन स्नान शुरू हुए। इसमें त्रिवेणी तट पर सांस्कृतिक पर्यावरण व वर्ड फेस्टिवल का संगम होगा। एक तरफ जहां त्रिवेणी, सरस्वती व यमुना पंडाल पर शुक्रवार चौदह फरवरी से सांस्कृतिक गतिविधियां प्रारंभ होंगी, तो वही सोलह फरवरी से जलवायु सम्मेलन होगा। इस दिन से ही त्रिवर्षीय बर्ड फेस्टिवल भी आयोजित किया जाएगा। बॉलीवुड सिंगर कैलाश खेर, मोहित चौहान, कविता सेठ, नवदीप बडाली सरीखे कलाकारों के सुगम संगीत को श्रोता सुनेंगे। 16 से 18 फरवरी तक बर्ड फेस्टिवल में लगभग 200 प्रतिभागियों के पक्षियों का महाकुंभ होगा। लुप्तप्राय इंडियन स्पीक स्मकीर, फ्लेमिंगो साइवेरियन क्रेन के दीदार होंगे। फोटोग्राफी, नारा लेखन, वाद- विवाद, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएं होंगी।

केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया गुरुवार को परिवार सहित पहुंचकर स्नान और पूजा की। अरैल घाट स्थित डाकघर में महाकुंभ 2025 पर आधारित तीन स्मारक डाक टिकट का विमोचन किया। संघ समाज की ओर से डिजाइन किए गए तीनों डाक टिकट महर्षि भारद्वाज आश्रम,स्नान और अक्षयवट पर आधारित है। महाकुंभ की समृद्ध परंपराओं को सम्मान देते हुए विशेष फिलैटेलिक सामग्री जिसमें पवित्र स्नान पर्वो पर विशेष आवरण (स्पेशल कवर) और विशेष मोहरें (कैंसलेशन), दिव्य भव्य और डिजिटल महाकुंभ थीम पर टिकट और प्रख्यात प्रयागराज का चित्र पोस्टकार्ड शामिल है। ये महाकुंभ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व को उजागर करते हैं।

मध्य प्रदेश के भिंड से मधुसूदन तिवारी सोमवार सत्रह फरवरी को 93 बर्षीय अपनी नानी को पीठ पर बैठाकर स्नान करने ले आए। महाकुंभ के केंद्रीय अस्पताल में आज के ही दिन दो बच्चियों की किलकारी गूंजी। फतेहपुर के प्रभादेवी ने एक बच्ची को जन्म दिया साथ ही कोरांव की रहने वाली माधुरी ने एक बच्ची को जन्म दिया। परिजनों की राय पर प्रभा की बच्ची का नाम वैदेही और माधुरी की बच्ची का नाम गौरी रखा।

महाकुंभ के सेक्टर आठ में यमराज धाम, तारानगर चुरु राजस्थान नाम से लगे शिविर में मृत्यु के देवता की पूजा होती है। धाम की माता संयोगिता ने बताया वह यमराज धाम की स्थापना करने जा रही है। इसके लिए संगम के पवित्र जल और मिट्टी लेने आई है जिसे मंदिरों की नींव में डाला जाएगा। धरती के अंदर दस हजार वर्ग फीट में मंदिर बनेगा। अकाल मृत्यु की संख्या कम करने के उद्देश्य से इस मंदिर का निर्माण करवाने जा रही है।

19 फरवरी को श्रद्धालुओं ने देशभक्ति का जज्बा दिखाया और तिरंगा लहराकर लोगों में जोश करने का प्रयास किया।

महाकुंभ में अब तक नेपाल (मिथिला नगरी) से आए पचास लाख लोगों ने संगम में आस्था की डुबकी लगाई। यहां बड़े हनुमान मंदिर के लिए विशेष रूप से भगवान राम की ससुराल से पवित्र अक्षत और सामान लेकर राम की ससुराल से लोग पहुंचे। नेपाल के श्रद्धालुओं ने संगम की रेत और गंगा की जल को सबसे अमूल्य धरोहर मानते हुए माथे पर लगाया और इसे अपने साथ घर ले गए।

संतों ने सनातन धर्म और महाकुंभ की पवित्रता का अपमान बताते हुए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा महाकुंभ को मृत्यु कुंभ कहे जाने पर तीखी प्रतिक्रिया दी। श्री पंचायती अखाड़ा महा निर्वाणी के राष्ट्रीय सचिव श्री महंत

जमुना पुरी ने कहा, ममता बनर्जी जिस जिम्मेदार पद पर हैं, वहां ऐसा बयान शोभा नहीं देता है। पंच दशनाम आवाहन अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अरुण गिरी ने बयान की आलोचना करते हुए कहा, बंगाल हिंदू सनातनियों के लिए मृत्यु प्रदेश बनता जा रहा है। गोवर्धन मठ पुरी के स्वामी अघोक्षाजानंद ने कहा, महाकुंभ को मौत का कुंभ कहना अत्यंत निंदनीय है। राजेंद्र दास अध्यक्ष निर्मोहीनी अखाड़ा ने कहा, ममता बनर्जी महाकुंभ का आकलन नहीं कर सकती क्योंकि उन्होंने हमेशा सनातन और उसके प्रतिकों का अपमान किया है। महंत राजू दास अयोध्या हनुमानगढ़ी ने कहा, ममता बनर्जी का बयान दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्हें अपने शब्दों के लिए माफी मांगना चाहिए। बयान से ठेंस पहुंची है।

बजट सत्र 2025-26 के शुभारंभ पर अपने अभिभाषण में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल आनंदी वेन पटेल ने कहा, उनकी सरकार को इस वर्ष दिव्य, भव्य महाकुंभ के आयोजन का सौभाग्य मिला है। महाकुंभ 2025 में स्वच्छता, सुरक्षा, सुव्यवस्था के नए मानक गढ़े गए हैं। आस्था एवं आधुनिकता का अद्भुत संगम के साथ-साथ अपराध मुक्त और भययुक्त वातावरण देखकर रामराज्य की संकल्पना को साकार किया है। एक भारत श्रेष्ठ भारत की संकल्पना साकार हो रही है।

मान्यता है कि जो माघ महीने की समाप्ति के तीसरे दिन संगम की पुण्य डुबकी लगाता है, उसे एक महीने के कल्पवास का फल मिलता है। शायद यही कारण है शनिवार दिन 15/02/25 जो हुजूम मेला क्षेत्र में शुरू हुआ वह शाम तक नहीं थमा। लोकसभा अध्यक्ष ने आस्था की डुबकी लगाई और देशवासियों के लिए सुख समृद्धि की कामना की।

महाकुंभ नगर में जलवायु परिवर्तन विभाग व गैर सरकारी संगठन आई-फॉरेस्ट की ओर से आयोजित कुंभ की आस्था और जलवायु, परिवर्तन सम्मेलन को योगी आदित्यनाथ संबोधित कर रहे थे। महाकुंभ के जरिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने का संदेश देते हुए कहा कि कार्बन उत्सर्जन के कारण भी जलवायु परिवर्तन है। जलवायु परिवर्तन के कारण धरती माता की धमनियों के रूप में जिन नदियों को अविरल बहना चाहिए, वह सूखती जा रही है।

महाकुंभ के अंतिम स्नान पर्व से पहले गंगा के जल की गुणवत्ता परखने के लिए प्रमुख सचिव नगर विकास, अमृत अभिजात तकनीक संस्थानों, आई आई टी मद्रास और एम एम एन आईटी के विशेषज्ञों के साथ अचानक प्रयागराज पहुंचे। फाफामऊ एसटीपी तथा सलोरी एसटीपी के पास जल शोधित किए जा रहे हैं। पानी के नमूने लिए प्रशिक्षण ने दोनों जगह शोधित पानी में बीओडी, सीओडी, पीएच, टीएसएस मानक रूप में मिले। एनजीटी में दोनों संस्थानों की रिपोर्ट भिन्न मिली। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की रिपोर्ट पर एनजीटी नाराजगी जताई।

महाकुंभ के अवसर पर अंतर्राष्ट्रीय नृत्य और संगीत महोत्सव के 10वें संस्करण का आयोजन 22-23 फरवरी को प्रयागराज में किया गया। भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के सहयोग से आयोजित इस महोत्सव को बारह देशों के 142 अंतर्राष्ट्रीय कलाकारों की प्रस्तुतियाँ दी। दक्षिण अफ्रीका, मंगोलिया, वियतनाम, फिजी, मलेशिया, रवांड़ा, बांग्लादेश, मालदीव और फिलिपींस के कलाकार शामिल हुए।

शुक्रवार 14 फरवरी को 50 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के स्नान पर बधाई देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत की कुल जनसंख्या में 110 करोड़ नागरिक सनातन धर्मावलंबी है और

उनमें से 50 करोड़ से अधिक द्वारा संगम स्नान उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों की विशेषताएं अभिव्यक्ति महान सनातन के प्रति दृढ़ होती आस्था का परिचायक है। मानवता के इस महोत्सव के सकुशल आयोजन में सहभागी महाकुंभ मेला प्रशासन, स्थानीय प्रशासन, पुलिस प्रशासन, स्वच्छता कर्मियों, स्वयंसेवी संगठनों, धार्मिक संस्थाओं, नविकों तथा महाकुंभ से जुड़े केंद्र व प्रदेश सरकार के सभी विभागों को हृदय से साधुवाद तथा प्रदेश वासियों को बधाई। भगवान तीर्थराज प्रयागराज सभी की मनोकामना पूर्ण करें।

2019 से कुंभ मेले का विश्व रिकॉर्ड बनाने की रवायत शुरू हुई। 27 फरवरी 2019 को 10 हजार सफाई कर्मी एक साथ सड़क साफकर विश्व रिकॉर्ड बनाया। 28 फरवरी को एक साथ 500 शटल बस चलाकर कीर्तिमान बनाया तथा एक मार्च को सात हजार से अधिक लोगों को हैंड प्रिंटिंग कर गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 2025 में भी गिनीज बुक के प्रतिनिधि मौजूद रहे। प्रक्रिया को संपन्न कराने के लिए गवाह के रूप में मोतीलाल नेहरू राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर एवं पर्यावरणविद डॉक्टर नेकराम रावल मौजूद थे। रिकॉर्ड का उद्देश्य न केवल विश्व कीर्तिमान बनाना है बल्कि महाकुंभ के समर्पण को भी उजागर करना है। 14 फरवरी 2025 को 300 से अधिक सफाई कर्मी एक साफ गंगा सफाई का नया कीर्तिमान बनाया। सोमवार को 21000 कर्मचारी स्वच्छता अभियान में शामिल रहे। 27 फरवरी को प्रमाण पत्र जारी हुई।

मध्य प्रदेश के भिंड से मधुसूदन तिवारी को 93 वर्षीय अपनी नानी को पीठ पर बैठाकर महाकुंभ स्नान करने आए। महाकुंभ में पुण्य अर्जित करने की इच्छा के लिए गुजरात की 73 वर्षीय महेंद्र पटेल 67 वर्षी की पत्नी के साथ बाइक से 15 दिनों

में प्रयागराज पहुंचे। 5 फरवरी को गुजरात से रवाना होकर उन्होंने अमृतसर स्वर्ण मंदिर, जम्मू के माता वैष्णो देवी मंदिर, हरिद्वार मथुरा वृंदावन अयोध्या और काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन किय़े। 26 फरवरी को प्रयागराज पहुंचे।

प्रदेश सरकार की पहल पर उत्तर प्रदेश के सूबे के सभी जेल में कुंभ कलश स्थापना के लिए विशेष वाहक द्वारा प्रयागराज संगम से जल लाया गया। कारागार मंत्री ने गंगाजल और कलश की विधिवत पूजा की। इसके बाद जेल के सभी बंदियों ने संगम जल से महास्थान किया।

गंगाजल को लेकर हाल ही में आई केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की एक रिपोर्ट को वैज्ञानिकों ने चुनौती दी है। शुक्रवार को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान स्कूल में सहायक प्रोफेसर डॉक्टर अमित कुमार मिश्रा, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर उमेश कुमार सिंह तथा दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर आर के रंजन ने दावा किया कि मौजूदा रिपोर्ट के आधार पर भी गंगाजल क्षारीय है। जल में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा के आधार पर इसे स्नान योग्य ही माना जाएगा।

मां गंगा,यमुना और अदृश्य सरस्वती के इस आध्यात्मिक संगम के कारण पिछले डेढ़ महीने से प्रयागराज का नाम पूरी दुनियाँ में छाया हुआ है। लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि इस संगम के अलावा दो और संगम को प्रयागराज अपनी भौगोलिक सीमा में समेटे है। क्षेत्रफल के अनुसार उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े जिले में से एक प्रयागराज में मैदान और पहाड़ का संगम देखने को मिलता है। जिले के यमुना पार इलाके में शंकरगढ़ से विंध्य की पर्वतमाला शुरू हो जाती है, जबकि दूसरी ओर गंगा का मैदानी इलाका पड़ता है। पूर्वी और पश्चिमी भारत को अलग-अलग करने वाला 82.5 डिग्री देशांतर मिर्जापुर में लगता है जो

की प्रयागराज अंचल में ही पड़ता है। यहीं से भारत का मानक समय लिया जाता है। पहले नैनी से मानक समय का निर्धारण होता था बाद में और सटीक अध्ययन के बाद मिर्जापुर से निर्धारण होने लगा। तीसरा संगम मानसून का होता है। अरब सागर और बंगाल की खाड़ी से उठने वाले मानसून का संगम मध्य भारत के जिस हिस्से में होता है, उनमें प्रयागराज भी शामिल है। यही कारण है की बरसात के मौसम में उठने वाले बादलों के यहां आपस में टकराने के कारण बिजली गिरने से हर साल काफी मौतें होती है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के के बनर्जी वायुमंडलीय एवं समुद्र विज्ञान केंद्र के प्रोफेसर सुनीता द्विवेदी भी यह मानते हैं कि प्रयागराज की विशिष्ट भौगोलिक रचना के कारण यहां प्रकृति के तीन संगम को देखा जा सकता है। भारतीय भू-आकृतिक संस्थान के महासचिव और नेशनल एसोसिएशन ऑफ ज्योग्राफर्स ऑफ इंडिया के उपाध्यक्ष प्रोफेसर ए आर सिद्दीकी ने तीनों संगम प्रयागराज में होने की पुष्टि की।

भारतीय रेल ने दिनांक 22 फरवरी तक श्रद्धालुओं के लिए 13666 ट्रेन चलाई गई। इसमें तीस फीसदी ट्रेन यानी 6800 उत्तर प्रदेश के शहरों और प्रयागराज के बीच दौड़ रही है।

डॉक्टर पंडित दिवाकर त्रिपाठी पूर्वांचली के अनुसार ग्रहीय योग से महाशिवरात्रि पर्व को बुधादित्य योग के साथ अपने पुत्र शनि देव की राशि में विद्यमान रहेंगे। स्वगृही शनि शश नामक पंच महापुरुष राजयोग पर्व की महत्ता को बढ़ाने वाला हैं। यह पर्व चतुर्दशी तिथि 26 फरवरी बुधवार को सुबह 9:19 से शुरू हो जाएगी जो गुरुवार 29 फरवरी को सुबह 8:00 तक रहेगी।

“24 घंटे जिस सेवा भाव से एकता के महाकुंभ में स्वच्छता के कार्य को संभाल रहे हैं, उन सभी स्वच्छता के साथियों को मेरा नमन है।“ **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

"विधानसभा में समाजवादी पार्टी को खरी-खोटी सुनाते हुए योगी ने कहा, किसी ने सच कहा है महाकुंभ में जिसने जो तलाशा उसे वह मिला है। इसमें गिद्धों को लाश मिली, सुअरों को गंदगी, संवेदनशील लोगों को रिश्तों की खुबसूरत तस्वीर, आस्थावान को पुण्य, सज्जनों को सज्जनता, गरीबों को रोजगार, अमीरों को धंधा, श्रद्धालुओं को साफ व्यवस्था, सद्भावना वालों को जाति रहित व्यवस्था, भक्तों को भगवान मिले।" **योगी आदित्यनाथ, मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश**

महाकुंभ 2025 मंगलवार 25 फरवरी को लगातार 8 घंटे तक 10109 युवाओं ने हैंड प्रिंटिंग (हाथ की छाप) देकर विश्व रिकॉर्ड बनाया। कुंभ 2019 में 7660 लोगों ने हैंड प्रिंटिंग देकर विश्व कीर्तिमान बनाया था। दो कुंभ मेला 2019 एवं 2025 के दौरान अब तक छह विश्व रिकॉर्ड बना चुके हैं। सातवां रिकॉर्ड 27 फरवरी को 770 बसों का संचालन कर बनाया जाएगा।

मेला क्षेत्र के फायर स्टेशन मुख्यालय के सामने फायर ऑफिसर संजीव कुमार सिंह को अपनी सहपाठी रश्मि गुप्ता से मुलाकात हुई। वर्ष 1988 के कॉलेज के दिन की यादें ताजा हो गई। रश्मि गुप्ता केकेसी डिग्री कॉलेज, लखनऊ में शिक्षिका है।

महाकुंभ समापनः महाशिवरात्रि पर छठवें स्नान पर्व के साथ सुबह सात बजे संगम नोज, अरैल, रामघाट, संगम अपर मार्ग पर हेलीकॉप्टर से फूलों की बारिश शुरू हुई। कई चक्र में पुष्प वर्षा से श्रद्धालु आनंदित होते रहे।

मेला क्षेत्र में अचानक लाउडस्पीकर से बताया गया कि महाकुंभ के अंतिम स्नान पर एयर शो होगा। बुधवार 26 फरवरी दोपहर एक बजे के बाद सेना के विमान आकाश में आए और फ्लाई पास्ट के जरिए श्रद्धालुओं का अभिनंदन किया। विमान से त्रिशूल की आकृति धुए से बनाई। श्रद्धालुओं ने खूब तालियां

बजाई। सीएम योगी तड़के चार बजे से ही कंट्रोल रूम से निगरानी करते रहे।

महाकुंभ का आयोजन विश्व इतिहास में अभूतपूर्व अविस्मरणीय रहेगा। गणमान्य जनों, देश-विदेश से पधारे सभी श्रद्धालुओं तथा कल्पवासियों का हार्दिक अभिनंदन एवं आभार।

योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

प्रयागराज पहुंचने के बाद मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अरैल घाट पर स्वच्छता अभियान शुरू किया तथा डिप्टी सीएम के साथ झाड़ू लगाया, कचरा उठाया। श्रद्धालुओं द्वारा छोड़े गए वस्त्र को उठाकर लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। मां गंगा की पूजा अर्चना की और कृतज्ञता स्थापित किया। अरैल के गंगा संकूल में सफाई, स्वास्थ्य कर्मियों का सम्मान किया। न्यूनतम वेतन न पाने वाले कर्मियों को 16000 मानदेय का ऐलान किया। सहकर्मियों के साथ बैठकर भोजन किया। सफाई एवं स्वास्थ्य कर्मियों को बीमा प्रमाण पत्र भी दिया। आयुष्मान या जनआरोग्य योजना से 5 लाख के बीमा की घोषणा की। नाविकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया, कहा कि नाविकों का रजिस्ट्रेशन कर नाव का पैसा तथा पाँच लाख तक का बीमा देंगे। शाम को गंगा पंडाल में पुलिसकर्मियों से कहा, जितने भी सुरक्षाकर्मी ने ड्यूटी कि उन्हें पुलिस सेवा मेडल और प्रशस्तिपत्र के अलावा अफसर से पुलिसकर्मी तक को एक सप्ताह की चरण वार छुट्टी मिलेगी। बड़े हनुमान मंदिर में भी दर्शन किए तथा नेत्र कुंभ में सेवा के लिए डॉक्टर एवं आयोजकों को बधाई दी।

तीन गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रमाण पत्र भेंट किए गए। एक सर्वाधिक 329 सफाई कर्मियों द्वारा एक समय में नदी सफाई। दो सर्वाधिक 10,000 कर्मियों ने सफाई की, तीन आठ घंटे तक 10,102 लोगों ने हैंड प्रिंट बनाया।

"यह यशस्वी प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन का ही सुफल है। "एकता, समता, समरसता का महायज्ञ" प्रयागराज महाकुंभ 2025 भव्यता के साथ सुरक्षा- स्वच्छता-सुव्यवस्था के नवीन मानक गढ़कर संपन्न हो गया है। आपका मार्गदर्शन एवं शुभेच्छाएँ सभी को सदैव नई ऊर्जा प्रदान करती है, हार्दिक आभार प्रधानमंत्री जी, हर हर गंगे, भगवान बेनी माधव जी की जय।"

योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव महाकुंभ के समापन पर अफसरों और कर्मचारियों को धन्यवाद देने गुरुवार प्रयागराज आए। उन्होंने कहा, कुंभ 2019 में 4000 स्पेशल ट्रेनें चलाई गई थी। श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए 2005 में 17152 हजार स्पेशल ट्रेन चलाई गई। इससे 1667 विशेष ट्रेन तथा 9485 नियमित ट्रेनें शामिल थी। प्रयागराज के नौ अलग-अलग स्टेशनों से 4.25 करोड़ यात्रियों की आवागमन का प्रबंधन किया गया। 1186 सीसी टीवी कैमरे लगे तथा 554 टिकट घर और क्यूआर आधारित टिकटिंग की सुविधा दी। तीन लाख तीर्थयात्रियों को चिकित्सा सहायता प्रदान की।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा, विश्व का सबसे सुव्यवस्थित आयोजन रहा।

इको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड की ओर से आयोजित फैमट्रिप पर यूपी आए ब्रिटेन के ट्रैवल राइटरों के महाकुंभ का अनुभव प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति मुकेश कुमार मेश्राम के साथ गुरुवार को मुलाकात में साझा किया। कहा महाकुंभ भ्रमण, बोटिंग और आरती में हिस्सा लेकर आध्यात्मिक शांति मिली।

महाकुंभ मेला समाप्त हो गया। मेला में चोरी, छिनैती व मारपीट के अलावा साइबर ठगों के भी मामले सामने आए। सोशल मीडिया एकाउंटों के खिलाफ भी एफआईआर दर्ज हुई। अब प्रयागराज कमिश्नरेट की पुलिस कुल 789 मामलों की जांच

करेगी। संगम की रेती पर महाशिवरात्रि के आखिरी स्नान के साथ महाकुंभ संपन्न हुआ। इस दौरान दुनिया भर से श्रद्धालुओं ने सनातन धर्म के सबसे बड़े आयोजन को अपनी आंखों से देखा। साथ ही संगम की रज और त्रिवेणी का जल ले गए। दुनिया के 143 देश में पवित्र अक्षयवट के पत्ते पहुंचे। प्रयागराज मेला प्राधिकरण की पहल पर 200 विशेष बाक्स तैयार किए गए। जिसमें अक्षयवट के पत्ते एक कलश में संगम का जल भर कर रखा गया। 73 देश के राजनायकों एवं 70 देश से आये अतिथियों को यह बॉक्स भेंट की गई।

शोधः यह जानकर सभी हैरान है कि करोड़ लोगों को संगम में डुबकी लगाने का जो सौभाग्य मिला, उसके साथ महाकुंभ काल में आसमानी सितारों का ऐसा अनूठा एवं अभूतपूर्व गठबंधन बना, जिसने दुनियाँ के बड़े भूभाग के लोगों के जीवन पर सकारात्मक असर डाला। लोगों को अधिक खुशी का एहसास हुआ तथा बीमारी का कम असर पड़ा। चिकित्सकों के दल द्वारा शोध किया गया। दल में मुरादाबाद के डॉक्टर आर वी सिंह, लखनऊ के डॉक्टर गिजाल फातिमा, नोएडा के डॉक्टर संजय महाजन, ईरान के डॉक्टर हेकमत लेबनान के डॉक्टर गाजी हालाबी थे। महाकुंभ काल में दुनियाँ के अलग-अलग हिस्सों में सौ वयस्कों की सेहत पर अध्ययन किया। नेतृत्वकर्ता डॉक्टर आरवी सिंह ने बताया कि महाकुंभ की अवधि में खगोलीय निकायों सूर्य चंद्रमा, गुरु, शुक्र, शनि के बने अभूतपूर्व गठबंधन का लोगों की सेहत पर असर देखने के लिए शोध किया गया। शोध में पाया कि महाकुंभ के दौरान लोगों की एंजायटी, तनाव, गुस्सा, चिड़चिड़ापन कम होने के साथ ब्लड प्रेशर, हार्ट की बीमारी के खतरे में कमी दर्ज की गई।

डीजीपी प्रशांत कुमार ने समापन के मौके पर कहा, नेवी के दौरान सुरक्षा चुनौती नहीं बल्कि एक अवसर था। इस अवसर पर यूपी पुलिस ने अनुकारणीय प्रदर्शन किया जिसे आने वाले समय में याद रखा जाएगा। मेला शुरु होने से पहले अफसरों एवं कर्मचारियों को कई तरह की ट्रेनिंग दी गई। महाकुंभ बिना किसी त्रासदी के संपन्न हुआ जिसकी चर्चा भारत ही नहीं विदेशी में भी की गई। रेलवे पुलिस और आर पी एफ के साथ समन्वय बनाकर काम किया। मेला क्षेत्र में विछ्डे तीस हजार लोगों को अपने परिजनों से मिलवाया गया।

कुम्भ के किस्से

(महाकुम्भ की कुछ अनूठी कहानियां)

प्रयाग कुम्भ, 1942 में श्रद्धालुओं के आने पर प्रतिबंध की बात बहुत कम लोगों को मालूम है। शायद कुछ शोधार्थी ही जानते हों कि करीब 85 साल पहले 19वीं शताब्दी में भी यह कुम्भ प्रतिबंधित था। दोनों मौकों पर लगी रोक में अंतर था। 1942 में भीड़ को रोकने का अंग्रेजों के पास अपना तर्क था। वह द्वितीय विश्व युद्ध का समय था। मेले को लेकर अफवाह थी कि मेले पर जापान बम गिरा सकता है। इलाहाबाद (अब प्रयागराज) जाने वाली ट्रेनों सहित आवागमन के साधनों की तलाशी ली जाने लगी। परिवहन साधनों अथवा उनमें सवार लोगों को वापस भेजने का सिलसिला चला। हालांकि, कई इतिहासकार 1942 के कुम्भ पर प्रतिबंध का दूसरा कारण बताते हैं। उनके मुताबिक, कुम्भ स्वाधीनता सेनानियों के एकत्र होने के केंद्र बन गए थे। वैसे भी, वह वर्ष भारत छोड़ो आंदोलन का था। अंग्रेजों को लगा कि प्रयाग के कुम्भ मेले में आए लोगों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। फिर भी उस बार का कुम्भ संपन्न हुआ। कम संख्या में ही सही, लोग पहुंचे। इसके पहले 19वीं शताब्दी में जिस कुम्भ पर प्रतिबंध का ब्योरा मिलता है, वह 1858 का था। उसमें संतों के प्रमुख संगठन अखाड़े तक नहीं आ सके।

प्रथम स्वाधीनता संग्राम 1857 में तत्कालीन इलाहाबाद के कई स्थानों पर संगठित संग्राम अथवा विद्रोह हुए थे। वहां मौलाना लियाकत अली के नेतृत्व में विद्रोह इतिहास में दर्ज है।

फिर शहर के चौक क्षेत्र में जिस स्थान पर कई विद्रोहियों को फांसी दी गई थी, वह स्थान भी चिह्नित कर सुरक्षित किया गया है। इसी तरह जहां स्वरूप रानी नेहरू चिकित्सालय है, वहां जेल हुआ करती थी। कहते हैं कि अस्पताल परिसर में आज जिस स्थान पर पोस्टमार्टम हाउस है, वहां कई क्रांतिकारियों को फांसी दी गई।

बहरहाल, बात 1858 के कुम्भकी। कुम्भ के पहले जून 1857 में इलाहाबाद के मिशन कंपाउंड को आग के हवाले कर दिया गया था। तब अमेरिकन प्रेसबिटेरियन चर्च मिशन भी जला दिया गया था। 'द इंडियन चर्च ड्यूरिंग ग्रेट रिबेलियन' के लेखक रेव.एम.ए.शेरिंग के मुताबिक इससे मिशन की गतिविधियां बंद हो गई। बाद में मिशन के एक प्रचारक जेम्स ओवेन जनवरी, 1958 में इलाहाबाद लौटे। उन्होंने जो देखा, उसका वर्णन रेव. जेम्स मोफेट की पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ ए डेडिकेटेड लाइफ' में देखा जा सकता है। किले के आसपास और मेला क्षेत्र में तीर्थ पुरोहितों के नहीं, सेना के तंबू लगे थे। शहर में भी सेना और प्रशासनिक अधिकारियों के राउंड जारी थे। मेले की ओर स्थानीय लोगों को भी नहीं आने दिया जा रहा था। धार्मिक परंपरा का निर्वाह ऐसे किया गया कि एक-दो की संख्या में तीर्थ पुरोहित संगम की ओर जाकर अपने लोटों में संगम का जल भरकर ले आते। उस जल को प्रयागवाल (तीर्थ पुरोहित) के प्रसिद्ध मुहल्ले

दारागंज में लाकर गंगा में मिला देते। उस कुम्भ के दौरान उसी जल से स्थानीय लोगों ने धार्मिक स्नान किया था।

हर बारहवें साल कुम्भ लगता है, यह जानकारी सदैव सही नहीं होती। कभी-कभी इसे पहले भी सम्पन्न कराना पड़ता है। इसके लिए याद करना होगा कि 1977 का प्रयाग कुम्भ 11वें वर्ष ही आयोजित किया गया था। उसके पहले का कुम्म 1966 में हुआ था। अभी 2021 का हरिद्वार कुम्भ भी 11वें साल में लगा। यह किसी प्रशासनिक इकाई अथवा सरकारों की सुविधा से नहीं किया गया। इसके लिए ज्योतिषीय गणना कारण बनी। प्रयाग के मामले में संतों के बीच इस पर विवाद भी हुआ है।

धार्मिक आस्थाएं आम तौर पर 12 साल वाले तथ्य को मान्यता देती हैं। एक कथा तो कहती है कि इंद्र पुत्र जयंत को अमृत कलश लेकर स्वर्ग पहुंचने में 12 दिन लगे। देवताओं का एक दिन सांसारिक एक साल के बराबर हुआ करता है। इसलिए देवताओं के 12 दिन 12 साल के बराबर हुए। इसी मान्यता के आधार पर कुम्भ भी 12वें साल हुआ करते हैं। प्रयाग के साथ अन्य तीन स्थानों के कुम्भ भी 12 वें साल ही होते हैं। हाँ क्रम कुछ इस तरह का है कि एक स्थान के कुम्भ से दूसरे के बीच का अंतर तीन साल का होता है। फिर क्या है वह कारण, जिसके आधार पर कुम्भ 12 की जगह 11 में साल ही आयोजित करने पड़े ?

पहले जानकारी प्रयाग कुम्भ के बारे में, 1966 के कुम्भ के बाद अगला कुम्भ 1977 में ही लगा। कारण बताया गया कि उसी साल बृहस्पति के मेष राशि में प्रविष्ट होने और सूर्य तथा चंद्र के मकर राशि में होने के कारण यह आवश्यक है। आखिर

प्रयाग कुम्भ का आधार भी तो यही ज्योतिषीय गणना है। इस पर कोई दिक्कत नहीं हुई। इसके विपरीत ठीक पहले कुंभ दो साल लगातार हुए। वर्ष 1966 के पहले 1965 के मेले को भी कुम्भ कहा गया। अद्भुत यह है कि इसका कारण भी ज्योतिषीय हीं बताया गया था। इसका वर्णन श्री करपात्रस्वामी और श्री मीठालाल ओझा की पुस्तक 'धर्मकृत्योपयोगितिभ्यादिनिर्णयः कुम्मपर्व निर्णयश्च' के परिशिष्ट में मिलता है। हरिद्वार से प्रकाशित पत्रिका 'परमार्थ' के जनवरी-फरवरी, 1989 के अंक में इसे डॉ. सुरेशचंद्र श्रीवास्तव भी स्पष्ट करते हैं। असल में, प्रयाग कुम्भ के मामले में मुख्य रूप से मकरस्थ सूर्य का ध्यान रखा जाता है। कभी-कभी मेष और वृष, दोनों में ही बृहस्पति के संचरण को इसके आयोजन का आधार मान लिया जाता है। इसी कारण 1965 और 1966 में कुम्भ सम्पन्न हुए।

हरिद्वार के मामले में यह स्थिति अधिक स्पष्ट रही है। वहां कुम्म का आयोजन तब होता है जब सूर्य मेष में और गुरु बृहस्पति कुम्भराशि में स्थित होते हैं। अभी हरिद्वार के 2021 वाले कुम्भ में यही स्थिति बनी थी। इसी कारण वहां 11 वें वर्ष ही इसका आयोजन होता है। यह काल गणना सटीक है और 83 साल के अंतराल पर ऐसा होता है। तभी हरिद्वार में 2021 से एक बार पहले भी 1938 में 11 साल पर ही कुम्म का आयोजन किया गया था।

तथ्य रोचक है और रोमांचक भी। लड़ाई हथियारों के सहारे हो और उसमें साधु संन्यासी जीत जाएं। यह जानकर आज अचंभा हो सकता है। इतिहास गवाह है कि ऐसा हुआ और यह लड़ाई प्रयागराज (तब के इलाहाबाद) में हुई थी। बात वर्ष 1751

के कुंभ की है। जैसा कहा जाता है कि आधुनिक इतिहास के दस्तावेजों में कुंभ के बहुत पुराने रिकॉर्ड नहीं मिलते। फिर भी ईसाई धर्म प्रचारकों के विवरण में कुछ समय के अंतराल पर प्रयाग के संगम तट पर लगने वाले मेले में नागा संन्यासियों के आने की बात कही गयी है। ये संन्यासी आज भी हर वर्ष नहीं आकर कुंभ में ही आते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि 1751 का साल भी प्रयाग कुंभ का ही था। तो उस साल अवध के अफगानों ने इलाहाबाद में भी लूटपाट और स्थानीय लोगों पर अत्याचार शुरू किए। मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय के दौर में इलाहाबाद की ऐतिहासिक संधि तो 1765 में हुई। समझौते के तहत पूरे बंगाल, बिहार और उड़ीसा (ओडिशा) की दीवानी (राजस्व व्यवस्था) ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दी गयी थी। उन्हीं के तहत अवध की व्यवस्था भी बनी और व्यवस्थित राजस्व वसूली का प्रबंधन हुआ। इस संधि के पहले जिस कुंभ की बात की जा रही है, तब तो आक्रमणकारी लूटपाट को ही अपना मकसद मानते रहे।

उस साल भी संगम तट पर मेला लगा था। साधु-संन्यासियों से लेकर देशभर से आए श्रद्धालु तक धर्म-कार्य में व्यस्त थे। इधर शहर में मुहम्मद बंगश की सेना ने आक्रमण कर दिया। धनवान लूटे जा रहे थे। अन्य लोगों पर तरह-तरह के जुल्म ढाये जा रहे थे। 'जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' के एक अंक (1879) और विलियम इरविन की पुस्तक 'ए बंगश नवाब ऑफ फर्रुखाबाद, ए क्रॉनिकल' में इसके विवरण देखे जा सकते हैं। यदुनाथ सरकार ने भी इस घटना का उल्लेख किया है। इतिहासकार और इलाहाबाद में अध्यक्ष-प्रोफेसर रहे डॉ. हेरम्ब चतुर्वेदी आज बताते हैं कि अवध के नवाब के सहयोगी होने के कारण स्थानीय बघेल राजा और पड़ोसी जिले के एक राजा ने

तब मुहम्मद बंगश का ही साथ दिया था। बहरहाल, इतिहास के सभी विवरण नागा साधुओं की वीरता और उनके युद्ध कौशल को उत्कृष्ट बताते हैं। विलियम इरविन ने तो स्पष्ट तौर पर लिखा है कि उस समय पुराने शहर और किले के बीच नागा साधुओं की छावनी लगी हुई थी। इरविन के मुताबिक महंत राजेंद्र गिरि के नेतृत्व में करीब पांच हजार 'नग्न फकीरों' ने अफगान सैनिकों पर हमला बोल दिया। स्पष्टतया 'नग्न साधु' प्रसिद्ध नागा ही थे, जिन्हें विदेशी लेखक 'फकीर' की संज्ञा देते हैं। दोनों पक्षों के बीच जगह-जगह संघर्ष हुए। साधुओं के सामने अफगान आक्रमणकारियों के पैर उखड़ने लगे। भागते हुए उन्होंने गंगा तट के सलोरी आदि कुछ जगहों पर आग भी लगा दी। कुल मिलाकार यह गाथा संस्कृति रक्षा के लिए हमारे नागा संन्यासियों के सैनिक दायित्व पूरा करने की अनोखी दास्तान है।

वह जगह देखना कितनी उत्सुकता भरा हो सकता है, जहां भूरे और हल्के हरे रंग की दो जल धाराएं अलग-अलग जगह से आकर मिलती हैं। इसे खुली आंखों से देखा जा सकता है। इस मिलन को कुछ दूर तक पानी में बनती रेखा स्पष्ट कर देती है। यह मिलन गंगा और यमुना का है। ऐसा स्थान प्रयागराज है, जहां 12 वर्ष बाद फिर से कुम्भ मेला आधिकारिक तौर पर 13 जनवरी से प्रारंभ हो गया। पौराणिक मान्यता यह भी है कि यहां गंगा-यमुना के मिलन में सरवस्ती नदी भी शामिल है। यह तीसरी नदी दिखाई नहीं देती। कहते हैं कि वह जन आस्था में है। इसलिए उसे अंतःसलिला भी कहा गया है। कई तरह के शोध अब सरस्वती को भी कभी मूर्तिमान रही नदी के तौर पर निरूपित करते हैं। बहरहाल, जहां तीन नदियां मिलती हों, वहां आस्थावान लोगों का स्नान अति पावन कहा गया है। अब यह सवाल महत्वपूर्ण है कि करोड़ों मनुष्यों के साथ इन्हीं दिनों लाखों

सफेद पक्षी भी क्यों प्रयागराज में गंगा-यमुना के जल से अठखेलियां करते दिखाई देते हैं। प्रयाग कुम्भ आम तौर पर जनवरी-फरवरी में हुआ करता है। ये पक्षी दिसंबर से मार्च तक गंगा-यमुना के ऊपर मंडराते दिखाई देते हैं। ये साइबेरियाई पक्षी लगभग चार हजार किलोमीटर की दूरी तय कर आते हैं। पक्षियों का यह प्रवास मौसम के कारण होता है, पर प्रयाग का यह दृश्य अद्भुत होता है।

जीवमात्र के लिए आकर्षण का ऐसा अनोखा केंद्र प्रयाग चार कुम्भ स्थलों में से एक है। हर तीर्थ का अपना महत्व है। समुद्र मंथन की कथा के अनुसार मंथन से निकले अमृत कलश को लेकर उसे राक्षसों से बचाते हुए इंद्र-पुत्र जयंत भाग रहा था। रास्ते में कलश से अमृत की कुछ बूंदे धरती पर चार स्थानों पर छलकी थीं। इन चारों स्थानों पर गिरे अमृत बूदों से रससिक्त होने के लिए ही करोड़ों लोग विशेष मौकों पर यहां खिंचे चले आते हैं। अब चार स्थानों को देखें, तो प्रयागराज अन्य तीन से भिन्न है। इसे तीर्थराज कहते हुए वेद-पुराण में कई आख्यान भरे पड़े हैं। हम भौतिक रूप की चर्चा कर रहे हैं। इस रूप में भी यह स्थान अद्भुत है। हम जानते हैं कि वे स्थान प्रयागराज के साथ हरिद्वार, उज्जैन और नासिक हैं। हरिद्वार कुम्म गंगा के तट पर आयोजित होता है। उज्जैन शिप्रा नदी के तट पर है। नासिक में होने वाले कुम्भ के दौरान श्रद्धालु गोदावरी के तट पर जुटते हैं। ध्यान से देखें तो तीन कुम्भ किसी एक नदी के तट पर होते हैं। इनसे अलग प्रयाग में भौतिक रूप से दो नदियों के संगम तट पर यह मेला हुआ करता है। आस्था में बसी सरस्वती को भी जोड़ लें तो प्रयागराज का कुम्भ तीन नदियों की पवित्र जल राशि से जुड़ा है। इसीलिए इस स्थान को त्रिवेणी की संज्ञा भी मिली हुई है। इसलिए त्रिवेणी की धरती तीर्थराज भी कही गयी है। एक और खास बात कि अन्य स्थानों से अलग प्रयागराज का संपूर्ण कुम्भ

क्षेत्र नदियों के रेत भरे क्षेत्र में निर्मित होता है। कुम्भ क्षेत्र में किसी भी अधुनातन शहर की जीवनोपयोगी हर सुविधा मौजूद होती। है। इससे रू-ब-रू होना जीवन का अनोखा अनुभव हो सकता है।

देश की आजादी के बाद का पहला कुम्भ वर्ष 1954 में प्रयागराज में आयोजित हुआ था। केंद्र और राज्य सरकारों ने विशेष इंतजाम किये थे। प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद पूरे एक महीने कुम्भ में कल्पवास करने पहुंचे थे। इसके पीछे उनकी धार्मिक आस्था थी। उसका पालन करते हुए उन्होंने सूर्योदय से पहले जागने, हर दिन तीन बार स्नान, एक समय भोजन, त्रिकाल पूजा, तुलसी पूजन, दाम-पुण्य आदि नियमों का पालन किया।

राष्ट्रपति ने जब कुम्भ में रहने की इच्छा जताई तो उनके लिए सेना के नियंत्रण वाले किले में ही इंतजाम किये गये। किला संगम क्षेत्र में यमुना तट से सटा हुआ है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पंडित गोविंद बल्लभ पंत ने प्रशासनिक इंतजाम का खुद मुआयना किया। राष्ट्रपति ने किले की प्राचीर से ही मुख्य स्नान पर्वों पर साधु-संतों के शाही स्नान भी देखे। इसकी पुष्टि पत्रकार नरेश मिश्र ने बीबीसी को दिए एक इंटरव्यू में की थी। उस दिन 3 फरवरी को जब संत शाही स्नान के लिए जा रहे थे, राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद किले की प्राचीर पर थे। उनके सिर के ऊपर लाल रंग की छतरी लगी हुई थी। वे हर जुलूस के सामने आने पर संतों के सम्मान में खड़े हो जाते। देश के किसी वीवीआइपी का कुम्भ में कल्पवास का यह पहला और अंतिम तथ्य मिलता है। डॉ. राजेंद्र प्रसाद के किले में निवास को याद रखने के लिए वहां प्रेसीडेंट्स व्यू के नाम से जगह चिह्नित की गयी।

धर्म में परिवर्तन की घटनाएं चर्चा में रहती है। प्रयाग का कुम्भ क्षेत्र तो मुगल बादशाह अकबर के भी ईसाई बनाने की

कोशिश का गवाह रहा है। घटना सम्भवतः 1576 की है। कुम्भ गणना के उपलब्ध तथ्यों के मुताबिक वह अर्ध कुम्भ का साल था। वर्ष 1575 में अकबर दूसरी बार तब के इलाहाबाद आया और यहां लंबे समय तक रहा था। उसी समय उसने अपना प्रसिद्ध किला बनवाना शुरू किया। पहली बार वह नगर के समीप कड़ा के सरदार अलीकुली खां की बगावत को कुचलने पहुंचा था। जब उसने यहां रहने का मन बनाया, तब तक उसने इस धर्म क्षेत्र के बारे में बहुत सी जानकारी इकट्ठा कर ली थी। संगम में स्नान के साथ इस क्षेत्र में होने वाली धर्म चर्चाओं ने उस पर भी असर डाला। धर्म का ही प्रभाव था कि उसने शहर का नाम 'इलाहाबास' यानी 'ईश्वर की जगह' रखा, जो बाद में बदलकर इलाहाबाद हुआ। ऐसी जगह पर किले में उसने एक इबादतखाना भी बनवाया और वहीं उसे ईसाई बनाने की कोशिश हुई थी।

डॉ. हेरम्ब चतुर्वेदी लिखित पुस्तक 'कुम्भ ऐतिहासिक वांग्मय' में यह तथ्य शामिल किया गया है। पास्टर मोंसेरेंट ने पुर्तगाल सरकार को जानकारी दी कि अकबर इस समय प्रयाग में है। बाद में मोंसेरेंट के अकबर के दरबार में भी हाजिर होने के प्रमाण मिलते हैं। बहरहाल, पुर्तगाल का प्रसिद्ध पास्टर मिशनरी वेदेत्ति भारत पहुंचा। कुम्भ क्षेत्र के साथ अकबर के किले में स्थित इबादखाने में भी धर्म चर्चा चल रही थी। उसी समय अकबर से सम्पर्क कर उसे मिशन के बारे में जानकारी देकर प्रभाव में लेने की कोशिश हुई। बादशाह ने भांप लिया कि यह धर्म परिवर्तन की कोशिश है। अकबर को लगा कि धार्मिक चर्चा के लिए बनवाये इबादतखाने में धर्म के नाम पर झगड़े हो रहे हैं। उसने यह कहते हुए इबादतखाना बंद करवा दिया कि धर्म चर्चा तो कुम्भ में ही सम्भव है।

वर्ष 1954 की 3 फरवरी का दिन था। वह साल प्रयाग के कुंभ मेले का था और उस दिन मौनी अमावस्या स्नान का मुहूर्त था। फोटो जर्नलिस्ट एन. एन. मुखर्जी कैमरे के साथ मेले में ही मौजूद थे। 'नीपू दा' के रूप में पहचान रखने वाले मुखर्जी संगम पुलिस चौकी के निकट बांध के पास एक टावर पर फोटो के एंगल ढूंढ़ रहे थे। उसी दौरान उनकी नजर बांध पर कुछ दूर ढाल के पास एक के ऊपर एक गिरते हुए लोगों पर पड़ी।

नीपू दा वहां से उस हादसे को क्लिक कर पाते कि एक व्यक्ति बिजली के खंबे पर चढ़कर तार के सहारे बचकर निकलने की कोशिश करने लगा। घटना स्थल एकदम पास में ही था। वे दौड़कर वहां जाते कि जमीन पर पड़े कुछ लोगों से वे भी टकराए। बहरहाल, तार से लटकता वह व्यक्ति कुछ देर तक उस पर सरकता रहा। मुखर्जी उस व्यक्ति की फोटो लेने में कामयाब हो गए। इस घटना की पुष्टि बीबीसी को दिए एक साक्षात्कार में पत्रकार नरेश मिश्र ने भी की है। फर्क यह है कि वे तार को बिजली की जगह टेलीफोन का बताते हैं। दोनों के कथन में फोटो लेने वाले जर्नलिस्ट का तथ्य सच लगता है। प्रयाग मेले में दिन के समय विद्युत आपूर्ति बंद रखी जाती है। ऐसे में तार को खुले हाथ पकड़ना मुमकिन था। बहरहाल, उस समय हुई भगदड़ की रिपोर्ट अगले दिन अखबारों छपी। उनमें से एक ढेर सारी तस्वीरों के बीच तार पर झूलते व्यक्ति की फोटो भी शामिल थी।

बात 1894 के कुम्भ की है। गंगा की बदली धारा ने आयोजकों के सामने मुश्किल खड़ी कर दी थी। गंगा की धारा झूसी से खिसककर किले की तरफ चली गई थी, जिसके कारण संगम तक पहुंचना मुश्किल था। स्नान के लिए भी पर्याप्त स्थान नहीं रहा था। संतों और श्रद्धालुओं को संगम तक पहुंचाना आयोजकों के लिए बड़ी चुनौती थी। आयोजकों ने नावों को

जोड़कर पुल तैयार करवाया, जिससे होकर साधु-संत और श्रद्धालु संगम तक पहुंचे और स्नान किया। अभिलेखागार में मौजूद इसके साक्ष्य आज भी संरक्षित हैं। 1894 का कुम्भ ब्रिटिश हुकूमत का इस कुंभ से जुड़े दस्तावेज संस्कृति विभाग के राजकीय अभिलेखागार में उपलब्ध हैं। इन दस्तावेजों में उस समय के कुंभ मेला प्रभारी एचडब्ल्यू पाइक द्वारा 16 मार्च 1894 को जारी वह पत्र भी है, जिसमें धारा बदलने की वजह से नावों का पुल तैयार करने का उल्लेख है। एचडब्ल्यू पाइक मूलतः माघ मेला के ज्वाइंट मजिस्ट्रेट थे, जिन्हें 1884 के कुंभ मेला का प्रभारी बनाया गया था।

पत्र के मुताबिक नावों का पुल तैयार करने पर उस वक्त 9400 रुपये खर्च किए गए थे। वैसे गंगा की धारा का प्रवाह बदलने पर उस वक्त कुल 15,700 रुपये का खर्च आया था। क्षेत्रीय अभिलेखागार प्रयागराज के प्राविधिक सहायक राकेश कुमार वर्मा बताते हैं कि धारा बदलने की वजह से श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नावों को बड़े-बड़े रस्सों से जोड़ा गया था।

प्रयाग के 1870 वाले कुंभ मेले में एक धार्मिक विवाद उठ खड़ा हुआ। प्रयागवाल के नाम से प्रसिद्ध तीर्थ पुरोहितों ने उस साल ईसाई धर्मप्रचारकों के खिलाफ आवाज उठाई थी। तब के मिले विवरण में आम भारतीय लोगों की मानसिकता का भी पता चलता है। पुरोहितों का तर्क था कि हिंदुओं को तो ईसाई धर्म स्थानों में प्रवेश की मनाही है। इसके विपरीत ईसाई हमारे धर्म स्थानों में न सिर्फ चले आते हैं, बल्कि हमारे श्रद्धालुओं को भड़काते भी हैं। कुंभ पर ब्रिटिश रिसर्च स्कॉलर कामा मैक्लिन इसे बड़े रोचक ढंग से रखती हैं। वे अंग्रेजी दस्तावेज में उस साल को पहले कुंभ के रूप में देखती हैं। मैक्लिन के मुताबिक,

प्रयागवाल ने कहा कि आमतौर पर सफेद वस्त्र पहने गोरे अथवा धर्मांतरित अन्य लोगों के खिलाफ भारतीय कुछ कहने से डरते हैं। ऐसा इसलिए कि उनके कपड़ों से अंग्रेज शासकों का प्रतिनिधि होने का भान होता है। इसका लाभ उठाकर ये धर्म प्रचारक हमारे देवी-देवताओं, मूर्ति पूजा और अनुष्ठानों को अंधविश्वास बताया करते हैं। इस विवाद वाले रिकॉर्ड में राम और लक्ष्मण की जगह 'राम लछमद' दर्ज है। उस मेले में सुसमाचार नाम से जो साहित्य बांटे जा रहे थे, उनमें इस तरह के मेलों को अंधविश्वास कहा गया। यह भी कहा गया कि इसका किसी साहित्य में जिक्र नहीं है। वर्ष 1870 के मेले में इस विवाद के बीच अंग्रेज अधिकारियों ने तीर्थ पुरोहितों की शिकायत को खारिज कर दिया था। समझा जाता है कि यह एक रणनीति के तहत किया गया। प्रयाग के मेलों में समय-समय पर देसी राजाओं की राष्ट्रभक्ति दिखा करती थी। वहां हिंदू श्रद्धालुओं का भी एकजुट होना देखा गया। इससे अंग्रेज डरे रहते थे। तब उन्हें लगा कि मेले में ईसाई धर्म प्रचारकों पर रोक लगाने से प्रयाग के पुरोहित इस कार्रवाई को अपनी जीत समझेंगे। इससे भविष्य में दिक्कतें हो सकती हैं। आज धर्म प्रचारक रोके जा रहे हैं, कल अधिकारी रोके जाएंगे। बहरहाल, इस विवाद से एक बात तो हुई। ईसाई साहित्य को देखकर यहां भी हिंदू धर्म साहित्य प्रकाशित करने का सिलसिला शुरू हुआ।

पराधीनता के दौर में वर्ष 1924 का अर्द्धकुम्भ महामना के जल सत्याग्रह के लिए याद किया जाता है। हुआ यह कि मौनी अमावस्या स्नान पर्व के दिन ब्रिटिश हुकूमत ने संगम पर खतरनाक तरीके से फिसलन बताते हुए कल्पवासियों के संगम स्नान पर प्रतिबंध लगा दिया था। यह बात महामना पं. मदन मोहन मालवीय को पता चली तो उन्होंने सनातन संस्कृति के सबसे बड़े पर्व की महत्ता पर कल्पवासियों के हित में जल

सत्याग्रह करने का निर्णय लिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग के प्रोफेसर हेरंब चतुर्वेदी बताते है कि महामना हिंदू महासभा से जुड़े थे और काग्रेस के सक्रिय सदस्य भी थे। उन्होंने इस निर्णय के विरोध में सुबह छह बजे कल्पवासियों के साथ सत्याग्रह शुरू कर दिया। यह कहते हुए कि कल्पवास के दौरान कल्पवासियों के दोपहर का स्नान संगम में करने का विधान है। कल्पवासियों को संगम स्नान से रोकना उचित नहीं है। इससे कल्पवास के लिए लिया गया उनका संकल्प प्रभावित होगा। विरोध को देखते हुए किला से लेकर संगम तक के इलाके में सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई थी। महामना के सत्याग्रह की जानकारी पंडित जवाहर लाल नेहरू, जो उस वक्त म्युनिसपलिटी के अध्यक्ष थे, को हुई तो वह आनंद भवन से निकलकर संगम पहुंच गए।

पंडित नेहरू ने अफसरों को समझाने की कोशिश की। लेकिन जब बात नहीं बनीं तो वह संगम जाने से रोकने के लिए की गई बेरिकेडिंग को तोड़कर संगम में कूद गए। फिर क्या था पीछे खड़े कल्पवासियों ने भी उनके साथ संगम में डुबकी लगाई। नेहरू म्युनिसपलिटी के अध्यक्ष थे इसलिए ब्रिटिश हुकूमत ने किसी के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की। प्रो. चतुर्वेदी बताते हैं कि इस घटना का जिक्र पंडित नेहरू ने अपनी आत्मकथा में भी किया है।

प्रयागराज (तत्कालीन इलाहाबाद) में आयोजित होने वाले कुम्भ और माघ मेले से देश के कई राजाओं के भी किस्से भी जुड़े हैं। बात 1836 की है। रीवा रियासत के राजा ने अपने राज्य से प्रयाग मेला जाने वाले दल को टैक्स से मुक्त करने का अनुरोध ब्रिटिश शासन से किया। तीर्थ यात्रियों पर टैक्स लगाने का चलन मुगल काल से ही था। ईस्ट इंडिया कंपनी के दौर में यह व्यवस्था

और अधिक दुरुस्त हो चुकी थी। राजा ने अपने दल में पांच हजार श्रद्धालुओं के होने का उल्लेख किया।

अंग्रेज अधिकारी इतने बड़े दल को करमुक्त करने पर सहमत नहीं हुए। उन्होंने पांच हजार की जगह सिर्फ एक हजार लोगों को कर मुक्त रखने की बात कही। लंदन के ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से प्रकाशित अपनी शोधपरक पुस्तक 'पिल्गिमेज एंड पावर, द कुंभ मेला इन इलाहाबाद' की लेखिका कामा मैक्लिन ने इसका विवरण दिया है। पुस्तक से पता चलता है कि अंग्रेजों के रुख से राजा नाराज हो उठे। क्रोधित राजा ने उस साल इलाहाबाद की अपनी यात्रा ही रद्द कर दी।

कुम्भ व्यवस्थापकों से रीवा राजघराने की लागडांट का एक दूसरा किस्सा राजा के मेले में शामिल नहीं होने से तीन साल पहले का है। वर्ष 1833 में रीवा के ही बिशुनाथ सिंह ने अंग्रेजों को मेला कर देने से मना कर दिया। लगता है कि मेले की तैयारियों के लिए राजाओं से धन संग्रह किया जाता था। समय के हिसाब से रीवा पर एक बड़ी राशि पांच हजार चार सौ नव्वे रुपये की मेला कर लगाई गई थी। कामा अपनी पुस्तक में बिशुन सिंह को रीवा का राजकुमार बताती हैं। बिशुन सिंह का तर्क था कि वे प्रयाग में स्नान नहीं करते। इसलिए कर नहीं देंगे। अंग्रेज अधिकारियों ने जवाब में कहा कि रीवा राजघराने ने कुछ प्रयागवालों (पुरोहितों) को काम पर रखा है। उनके अनुचरों ने सिर मुंडवा कर मेले में भाग लिया। दोनों पक्षों के बीच अंत में क्या हुआ, इसका विवरण उपलब्ध नहीं है।

सन् 1514 में प्रयाग का का कुंभ अथवा माघ मेला लगा हुआ था। भ्रम की स्थिति हर 12 साल वाले विशेष मेले के लिखित प्रमाण नहीं होने से है। इलाहाबाद के प्रमुख मुहल्ले दारागंज के समीप गंगा तट की ओर एक समूह भजन-गायन करते हुए चला

जा रहा था। आगे-आगे अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये अत्यंत गौर वर्ण के तिलकधारी युवा संत नृत्य भाव में चल रहे रहे थे। साथ के लोग भी हरे कृष्ण, हरे-कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण, हरे-हरे। हरे-राम, हरे-राम, राम-राम, हरे-हरे' गाते जा रहे थे। तभी सामने से आते दो किशोर उसे नाचते गाते गौरांग युवक के सामने नदी तट के बालू पर साष्टांग लेट गये। दोनों ने इस संत से निवेदन किया कि उन्हें दीक्षा दें। वैष्ठव धर्म साहित्य के मुताबिक, गौरांग युवा ने उस समय जो कहा वह भक्ति का आदर्श है। उन्होंने कहा कि आवश्यक नहीं कि चारों वेदों का अध्ययन किया हुआ ब्राह्मण भगवान के भक्त के रूप में स्वीकार कर लिया जाय। इसके विपरीत शुद्ध मन वाले भक्त को बहुत ही निम्न परिवार से आने पर भी भगवान स्वीकार कर लेते हैं।

इतिहास गवाह है कि प्रयाग में इस धर्म समूह का नेतृत्व करने वाले गौरांग युवा चैतन्य महाप्रभु थे। महाप्रभु दो बार प्रयाग आये। पहली बार तीन दिन रहकर लौट गये थे। दूसरी बार पूरे माघ महीने रहे। स्वामी शारदेशानंद अपनी पुस्तक चैतन्य महाप्रभु' में उसे कुंभ मेले का साल बताते हैं। उनके समक्ष भक्तिविह्वल होकर समर्पित होने वाले श्रीरूप गोस्वामी और उनके छोटे भाई 'श्री अनुपम' गोस्वामी के रूप में चर्चित हुए। श्री अनूपम का नाम इस परम्परा के 'इस्कान' प्रमुख रहे श्रीलप्रभुपाद ने 'श्री बल्लव' भी बताया है। दोनों चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख शिष्यों में गिने जाते हैं। इन शिष्यों के पहले प्रमुख रूप से श्री सनातन गोस्वामी का नाम लिया जाता है। कहते हैं कि वे बड़े भाई थे। बहरहाल, उन दोनों को चैतन्य महाप्रभु ने वृंदावन ले जाकर शिक्षा दी। वहां गुरु के साथ इन शिष्यों की याद दिलाते स्थान भी मौजूद हैं। चैतन्य महाप्रभु और उनके शिष्यों को स्मृति दिलाते स्थान प्रयागराज में भी हैं। श्रीरूप गौड़ीय मठ की

स्थापना तो महाप्रभु के जाने के चार शताब्दी से भी अधिक समय बाद 1930 में हुई। महाप्रभु ने तब खुद को जिस मंदिर से जोड़ा, उसे बिंदु माधव कहा गया है। श्रील प्रभुपाद ने कई देशों में गौड़ीय भक्तों को संबोधित करते हुए इस मंदिर का उल्लेख किया है। प्रयाग के द्वादश यानी बारह माधव मंदिरों में यह प्रमुख है। वैसे वेणी माधव मंदिर के व्यवस्थापक भी अपने परिसर में चैतन्य महाप्रभु के निवास का दावा करते हैं। पिछली शताब्दी में ग्वालियर की महारानी ने इस मंदिर को विस्तृत ढंग से पुनर्निर्मित कराया। प्रयाग के अरैल स्थित आश्रम जाकर चैतन्य महाप्रभु के शुद्धाद्वैत वेदांती आचार्य बल्लभ से भेंट करने के प्रमाण भी मिलते हैं।

घटना 1995 के अर्ध कुम्भ की है। आदि शंकर के ओंकारेश्वर स्थित 'मूल पीठ' के आचार्य रूप में स्वामी अखिलेश्वरानंद तीर्थ ने उस साल ऐसा कदम उठाया कि मेले में हंगामा खड़ा हो गया। उसके पहले लगने वाले कुम्भ के दौरान टीकरमाफी आश्रम के शिविर में बहुचर्चित कथावाचक अंगद महाराज का स्वयंभू शंकराचार्य के रूप में अभिषेक किया जा चुका था। उन्हीं को शंकराचार्य स्वामी अखिलेश्वरानंद तीर्थ का नया नाम मिला। तब तक किसी की आपत्ति नहीं हुई। जिस साल की चर्चा हो रही है असल कहानी तभी की है। आदि पीठ के उस आचार्य ने 1995 के अर्घ कुंभ में समाज के चारों वर्णों के चार शंकराचार्यों के अभिषेक की घोषणा की। बड़े धूमधाम से उन्होंने ऐसा किया भी। अगली सुबह कुछ समाचार पत्रों ने इस समाचार को स्थान दिया था। एक साप्ताहिक ने तो इसे क्रांतिकारी घटना के रूप में प्रस्तुत किया। उधर, मेले में संतों के अन्य शिविरों में सुगबुगाहट शुरू हो चुकी थी।

शंकराचार्य की परंपरागत चारों पीठों पर एक जाति विशेष को ही आसीन करने की परंपरा रही है। स्वामी

अखिलेश्वरानंद तीर्थ की ओर से इसमें खलल डालने से नाराज दंडी साधुओं के एक समूह ने अचानक उनके शिविर पर हमला बोल दिया। स्वामी अखिलेश्वरानंद को घेरे में लेकर पुलिस उन्हें सिविल लाइंस स्थित एक सरकारी गेस्ट हाउस में ले गयी। आज जानना रोचक है कि यह घटना जिस शिविर में हुई थी, वह इस साल (2025) के कुम्भ में भी हरिश्चंद्र मार्ग पर स्थित है। सनातन धर्म वाहिनी के नाम से इस शिविर में अपनी कथा से प्रसिद्धि पा चुके स्वामी प्रणव पुरी उन्हीं अखिलेश्वरानंद तीर्थ के पुत्र है। शिविर की संचालिका साध्वी अपर्णा भारती बताती हैं कि तब अभिषिक्त चार आचार्यों में से एक स्वामी नारायणानंद तीर्थ के नाम से मध्य प्रदेश के सिहौर जिले में पिचौरा स्थित आश्रम के प्रसिद्ध संत हैं।

दूसरे नये नाम वाले आचार्य ब्रल्मानंद तीर्थ आर्य समाज से आये थे। दो अन्य परमात्मानंद तीर्थ कवीर पंथ से और महेश्वरानंद तीर्थ व्यवसायी समाज से आये संत थे। इसी शिविर में तब की प्रसिद्ध कथावाचिका विजया गिरी अब दिव्या गिरी महाराज के रूप में महामंडलेश्वर के स्थान पर आसीन हैं। स्वामी अखिलेश्वरानंद को सहयोग करने वालों में तब मैनपुरी के रहने वाले शैलेंद्र सिंह, कांग्रेस के पूर्व सांसद राम निहोर 'राकेश' और पूर्व ब्लॉक प्रमुख हरिश्चंद्र सिंह आदि के नाम लिये गये। । उत्तर प्रदेश में सरकार मुलायम सिंह की थी। स्वामी अखिलेश्बरानंद को यहां से संरक्षण की बात भी कही गयी। हालांकि आयोजन के दिन स्वर्ण की जगह काष्ठ सिंहासन का तथ्य भी है।

बात 1888 की है। तब के दो समाचार पत्रों ने प्रयाग के संगम पर संन्यासियों सहित साधु-संतों के जुलूस और स्नान की। एक पत्र का नाम मख्जान-ए-मसीही था और दूसरा पत्र कौकाव-ए-हिंद नाम से था। छपी हुई रिपोर्ट में बताया गया था कि इलाहाबाद में किले के नीचे और अंग्रेजी सैन्य प्रतिष्ठान के निकट

हिंदुओं के एक धार्मिक सम्प्रदाय के लोगों ने नग्न अवस्था में अस्त्र-शस्त्र के साथ जुलूस निकाला। जुलूस में शामिल लोगों ने भारी शोरगुल और नारा लगाते हुए संगम में स्नान किया। अब असली बात इसके बाद की है। दोनों समाचार पत्रों को कटिंग्स लगाते हुए क्रिश्चियन ब्रदरहुड के अध्यक्ष आर्थर फोए ने लिवरपूल के पार्लियामेंटेरियन सैमुएल स्मिथ को एक पत्र लिखा। पत्र क्षोभ से भरा हुआ था कि एक ईसाई सरकार के रहते प्रयाग में नग्न और अस्त्र-शस्त्र से सज्जित साधुओं के लिए अंग्रेज अफसर रास्ता साफ करता दिखा। फोए ने पत्र में लिखा कि ऐसा करने वाली आंग्ल सरकार धार्मिक मामलों में तटस्थ नहीं कही जा सकती। भारतीय लोग भी सरकार के इस कदम को उसकी सहिष्णुता नहीं मानते। उन्हें लगता है कि वे अंग्रेजी सरकार को भारतीय परंपम्पराओं के आगे झुकने को मजबूर करते हैं। इस नजरिए से ऐसा करना गोरों के लिए अपमानजनक है।

यह आज भी दिखता है कि भीड़ प्रबंधन के साथ सरकार की ओर से संतों के सम्मान के तौर पर वरिष्ठ अधिकारी आगे-आगे चला करते हैं। वर्ष 1888 में भले ही इसे अपमानजनक बताया गया हो. लेकिन यह आगे भी चलता रहा। राजकीय अभिलेखागार में मौजूद दस्तावेज से पता चलता है कि ऐसा 1894 में भी हुआ। तब मेले के लिए इंग्लैंड से तीन और अफसर बुलाए गए थे। वर्ष 1888 में लिखे पत्र की गंभीरता का अंदाज इस बात से भी लगता है कि तब की प्रांतीय सरकार की तरफ से 16 अगस्त को इसका जवाब दिया गया था। जवाब में कहा गया कि ये साधु हिंदुओं में बड़े सम्मान के साथ देखे जाते हैं। फिर इनके जुलूस में शामिल होने के लिए न तो किसी को बुलाया जाता है और न ही प्रोत्साहित किया जाता है। इनके बीच पहले संघर्ष भी होते रहे हैं। इस दृष्टि से सरकार का दायित्व है कि वह उचित इंतजाम करे।

साल 1911 में प्रयाग के मेले में एक अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक घटना हुई। उस दिन की तारीख 18 फरवरी थी। जहां तक मेला था, लोग फैले हुए थे। दोपहर के बाद भी बहुत से लोग संगम और गंगा-यमुना के तटों पर स्नान कर रहे थे। अधिसंख्य श्रद्धालु अपने शिविरों में लौट आए थे। भजन और कथा-प्रवचन के दौर भी चल रहे थे कि उसी समय आकाश में तेज गर्जना हुई। आश्चर्य और भय मिश्रित भाव से लोगों ने ऊपर की ओर नजरें कीं। जो दिखाई दिया, वह एक धातु का बड़ा सा खंड था जो किसी बड़ी चिड़िया की तरह था। वह धातु खंड तेजी के साथ एक ओर से दूसरी ओर चला जा रहा था। उस उड़ती हुई धातु की आसमान में ऊंचाई भी बहुत अधिक नहीं थी। इसके चलते उसके पिछले हिस्से से निकलती धुएं की लकीर भी देखी गई। आसमान साफ था, मेला क्षेत्र तो सदैव से स्थायी निर्माण विहीन रहा ही है। इस तरह जिसने भी आवाज सुनी, वह उस अद्‌भुत दृश्य को देख भी सका। उस क्षण तक बहुत कम लोगों को मालूम रहा कि इस धातु खंड की उड़ान एक ऐतिहासिक घटना सिद्ध होने जा रही है। वह भारत में पहली नागरिक और दुनिया भर में पहली व्यावसायिक उड़ान थी।

डेढ़ महीने से कुछ अधिक समय तक चलने वाले मेले में एक सरकारी प्रदर्शनी भी लगी हुई थी। वह पहली सरकारी प्रदर्शनी थी। वहां भी बड़ी संख्या में लोग सरकार के कार्य का अवलोकन कर रहे थे। वहां से आकाश में उस गर्जना को आसानी से महसूस किया गया और उड़ती वस्तु को आसानी से देखा गया। मेले में लगी वह सरकारी प्रदर्शनी आज लोगों के मन-मस्तिष्क में नहीं है। इसके विपरीत वह उड़ान इतिहास बन गयी। कुछ पढ़े लिखे लोग इस ऐतिहासिक घटना का भी गवाह बनने आए थे। असल में उस प्रदर्शनी के साथ ही इस पहली उड़ान का भी समय

तय किया गया था। वह विमान हम्बर बाइप्लेन था और पायलट फ्रांस के रहने वाले मोनसेग्नूर हेनरी पिकेट थे। उड़ान तत्कालीन इलाहाबाद के पोलो ग्राउंड से उपनगर नैनी के बीच हुई थी। विमान में डॉक के लगभग साढ़े छह हजार पैकेट थे। पुस्तक 'भारतीय डाक सदियों का सफरनामा' के लेखक पत्रकार अरविंद सिंह बताते हैं कि उड़ान के बाद यह विमान 21 फरवरी तक इलाहाबाद में ही लोगों के देखने के लिए रखा गया था। सभी मेल पर लगी एक मुहर में पहाड़ और हवाई जहाज के चित्र के साथ गोले में 'फर्स्ट एरियल पोस्ट यू पी एक्जबिशन एलाहाबाद' और बीच में 1911 छपा हुआ था। तब 'यूपी' का मतलब 'यूनाइटेड प्राविंसेज' था ।

यह कथा अजीब है। कभी प्रयाग कुंभ में आने वाले यात्रियों पर प्रवेश के समय टैक्स लगा करते थे। यह मेले में कई साल हुआ। मुगल से लेकर ब्रिटिश काल तक इस तरह के टैक्स लगते रहे। इससे अलग यह जानना रोचक है कि मेले के अंदर लोगों का मुंडन करने वाले नाइयों पर भी शासकों ने कर लगाये। राज करने वालों की इससे बहुत कमाई हुई। इसके विपरीत एक वर्ग की कमाई में गिरावट आ गयी और उसने ऐसे कर का विरोध किया। मेले में कर लगाने की शुरुआत अकबर के समय ही हो गई थी। श्रद्धालु मेला प्रवेश के बाद सिर मुड़ाने जैसे सामान्य काम पर भी परोक्ष रूप से टैक्स देने के लिए मजबूर हुए। शासकों ने मुंडन करने वाले नाइयों पर कर लगाया। फिर नाइयों ने मुंडन की राशि बढ़ा दी। इससे श्रद्धालुओं की जेब काफी हलकी होने लगी। इसके बाद तीर्थ पुरोहितों को दक्षिणा देने के लिए उनके पास धन बहुत कम होता था। तीर्थ पुरोहितों ने इस समस्या की जड़ को महसूस किया और अकबर के दरबार में बात पहुंचाई। बाद में इस तरह के कर वापस ले लिए गए। कर के मामले में एक

और विवरण है कि ग्वालियर के महादराव शिंदे ने 1790 में अवध के नवाब आसफ-उद-दौला को पत्र लिखा। राजा के पत्र के बाद तब लगाए गए कर में बहुत कमी कर दी गयी।

ब्रिटिश राज के समय प्रयाग मेले में मुंडन करने वाले नाइयों पर भारी कर लगाने के विवरण मिलते हैं। ब्रिटिश लेखक फैनी पार्क के मुताबिक, 1870 में खुद अंग्रेजों ने करीब तीन हजार मुंडन केंद्र खुलवाये। इस केंद्रों से लगभग 42 हजार रुपये की कमाई हुई। हालांकि अकबर और ब्रिटिश काल के बीच के समय भी टैक्स प्रणाली का विरोध होता रहा। इसी कारण 1801 में ईस्ट इंडिया कंपनी ने कर वसूली का काम एक स्थानीय तीर्थ पुरोहित को ही सौंप दिया था। वॉटर हैमिल्टन के मुताबिक 1806 में तो टैक्स बड़ा मसला बन गया था। ईस्ट इंडिया कंपनी ने मेले में आने वाले हर व्यक्ति पर एक रुपये का कर लगा दिया था। यह राशि कितनी बड़ी थी, इससे अंदाज लगाया जा सकता है तब एक सामान्य कर्मचारी की आय मात्र आठ रुपये तक ही थी।

इस किस्से के शीर्षक से आप चौंक सकते हैं। जो लोग पिछले दो-तीन कुम्भ को नजदीक से देखते रहे हैं, वे इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। फिर भी यह सच है कि किसी जमाने में कुम्भ की जानकारी देने के लिए सरकार को कोई खर्च नहीं उठाना पड़ता था। तब इस प्रचार पर सिर्फ दो पैसे का खर्च कैसे हुआ करता था, यह कथा रोचक है।

बात 1942 के कुम्भ की है। लॉर्ड लिनलिथगो भारत में ब्रिटिश सरकार के गवर्नर जनरल थे। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भी वही वायसराय थे। उनकी ओर से प्रस्तुत अगस्त प्रस्ताव इतिहास का हिस्सा है। बहरहाल, स्वाधीनता आंदोलन की उस

हलचल के बीच प्रयाग का कुम्भ लगा। लिनलिथगो इलाहाबाद (प्रयाग) पहुंचे। उन्होंने कुम्भ देखने की इच्छा जताई। हिंदू महासभा और अखिल भारतीय कांग्रेस के नेता पंडित मदनमोहन मालवीय भी साथ में थे। मालवीय जी प्रयाग के ही निवासी थे। उन्होंने संस्कृत शिक्षा और हिंदू परंपराओं के संवर्धन के लिए बहुत से काम किए हैं। कुम्भ में तो वे इलाहाबाद में ही रहना चाहते थे।

बहरहाल, कुम्भ में उस दिन कोई मुख्य स्नान था। मालवीय जी के साथ किसी ऊंची जगह पर खड़े लिनलिथगो यह सोचने लगे कि मेले में यह अपार भीड़ किस तरह से जुटती है। मेले में जनसैलाब देखकर लॉर्ड लिनलिथगो ने मालवीय जी से पूछा- पंडित जी इतने सारे लोगों को इकट्ठा करना तो बड़ा मुश्किल होता होगा। प्रचार-प्रसार पर बहुत खर्च करना पड़ता होगा। मालवीय जी ने बताया कि इस पर खर्च सिर्फ दो पैसे आते हैं। लिनलिथगो ने अचकचाते हुए कहा- यह आप क्या बोल रहे हैं? यह कैसे मुमकिन है ? जवाब में मालवीय जी मुस्कुराए। प्रायः वे धोती-कुर्ता पर शेरवानी जैसा लंबा वस्त्र पहना करते थे। उसकी जेब से उन्होंने पुस्तिका निकाली। लिनलिथगो को बताया कि यह पंचांग है और इसमें सभी हिंदू पर्वों के विवरण मौजूद होते हैं। इसी में देखकर कुम्भ के स्नान की तिथियां भी पता कर ली जाती हैं और लोग चले आते हैं। लिनलिथगों को तब बहुत आश्चर्य हुआ था कि इतने बड़े आयोजन के प्रचार पर कोई खर्च नहीं होता।

बरसात के दिनों में प्रयागराज में नदियां उफान पर होती ही हैं। कुम्भ के दौरान ऐसा नहीं होता। कारण यह है कि नदियों में पानी कम हो जाया करता है। स्थिर जल के कारण स्नान घाट पर लोग सुकून के साथ पहुंचा करते हैं। वर्ष 1977 के कुम्भ में नजारा थोड़ा अलग हो गया था। कहीं कहीं गंगा की धार

मनचली हो उठी। लगा जैसे स्नानार्थियों की परीक्षा ले रही हो। पानी अधिक नहीं होने के बावजूद नदी में उतरना कठिनं हो रहा था। बड़े-बुजुर्गों ने तो बचकर किसी और घाट पर जाना ठीक समझा। बहुत से लोगों ने साथ आए कम उम्र पारिवारिक सदस्यों से लोटे में जल मंगाकर पवित्र स्नान कर लिया। इससे अलग युवा श्रद्धालु अपनी हिम्मत का परिचय दे रहे थे। हालांकि ऐसा करते समय नजारा बदल जाया करता। अच्छे भले गंगा के जल में उतरते, पर तेज धार आती और किनारे का कुछ तट बहा ले जाती। हिम्मत कर पानी में उतरते तो कुछ कदम चलते ही गिर पड़ते। कारण यह था कि धार के कारण पानी के अंदर बालू तेजी से सरकती, इसके साथ ही स्नान करते लोग चारों खाने चित्त हो जाते। बालू की जिन बोरियों से घाट बने थे, वे भी खिसककर गंगा में समाने लगे थे।

गंगा तटों पर कटान की खबर मेले में मौजूद भारत सेवाश्रम संघ के प्रमुख लोगों तक पहुंची। दूसरे संगठनों के साथ सेवाश्रम संघ के स्वयंसेवक भी पूरे मेला क्षेत्र में फैले हुए थे। वे बुजुर्गों और जरूरतमंदों की मदद कर रहे थे। अब नया दायित्व सामने दिखने लगा। गंगा का कटान रोकने पर जल्द काम करना था। सेवाश्रम प्रमुखों के ध्यान में विश्वविद्यालय छात्रावास थे ही,पहले से ही छात्रावासी सेवा में लगे थे। नए हालात में पंडित मदन मोहन मालवीय के निर्मित हिंदू छात्रावास तक बसें भेजी गई। परिसर में बसें खड़ी कर छोटे माइक से मेले की हालत बताकर छात्रों से सेवा की अपील हुई। देखते ही देखते बसें भरने लगीं। फिर क्या था। संगम तट के बगल वाले घाटों पर गेरुआ वस्त्रधारी और पैट शर्ट पहने छात्र दूर से बालू भरी बोरियां लाकर गंगा तट पर डालने लगे। जल्द ही गंगा के घाट पहले से बेहतर हो उठे और स्नान के काबिल हो गए। भारत सेवाश्रम संघ ने छात्रों के खाने का भी खूब ध्यान रखा गया। लौटते समय बस में बैठे हर

छात्र के हाथों में पूड़ियों के साथ आलू की सूखी सब्जी बाले पैकेट थे।

समीप के प्रतापगढ़ जिले से प्रयाग मेले में आया करीब 16 साल का एक किशोर 1944 में उत्सुकता के साथ इधर-उधर देखते हुए चल रहा था। उसकी नजर रोती-बिलखती एक महिला पर पड़ी। युवक ने महिला के रोने का कारण पूछा। पता चला कि गंगा नहाने आयी महिला अपने परिवार से बिछड़ गयी है। आजादी के पहले का दौर था। मेले के लिए कुछ इंतजाम जरूर होने लेगे थे, परंतु सेंट्रल अनाउंसमेंट जैसी कोई व्यवस्था नहीं थी। युवक, महिला का हाल देख द्रवित हो उठा, पर क्या करें। उसने महिला को साथ लेकर जगह्-जगह् पूछताछ की। अंततः एक स्थान पर उसके परिवार बालों के बारे में पता चल गया। फिर महिला परिवार वालों तक पहुंचाई गयी। वही युवक दो साल बाद एक संकल्प के साथ फिर प्रयाग मेले में आया। संकल्प यह था कि यह कुंभ में भूले-घटकों को मिलाने का काम करेगा। बाद में इस काम के चलते युवक की अलग पहचान बन गयी। तब से बर्ष 2016 अपने निधन तक पंडित राजाराम तिवारी हर साल माघ मेला हो, अर्थकुभ अथवा कुंभ, 'भूले- भटके शिविर' चलाते रहे।

शुरू के वर्षों में यह काम आसान नहीं था। सेंट्रल अनाउंसमेंट बहुत समस्या बनी रही। शुरु में लाउडस्पीकर जैसे यंत्र भी बहुत सीमित स्थानों पर होते थे। प्रारम्भ में राजाराम तिवारी के साथ उनके नौ साथी इस काम में लगे। तिवारी ने बिछड़े लोगों के लिए अनाउंसमेंट की जरूरत पूरी करने के लिए टीन की चादरों से भोपू बनाए। जो कोई भूला हुआ मिल जाता साथी युवक घूमते हुए उन्हीं भोंपू के सहारे जानकारी देने लग जाते। समय के साथ प्रशासन ने तिवारी के काम को सहयोग देने की जरूरत समझी। उन्हें हर साल मेला क्षेत्र में शिविर लगाने के

लिए स्थान अलॉट होने लगा। बाद में उनके अलावा यह काम सरकारी केंद्रों और अन्य संगठनों के शिविरों में भी शुरू हुआ। इनके बीच राजाराम तिवारी और उनका शिविर निरंतर नए मुकाम हासिल करता रहा। उनके निधन तक इस संस्था ने करीब 15 लाख लोगों को उनके परिजनों से मिलवाया। उनके काम को लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉड्र्स में भी जगह मिली। सदी के नायक अमिताभ बच्चन ने उन्हें अपने एक प्रमुख टीवी कार्यक्रम में सम्मानित किया। आज मेले में इस तरह के 10 अन्य केंद्रों के साथ राजाराम तिवारी के स्थापित भूले- भटके शिविर को उनके पुत्र लाल जी तिवारी और उमेश चंद्र तिवारी चला रहे हैं।

इलाहाबाद में किले के नजदीकी हिस्से में प्रयागराज का मेला लगा हुआ था। उसी दौरान परेड ग्राउंड के एक ट्रेन आकर रुकी। प्रसिद्ध मेला के पास वाले स्टेशन पर आकर रुकी वह ट्रेन अजीब तरह की थी। उसमें यात्री डिब्बों की जगह रेलवे के वैगन अधिक थे। सभी जानते है कि इनमें माल ढुलाई हुआ करती है। इसके विपरीत उन वैगन से बड़ी संख्या में यात्री उत्तरे। रास्ते में रात के समय यात्रियों को परेशानी नहीं हो, इसके लिए वैगनों में प्रकाश की भी व्यवस्था की गई थी। तब अवध और रुहेलखंड रेलवे क्षेत्र के तहत इलाहाबाद भी शामिल था। रिकॉर्ड बताते हैं कि रेलवे ने तब 93 मेला स्पेशल ट्रेनें चलाई थी। भीड़ बढ़ी तो मालगाड़ी के वैगनों को भी यात्री गाड़ी के रूप में इस्तेमाल किया गया। अवध और रुहेलखंड रेलवे ने व्यवस्था संभालने के लिए बाहर से भी कर्मचारियों को बुलाया था। वह कुम्भ 1907 का बताया गया है। हालांकि, इतिहासकार डॉ. हेरब चतुर्वेदी सिडनी लो को पुस्तक 'ए विजन ऑफ इंडिया ऐज सीन ड्यूरिंग टूर ऑफ

द प्रिंस एंड प्रिंसेज ऑफ वेल्स' के आधार पर इसे 1906 सुस्थिर किया है।

अगले कुम्भ 1918 में भी रेलवे के सामने इसी तरह की चुनौती थी। रेलवे को फिर भीड़ का ध्यान रखना था। तब इलाहाबाद में जिला मजिस्ट्रेट की कुर्सी पर डब्ल्यू गास्केल थे। कमिश्नर के साथ उनके पत्र व्यवहार से लगता है कि विश्व युद्ध के हालात में अतिरिक्त ट्रेनें चलाना आसान नहीं था। । युद्ध के चलते ट्रेनों से सामान ढुलाई को प्राथमिकता दी जा रही थी। ऐसे में भीड़ बढ़ने पर रेलवे ने टिकट बुकिंग बंद कर दी थी। फिर 10-11 फरवरी के अमावस्या स्नान के तीन दिन पहले आठ फरवरी को रेल टिकटों से प्रतिबंध हटा लिया गया। इस तथ्य की पुष्टि कुछ समय पहले उत्तर मध्य रेलवे के जन संपर्क अधिकारी अमित मालवीय ने भी की थी। बताते हैं कि 1918 की उस अमावस्या तिथि पर देशभर से पांच लाख लोग इलाहाबाद आए थे। आबादी और स्नानार्थियों की बढ़ती संख्या के हिसाब से रेलवे ने मेलों के लिए भी अपने इंतजाम बढ़ाये। उसी के तहत इलाहाबाद में अकबर के निर्मित किले के पास परेड ग्राउंड पर एक अस्याथी रेलवे स्टेशन भी बनाया गया। उसका निर्माण 1930 में हुआ था। यह स्टेशन 1954 के कुम्भ में भी था। कहते हैं कि ऐतिहासिक दुर्घटना के दिन इस ट्रेन से उतरे यात्री भी बांध पर चढ़ने की आपाधापी में थे।

कल्पवास की कहानीः

आत्मिक शक्ति से भूल गई पहाड़ जैसा दुःखः मां गंगा की महिमा अनंत है। संगम की रेती असीम ऊर्जा से पूर्ण है। कल्पवास की अलौकिक शक्ति जीवन को आत्मिक सुख प्रदान करती है। मां गंगा हर पीड़ा को हर लेती हैं। एक माह तक मां

गंगा की गोद में जो जप तप साधना करती हूं उससे साल भर मन को शांति मिलती है। तप, साधना से पति के खोने का दुःख भी कम हो जाता है। पति राजबहादुर त्रिपाठी की भी इच्छा थी कि नौकरी से सेवानिवृत्त होकर कल्पवास करूंगा। लेकिन 42 साल की उम्र में हार्ट अटैक से उनकी मौत हो गई। इससे मेरी जीने की आशा ही खत्म हो गयी थी।

यह कहना है चित्रकूट के रामपुर की रहने वाली 58 वर्षीय कल्पवासी पुष्पा त्रिपाठी का। बतौर पुष्पा, पति की मौत के समय बड़ी बेटी ममता 17 साल, दूसरी बेटी 15 साल और छोटी बेटी सुनीता 10 साल की थी। मन बहुत दुःखी रहता था, लेकिन घर की महिलाएं 2014 में संगम में साथ लेकर आई और उनके साथ एक माह तक मैंने भी कल्पवास किया। उसके बाद से हर साल अब अकेले ही कल्पवास करती हूँ। इससे पति की कामना भी पूरी हो रही है और मां गंगा मन की पीड़ा भी दूर कर देती हैं। पुष्पा ने बताया कि बेटियां कल्पवास के खर्च की व्यवस्था कर देती हैं, देवरानी, जेठानी से भी मदद मिलती हैं। मान्यता है कि तीर्थक्षेत्र में बेटियों से सेवा नहीं करानी चाहिए, इसलिए बेटियों को कल्पवास में नहीं बुलाती हूं।

पुष्पा ने बताया कि पति की मौत के बाद जीवन का अर्थ ही खत्म हो गया था। लेकिन कल्पवास जब से शुरू किया तो मन को शांति मिलने लगी। मानसिक रूप से मजबूती मिलने लगी। संयमित जीवन जीने का तरीका सीखने को मिला। दो समय गंगा स्नान और भगवान की भक्ति से आत्मिक शक्ति मिलने लगी। कल्पवास के सहारे ही पहाड़ जैसा दुःख भूल जाता है।

मोह-माया के बंधनों से मुक्ति की कामना के साथ लाखों कल्पवासी संगमतट पर आध्यात्मिक और अलौकिक शक्ति बटोर

रहे हैं। ब्रह्म मुहूर्त में उठने, रेत पर नंगे पांव चलने, दो समय गंगा स्नान, अंजुरी से रोज आचमन, गंगा जल के सेवन व नियमित सात्विक भोजन करने से शारीरिक व्याधियां भी दूर हो रही हैं। कुछ ऐसे कल्पवासी भी हैं जो घर से चले थे तो दवाएं साथ लेकर आए थे लेकिन अब उन्हें दवा की जरूरत महसूस नहीं हो रही है। इनका मानना है कि कल्पवास आत्मिक शक्ति के साथ ही शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि कर रहा है। ऐसा ही मानने वाले हैं सेक्टर पांच में कल्पवास कर रहे 78 वर्षीय गंगा प्रसाद पांडेय और उनकी पत्नी माया देवी। मूल रूप से कौशाम्बी के रहने वाले इंटर कॉलेज के पूर्व प्रवक्ता गंगा प्रसाद इस समय परिवार के साथ मुंडेरा में रहते हैं। गंगा प्रसाद ने बताया कि घर पर सांस व गठिया की दवाएं रोज लेनी पड़ती थी लेकिन जब से कल्पवास शुरू किया दवाओं की जरूरत ही महसूस नहीं हो रही है। महाकुम्भ में उनके बेटे, बहू भी कल्पवास शुरू किया है।

अलाव के पास न बैठने का बनाया नियमः वैसे तो शास्त्रो में कल्पवास के 21 नियम हैं, जिसका पालन करना पड़ता है लेकिन गंगा प्रसाद ने स्वतः कल्पवास के दौरान अलाव के पास न बैठने का नियम बना रखा है। उनका कहना है कि चाहे जितनी ठंड हो स्नान के बाद अलाव के पास नहीं बैठता क्योंकि आग के पास जब बैठता हूं तो शारीरिक सक्रियता कम होने लगती है।

संगम की रेत पर कल्पवासियों की अपनी विशिष्ट साधना है। गृहस्थ जीवन से एक माह तक विरक्त होकर जप-तप व भगवान की आराधना में लीन रहते हैं। इस आत्मिक सुख, शांति व आनंद के लिए शारीरिक अक्षमता भी चुनौती नहीं बन पाती क्योंकि एक बार कल्पवास का संकल्प ले लिया तो उसे पूरा करना भी जरूरी है। इसी भक्ति भाव से चित्रकूट राजापुर की रहने वाली 65 वर्षीय शिवलली पिछले 14 वर्षों से पति राम

गुलाम के साथ कल्पवास कर रही हैं। महाकुम्भ में इस बार उनका शिविर सेक्टर-पांच में लगा है। शिवलली ने बताया कि घर में फिसल कर गिर जाने से उनका एक पैर टूट गया था। काफी इलाज हुआ लेकिन चलने में असमर्थ हो गईं।

किसी तरह वॉकर के सहारे कुछ कदम चल पाती हैं लेकिन मां गंगा के प्रति आगाध आस्था के चलते कल्पवास जरूर करती हैं। उन्होंने बताया कि कल्पवास न करती तो शायद चारपाई पर ही पड़ी रहती लेकिन इससे जो शांति मिलती है उससे शारीरिक परेशानी भी महसूस नहीं होती। शिवलली ने बताया कि चलने में असमर्थ होने के कारण उनकी पौत्री शिवानी घाट से रोज बोतल में गंगाजल भर लाती है। उसी गंगाजल को बाल्टी के पानी में डालकर स्नान कर लेती हैं क्योंकि यहां तो हर तरफ गंगाजल है।

संगम की रेती पर सांसारिक माया-मोह से विरक्त कल्पवास करना किसी तपस्या के कम नहीं है। इन कल्पवासियों में कुछ ऐसे भी हैं जिनकी कई पीढ़ियां संगम तट पर कल्पवास कर चुकी हैं और आज वह भी परिवार की परंपरा निभा रहे हैं। ऐसे ही कल्पवासियों में से एक हैं शंकरगढ़ के बेरा गांव के रहने वाले 70 वर्षीय रामसुचित त्रिपाठी। वह अपनी पत्नी सुमनलता त्रिपाठी के साथ सेक्टर-18 में कल्पवास कर रहे हैं।

रामसुचित ने बताया कि वह अपने परिवार की पांचवीं पीढ़ी के हैं जो कुम्भ से कुम्भ तक कल्पवास कर रहे हैं। संकल्प का यह क्रम आने वाली पीढ़ी भी पालन करेगी। उन्होंने बताया कि उनके पिता पंडित बच्चू लाल ने 2001 से 2013 तक कल्पवास किया। इससे पहले उनके बाबा और परबाबा ने कुम्भ से कुम्भ तक कल्पवास किया। रामसुचित ने बताया कि इस बार महाकुम्भ में दोबारा कल्पवास का संकल्प लिया है। गंगा मइया की कृपा रही तो 2037 के महाकुम्भ तक संकल्प जारी रहेगा।

राम सुचित ने बताया कि कल्पवास में पत्नी साथ में रहती हैं, वही सेवा करती हैं। घर पर पानी गर्म करके स्नान करता था। गठिया, बीपी, शुगर आदि की दवाएं लेता था। लेकिन कल्पवास के संकल्प के साथ दवाएं का सेवन न करने का भी संकल्प लिया। गंगा मइया की कृपा है कि कल्पवास को एक पखवाडा हो गया लेकिन किसी तरह की दवा की जरूरत नहीं पड़ी। नंगे पैर गंगा की रेती पर चलने से घुटने में जो दर्द रहता था वह भी कम हो गया।

संगम की रेती पर लाखों कल्पवासी निष्काम भाव से जप, तप साधना कर रहे हैं। एक माह का कल्पवास माघी पूर्णिमा पर पूर्ण हो जाएगा। कल्पवास के खत्म होने का समय अब करीब आ रहा है। सुबह-शाम शिविर में दिव्य-भव्य महाकुम्भ की चर्चा के साथ कल्पवास से मिली आत्मिक शक्ति का भी बखान किया जा रहा है। सेक्टर-18 हरिश्चंद्र मार्ग स्थित देवरहा बाबा के शिविर में सीधी (मध्य प्रदेश) के पंडित राम गोपाल पांडेय सात साल से कल्पवास कर रहे हैं। उनका मानना है कि कल्पवास ने मुझे सब कुछ दिया। मेरा तो कायाकल्प हो गया। जप, तप व कठिन साधना से जीवन जीने का मार्ग मिल गया।

तीन बार त्रिवेणी स्नान, भू-शयन, भगवत भजन, सत्संग-प्रवचन तो जीवन का मूलमंत्र बन गया। एक माह तक कल्पवास करने के बाद इसी तरह का नियम, संयम व मृदुव्यवहार हमेशा बना रहता है। भौतिक सुख-सुविधा के प्रति राग-विराग खत्म हो जाता है। कल्पवास से सब अपने लगने लगते हैं। जीवन में साथ क्या जाएगा इसकी सहज अनुभूति साधना से मिल जाती है। पंडित राम गोपाल के साथ उनकी पत्नी विद्या पांडेय भी कल्पवास कर रही हैं। बेटी गीता दुबे भी मदद के लिए आती रहती हैं। राम गोपाल ने बताया कि माघ मास में

संगम तट पर संत-महात्माओं की अमृतवाणी से सरस्वती बरसती है। इसके श्रवण का फल केवल कल्पवास में ही मिला। मन का मैल घुल जाता है। मोक्ष प्राप्ति का मार्ग मिल गया।

संगम की रेती पर लाखों कल्पवासी जप, तप व साधना में लीन हैं। एक माह की यह कठिन तपस्या माघ पूर्णिमा को पूर्ण हो जाएगी। शास्त्रों में कल्पवास के 21 नियम बताए गए हैं। इसका नियम, संयम व अनुशासन के साथ पालन किया जाता है। लेकिन कुछ कल्पवासी कल्पवास करने से मिलने वाली आध्यात्मिक ऊर्जा व आत्मिक शुद्धता के निमित्त व्यावहारिक तौर पर कुछ नियमों से इतर भी अपनी साधना पूरी करते हैं। कर्म ही पूजा है को आत्मसात करते हुए कल्पवास के दौरान अपनी शासकीय नैतिक जिम्मेदारियों को भी निभाते हैं।

शिविर में सुबह-शाम जप, तप, तुलसी मइया की पूजा, 'मानस का पाठ, भगवत भजन व सत्संग-प्रवचन को श्रवण करके कायाकल्प करते हैं। इसी तरह से कल्पवास की साधना पत्नी तारा देवी के साथ 12 साल से निभा रहे हैं कोटवा, जमुनीपुर के रहने वाले उमेश कुमार सिंह। सिंचाई विभाग के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी उमेश सिंह की ड्यूटी माघ मास में अधिकांश समय मेला में रहती थी। इसलिए कल्पवास करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। उमेश ने बताया कि बाबा करन सिंह ने 18 साल तक कल्पवास किया था। वे सीओडी छिवकी में कार्यरत थे।

कल्पवास का संकल्प लेने के बाद उसे हर परिस्थिति में पूरा करना होता है। इसीलिए अपनी आस्था, अवस्था व व्यवस्था के अनुसार कल्पवासी निर्धारित अवधि तक के लिए संकल्प लेते हैं। संकल्प बाधित न हो, इसके लिए हर संभव प्रयास भी करते हैं।

चित्रकूट की रहने वाली प्रेमावती ने पति राधेश्याम के साथ पौष पूर्णिमा को सेक्टर पांच में कल्पवास शुरू किया था। पांच ही दिन बीता था कि ढाई साल का पौत्र छत से गिर गया, उसके सिर में सरिया धंस गई। एसआरएन अस्पताल में ऑपरेशन होना था।बच्चे को देखने के लिए सेक्टर पांच से थोड़ी दूर पैदल चलीं कि चारपहिया वाहन ने ठोकर मार दी तो उनका दाहिना पैर टूट गया। एकसाथ दो मुसीबत होने के बावजूद प्रेमावती की आस्था नहीं डिगी। उन्होंने पैर में प्लास्टर बंधवाया और कल्पवास को जारी रखा। उधर, पौत्र का ऑपरेशन सफल रहा और अब बोलने लगा है। प्रेमावती ने बताया कि लगता है कि जीवन में कष्ट ज्यादा लिखा था लेकिन कल्पवास से कम हो गया। 11 साल से कल्पवास कर रहीं प्रेमावती अगले साल शय्या दान करेंगी। उन्होंने बताया कि गंगा व तुलसी मइया की कृपा रही कि कल्पवास का संकल्प नहीं टूटा। 11 साल के कल्पवास की साधना का फल है कि बड़ा संकट टल गया। प्रेमावती चल नहीं पाती लेकिन बैठे-बैठे किसी तरह भोजन बना लेती हैं। पति घाट से बोतल में गंगाजल ले आते हैं उसे बाल्टी में डालकर प्रेमावती स्नान करके पूजन कर लेती हैं।

मौनी अमावस्या महाकुम्भ का प्रमुख पर्व, मौन का अपना महात्म्यः वृष राशि गते जीवे मकरे चंद्र भास्करौ, अमावस्या तदा योग कुम्भख्यस्तीर्थ नायके ।' इस श्लोक से मौनी अमावस्या का माहात्म्य समझाते हुए शंकराचार्य स्वामी अभिमुक्तेश्वरानंद सरस्वती कहते हैं कि जब सूर्य चंद्रमा मकर, गुरु वृष राशि पर हों और अमावस्या की तिथि हो तो तीर्थराज प्रयाग में कुम्भ का योग, होता है। कुम्भ योग में मौनी अमावस्या ही प्रमुख पर्व है।

गोवर्धन मठ पुरी के पीठाधीश्वर जगदूरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती कहते हैं कि यह पर्व संयम का द्योतक है। मौनी अमावस्या के विशेष पर्व काल में स्नान करने पर विशेष पुण्य फल की प्राप्ति होती है। तीर्थराज प्रयाग में कल्पवास का तो महत्व है ही मौनी अमावस्या पर मौन स्नान करने पर ईश्वर भक्ति से जीवन तृप्त हो जाते हैं और तीर्थराज का अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। शास्त्रों में वर्णित है कि पवित्र जल में ऊर्ध्वाधर आकृति में डुबकी लगा कर स्नान करना चाहिए। जल में खड़े होकर दातून नहीं करना चाहिए। जल से भीगे तौलिए से शरीर नही पोछना चाहिए। स्नान के समय तैरना भी नहीं चाहिए। ग्रह नक्षत्रों के संयोग से माघ महीने में अमावस्या का विशेष योग होता है।

शक्ति संचय का सबसे उत्तम साधन है मौन : श्रीद्वारका शारदा पीठ के जगदूरू शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती कहते है कि अध्यात्मिक दृष्टि से मौन हमारे शक्ति संचय का सबसे उत्तम साधन है। सत्य बोलने के बहुत साधन हमारे पास नहीं होते हैं। मनुष्य सहज में मिथ्या भाषण कर देता है, झूठ बोल देता है। मौन रहने पर इन विकारों से एक दिन बचा जा सकता है। मौन एक साधना भी है। शंकराचार्य ने कहा मनुष्य को ध्यान रखना चाहिए वाणी से किसी को कष्ट न पहुंचे, वाणी हमेशा मधुर हो, वाणी निकले तो मधुर निकले न निकले तो मौन हो जाओ। मौन का तात्पर्य कम से कम एक दिन स्नान के पहले हमारे मुख से कोई ऐसा शब्द न निकले जो अपवित्र हो, दूषित हो। मौन रहना भी एक साधना की परंपरा है और तप है।

मन का मौन सध जाता है तो अपने आप आ जाती है शांतिः शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती कहते हैं कि अमावस्या से 15 दिन पहले और 15 दिन बाद की तिथियां

अमावस्या के प्रभाव से प्रभावशाली होकर धार्मिक ऊर्जा का संचार करती हैं। यानी कुम्भ योग में अन्य स्नान पर्वो का महत्व मौनी अमावस्या के साहचर्य के प्रभाव से है। मौनी अमावस्या के दिन संकल्प के साथ मौन रहकर स्नान करने से असीम पुण्यफल की प्राप्ति होती है। मौन का तात्पर्य शांति से है। जब हम ध्वनि करते हैं तो उससे तरंगे निकलती है। तरंगे हलचल पैदा करती हैं और हलचल से ही अशांति होती है। इसलिए पहले हम वाणी का मौन स्वीकार करते हैं, जब वाणी का मौन सघ जाता है तो हम मन का मौन स्वीकार करते हैं और जब मन का भी मौन सध जाता है तो शांति अपने आप आ जाती है।

महाकुम्भ में हर स्नान घाट विशेष पुण्य फलदायीः महाकुम्भ में पहली बार श्रृंगेरी पीठ के शंकराचार्य स्वामी विधु शेखर भारती का आगमन हुआ है। ऐसे में महाकुम्भ के आयोजन, प्रयाग की महत्ता, गंगा की निर्मलता के साथ ही मौनी अमावस्या की रात संगम नोज पर हुए हादसे को लेकर शंकराचार्य के विचार हैं। प्रयाग पुण्य की भूमि है। महाकुम्भ क्षेत्र में हर जगह धर्म-अध्यात्म की सरिता बह रही है। यहां संगम हो, गंगा हो या यमुना, सभी पुण्यदायिनी पवित्र नदियां हैं। ऐसे में मेला क्षेत्र में जहां भी स्नान की व्यवस्था की गई है वहीं पर स्नान करने से हमें विशेष पुण्य की प्राप्ति होगी। शास्त्रों में कहा गया है यदि आप तीर्थस्थल नहीं पहुंच पा रहे हैं तो जहां हैं वहीं प्राप्त जल को पवित्र नदियों का जल स्मरण कर स्नान करने से फल की प्राप्ति होती है।

महाकुम्भ पुण्य का पर्व है। लौकिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह बहुत बड़ा आयोजन है। करोड़ों लोग यहां आ रहे हैं। यहां लाखों ऐसे लोग भी हैं जो पूरे माह कल्पवास करते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक

आयोजन है। चारों पीठ के शंकराचार्यों का यहां होना ही महाकुम्भ की महत्ता को दर्शाता है। समूचा विश्व इस आयोजन को देखकर आश्चर्यचकित हैं। महज 30-40 दिनों के लिए करोड़ों लोगों को यहां इकठ्ठा होना विश्व के लिए शोध का विषय बना है।

प्रयाग महाकुम्भ की यात्रा मेरे लिए अद्‌भुत और आश्चर्यपूर्ण है। यहां की भव्य व्यवस्था, यहां आने वाले करोड़ों लोगों की आस्था तथा यहां के लोगों का आत्मविश्वास देखकर हमें बहुत खुशी होती है। कहते हैं सनातन के प्रति लोगों की श्रद्धा कम हो रही है किंतु यहां आने के बाद प्रतीत होता है कि श्रद्धा कम होने की बात कहना झूठ है।

हमारे देश की नदियां बहुत पवित्र हैं। इनकी रक्षा करना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। स्वच्छता की जिम्मेदारी हम केवल सरकार या किसी संस्था पर नही थोप सकते। इसलिए इसे स्वच्छ रखना हम सबकी जिम्मेदारी बनती है। नदी में कूड़ा कचरा प्लास्टिक आदि फेंकना स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक है ही, जलीय जीवों के लिए भी घातक है। मनुष्य को भी चाहिए कि वे नदियों को कलुषित न करें। हमारे देश के प्रधानमंत्री मोदी हों या इस राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, दोनों सरकारों ने इस आयोजन को संपन्न कराने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

चार कुम्भ से आ रहा हूं, इस बार दुनिया देख रही महाकुम्भः द आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के संस्थापक और आध्यात्मिक गुरु श्रीश्री रविशंकर पांच दिवसीय प्रवास पर महाकुम्भ पहुंच चुके हैं। सेक्टर आठ स्थित फाउंडेशन के शिविर में आध्यात्मिक गुरु ने सरकार की ओर से महाकुम्भ के माहात्म्य, मेले की व्यवस्थाओं, मौनी अमावस्या पर संगम नोज पर हुए

हादसे और बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री के हादसे पर दिए गए बयान।

अस्सी के दशक से मैं यहां कुम्भ में आ रहा हूं। ऐसी व्यवस्था पहले कभी नहीं देखी है। अद्‌भुत व्यवस्थाएं की गई हैं। गंगा का पानी पहले कभी इतना स्वच्छ नहीं होता था। स्वास्थ्य की दृष्टि से मेला का विस्तार करना अच्छा है, आप चाहें जितना पैदल चलिए। इतनी व्यवस्थित सुविधाएं सरकार ने महाकुम्भ में दी हैं जिसे दुनिया के तमाम देश देखने के लिए प्रयागराज आ रहे हैं। 144 वर्षों के बारे में कुछ नहीं कहना है, बस इतना जान लीजिए कि पूरी दुनिया आपका महाकुम्भ देख रही है।

प्रशासन को सावधानी बरतनी चाहिए थी। जनता को भी सहयोग करना चाहिए था। सिर्फ संगम पर ही फोकस नहीं करना चाहिए था। संगम माने 15 किमी का दायरा होता है। आप जहां स्नान कर लेंगे, वहीं आपको पुण्य फल मिलेगा। मैं यह अपील जनता से लगातार करता रहा हूँ, एक बार फिर वहीं अपील करना चाहता हूं। संगम में स्नान के समान ही इस पुण्य क्षेत्र में प्रत्येक घाट पर स्नान का पुण्य मिलेगा हर किसी को, इसलिए अनुशासन के साथ धैर्य बनाकर रखना चाहिए।

साजिश का पता तो जांच एजेंसियां लगाएंगी लेकिन सरकार ने स्नान को लेकर जो दिशा-निर्देश जारी किया था उसका जनता को पालन करना चाहिए।

कलंक जैसा कुछ नहीं होता है। इसके आगे कोई टिप्पणी नहीं करूंगा। सीएम योगी आदित्यनाथ ने महाकुम्भ के लिए बहुत अच्छा काम किया है। मेला से जुड़े जितने अधिकारी व पुलिस वाले हैं, वे अमावस्या स्नान पर्व से दो दिन पहले से जनता की सेवा के लिए कार्य रहे थे।

संत संवेदनशील होते हैं। हादसे में जो हताहत हुए हैं या जो घायल हैं, उनके परिजनों को इनकी बातों को दिल पर नहीं लेना चाहिए। मेरा मानना है कि उनका भाव गलत नहीं है। बात कहने का तरीका अच्छा या खराब हो सकता है।

देखिए प्रधानमंत्री ने काशी विश्वनाथ को भव्य कॉरिडोर बनाने का कार्य किया है। मथुरा में भगवान का भव्य मंदिर बनाने के लिए बातचीत ही सबसे अच्छा विकल्प है। देश व धर्म के लिए मैं मथुरा विवाद में बातचीत के लिए तैयार हूं।

रोज औसतन 22 श्रद्धालु ले रहे नेत्रदान का संकल्प: संगम में आस्था की डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालु और कल्पवासी यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, द्रव्य व शय्या दान कर रहे हैं। दान की इसी परंपरा को समृद्ध करते हुए महाकुम्भ में पहली बार श्रद्धालु स्वेच्छा से नेत्रदान का संकल्प भी ले रहे हैं।

महाकुम्भ के सेक्टर छह बजरंग चौराहा स्थित नेत्र कुम्भ में आने वाले नेत्र रोगियों व अन्य श्रद्धालुओं में लगभग 22 लोग प्रतिदिन नेत्रदान का संकल्प पत्र भर रहे हैं। कहा जाता है कि आंखें न सोती हैं न मरती हैं बल्कि दानकर्ता की मृत्यु के बाद भी वे दूसरों को फिर से दुनिया देखने का मौका देती हैं। संगम में आस्था की डुबकी लगाने के बाद बड़ी संख्या में लोग नेत्र के इलाज व चश्मा के लिए नेत्र कुम्भ पहुंच रहे हैं। समन्वयक डॉ. कीर्तिका अग्रवाल के अनुसार पांच जनवरी से शुरू हुए नेत्र कुम्भ में अब तक 670 लोगों ने नेत्रदान का संकल्प लिया है। वहीं एक लाख पांच हजार से अधिक लोगों की आंखों की जांच की जा चुकी है। 7926 लोगों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन की सलाह दी गई है। 68460 लोगों को निःशुल्क चश्मा दिया जा चुका है। नेत्र कुम्भ में अभी तक हुए नेत्रदान का संकल्प पत्र भरने वालों

में सबसे कम उम्र के 12 साल के एक छात्र और 78 साल के एक बुजुर्ग भी शामिल हैं। मौनी अमावस्या के दिन तारापीठ के महंत सोमनाथ और छत्तीसगढ़ की दिव्यांग बालिका तपस्या ने नेत्रदान का संकल्प लिया। मोतीलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. एसपी सिंह के अनुसार नेत्रदान सबसे बड़ा दान है। इसके प्रति लोगों की जागरूकता से अंधता का निवारण संभव है। नेत्रदान सबसे अच्छे और सरल तरीकों में से है, जिसे बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हर व्यक्ति को नेत्र का अमूल्य उपहार दूसरे को देना संभव है। इसलिए नेत्रदान-महादान की संकल्पना को नेत्र कुम्भके माध्यम से लोग साकार कर सकते हैं।

दर्दः संगम लोअर मार्ग, नागवासुकी चौराहा (पश्चिमी पटरी) सेक्टर 17 स्थित शांति सेवा शिविर में श्रीमद्भागवत कथा के पांचवें दिन शुक्रवार को एक बांग्लादेशी संत ने शामिल होकर देवकीनंदन ठाकुर के समक्ष अपनी पीड़ा व्यक्त की। उन्होंने बताया कि उनके गुरुजी की विधर्मियों ने गोली मारकर हत्या कर दी और उनकी 15 हजार एकड़ जमीन पर जबरन कब्जा कर लिया गया है। यह घटना न केवल धर्म के लिए एक गंभीर चुनौती है, बल्कि समाज को जागरूक होने का आह्वान भी है। देवकीनंदन ठाकुर ने कहा कि मानव को केवल अपने पद, प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सुख-सुविधाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए। समाज और धर्म की रक्षा के लिए कार्य करना हर व्यक्ति का दायित्व है। उन्होंने कहा कि यदि समाज और धर्म सुरक्षित रहेगा, तभी मानव जीवन भी सुरक्षित रहेगा।

आत्मकेंद्रित जीवन जीने के बजाए हमें समाज के उत्थान और धर्म की रक्षा के लिए प्रयास करना चाहिए। उन्होंने सनातन बोर्ड के गठन की आवश्यकता पर जोर देते हुए 27 जनवरी को

होने वाली सनातन धर्म संसद में सभी से भाग लेने का आह्वान किया। कहा कि सनातन बोर्ड का गठन धर्म, मंदिरों और हमारी संस्कृति की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

संगम तट पर देखिए देशभर के दुर्लभ वाद्ययंत्रों का महाकुम्भ: उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के लोक एवं जनजातीय संस्कृति संस्थान की ओर से सेक्टर सात स्थित पवेलियन में देशभर के दुर्लभ वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनी लगाई गई है। हिमालय वर्ल्ड म्यूजियम सिक्किम, डूअर्स फोक आर्ट म्यूजियम लातागुरी-पश्चिम बंगाल, वैदेही कला संग्रहालय सहरसा तथा संजू सेन छत्तीसगढ़ के संग्रह से मंगाए गए 251 वाद्ययंत्रों में 50 से अधिक विलुप्तप्राय हैं।

16 जनवरी से 26 फरवरी तक आयोजित प्रदर्शनी में लुप्तप्राय वाद्ययंत्रों रशन चौकी, पूरनी बाजा, तुबकी, ढोल पिपहि, नारदी मृदंग और संथाली मानर को देखा जा सकता है। प्रदर्शनी के क्यूरेटर एवं डिजाइनर प्रो. ओम प्रकाश भारती के अनुसार भारत में लगभग तीन हजार से अधिक वाद्ययंत्रों का प्रचलन रहा है। इनमें लगभग छह सौ वाद्ययंत्र आज लुप्त होने की स्थिति में हैं।

भारत में आज एक तार (इकतारा, पेना, बेना) से सौ तार (रबाब) तक के साक्ष्य मिलते हैं। सही अर्थों में एक तार से सौ तार की यात्रा भारतीय समाज के बौद्धिक एवं सांस्कृतिक प्रगति को दर्शाता है।

इड्का या एडक्का कपास और लकड़ी से बना एक अवनद्ध ताल वाद्ययंत्र है। केरल के मंदिरों में होने वाले अनुष्ठानों में वाद्ययंत्र के सामूहिक प्रदर्शन में मुख्य रूप से उपयोग किया जाता है। कथाकली और मोहिनीअट्टम शास्त्रीय नृत्यों के साथ संगत के

लिए भी उपयोग किया जाता है। इसकी आवाज कर्णप्रिय होती है।

बांसुरी और शहनाई का संगम है ग्यालिङः यह धातु निर्मित नलीनुमा वाद्ययंत्र है, जिसका ऊपरी सिरा पतला तथा निचला सिरा खुला और चौडा होता है। यह शहनाई की तरह होता है। इसे लद्दाख में ज्यादातर खुबानी की लकड़ी से बनाया जाता है। बांसुरी की भांति इस पर छह छेद बनाए जाते हैं ताकि इन छेदों पर दोनों हाथों की तीन-तीन अंगुलियां रखकर विभिन्न प्रकार के सुर निकाले जा सकें।

बंगाल के बाउल गायक बजाते हैं गोपी जंत्रः यह एक बहुत ही सरल लोक वाद्ययंत्र है जिसे मुख्य रूप से बंगाल में बाउल गायक बजाते हैं। एकल तार को एक उंगली या एक पलेक्ट्रम से खुले तौर पर बजाया जाता है। कांटेदार बांस की गर्दन के दोनों हिस्सों को एक साथ दबाकर स्वर को काफी कम किया जा सकता है, जिससे तार का तनाव कम हो जाता है। लोक विश्वास के अनुसार इसका सम्बन्ध राजा गोपीचंद से माना जाता है। बकरी की खाल से ढका होता है। इसराज तीन सौ साल पुराना है, यह उत्तर भारत, मुख्य रूप से पंजाब में पाया जाता है, जहां इसका उपयोग सिख संगीत और हिंदुस्तानी शाखीय रचनाओं और पश्चिम बंगाल में किया जाता है। इसराज, दिलरुबा का एक आधुनिक संस्करण है। यह लकड़ी से बना पूरा ढांचा, अनुनादक बकरी की खाल से ढका होता है। चार मुख्य तार, पंद्रह सहायक तार और उन्नीस सारिकाएं होती हैं। घोड़े के बाल के गज से बजाया जाता है।

अमृत खोज की अनादि यात्राः मनुष्य अनादि काल से समुद्र मंथन से निःसृत अमृत कलश की खोज में तल्लीन है।

अन्वेषण की यथार्थ प्रक्रिया का ज्ञान न होने के कारण अमृत कलश के बदले विष कलश प्राप्त हो जाते हैं। अमरता के बदले मृत्यु और आनंद सिंधु के बदले दुख के सागर प्राप्त होते हैं। जन्म-मृत्यु, जरा-व्याधि से संत्रस्त प्राणी प्रतिक्षण उस साधन की खोज में है, जिसकी महिमा से विषों की आत्यंतिक निवृत्ति हो।

प्रारंभ में अमृत अन्वेषण को इस अनादि यात्रा में हम एकाकी ही रहे होंगे। इस क्रम से सदा ही असफल होते हुए, हमने मिलकर अमृत कलश को खोजना शुरू किया होगा। मिलकर सत्य, अमृत और सुख खोजने का क्रम ही मेला है। वैदिक सनातन धर्म का कुम्भ मेला अमृत-खोज का अनुपम, गौरववर्द्धक, विराट एवं प्रामाणिक निदर्शन है। समाज के प्रत्येक वर्ग के लोग कुम्भ में भाग लेकर अपनी अनादि अमरत्व तृषा को सुशान्त करना चाहते हैं। वैसे तो संसार के सभी मिलन जाने-अनजाने में अमृत-खोज की यात्रा में ही हैं। अतएव इनके समायोजक और संप्रेरक वैदिक विद्या की जिज्ञासा कोई महत्व नहीं रखती, परंतु कुम्भ मेला का अतुलनीय विराट स्वरूप ही वैदिक संप्रेरक विद्या की जिज्ञासा को जन्म देता है। क्या कुम्भ वेदों द्वारा समर्थित है? क्या पुराण कुम्भ के अस्तित्व के साक्षी है? क्या इतिहास कुम्भ को भी अपना समझते हैं?

वेदों में कुम्भ मेला का प्रेरक वाक्य प्रत्यक्षतः समुपलब्ध नहीं होता, तथापि अनादिकाल से वेद 'प्रामाण्याभ्युपगन्तृशिष्टये' का कुम्भ मेला सेवन ही मेला को प्रामाणिकता का कवच पहना देता है। जैसे न्यायविदों ने शिष्टाचारानुमितश्रुतियों विघ्न ध्वंसकामो मंगलमाचरेत्-समाप्तिकामो मंगलामाचरेत् द्वारा मंगलकरणीयता की प्रामाणिकता का समर्थन किया है, उसी प्रकार से यहां भी शिष्टाचारानुमित श्रुतियों के माध्यम से कुम्भ

महापर्व की प्रामाणिकता संपन्न होती है। श्रुति का आधार इस प्रकार होगा, अमृतकामैः कुम्भपर्वाणि आश्रयणीयानि।

होली और दीपावली की वैदिकता की संसिद्धि जिस रीति से महर्षि जेमिनि भाष्यकार शबरस्वामी ने किया है, उसी रीति से कुम्भ मेला की वैदिकता की भी सिद्धि सुलभ है। वहां का मूल भाव है, शिष्टों द्वारा संपादित होने वाले जिन कृत्यों का वेदों में प्रत्यक्षतः दर्शन नहीं होता, उनके लिए ऐसा समझना चाहिए कि उनकी प्रतिपादिका शाखाएं लुप्त हो गई हैं। स्कंदपुराण में लिखा है- तान्येव यः पुमान् योग सोऽमृतत्वाय कल्पते/देवा नमन्ति तत्रस्थान् यथा रंकाः धनाधिपान्।। जो व्यक्ति कुम्भ का लाभ प्राप्त करता है, उसको देवता उसी प्रकार नमन करते हैं, जैसे भिखारी किसीं धनवान को।

रामानंदाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य

महाकुम्भ में एकता, समता और समरसता का अद्भुत संगम दिख रहा है। इसमें हमारी युवा पीढ़ी की बड़ी भागीदारी बताती है कि किस प्रकार वह अपनी परंपरा व विरासत के साथ आधुनिकता को अपनाकर देश की जड़ों से जुड़ रही है।

नरेन्द्र मोदी, प्रधान मंत्री

युवा हुए हैं आकर्षितः पंच दशनाम जूना अखाड़ा के अंतरराष्ट्रीय प्रवक्ता और दूधेश्वर पीठाधीश्वर महंत नारायण गिरि कहते हैं कि देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी डॉक्टर, इंजीनियर आदि की डिग्री लेने वाले युवा संन्यास की राह पर अग्रसर हुए हैं। वे बताते हैं कि इस महाकुंभ में नागा संन्यासी बनाने के लिए जूना अखाड़े में सर्वाधिक पांच बार संस्कार कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिसमें आठ हजार से अधिक लोगों ने संन्यास लिया है। इसमें बड़ी संख्या में युवा भी शामिल हैं।

समाज सेवा के लिए धारण किया संन्यासः 24 वर्षीय कुणाल चौहान अब दशनाम नागा संन्यासी पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी में दिगंबर कृष्णा पुरी बन चुके हैं। उत्तराखंड के कोटद्वार निवासी कुणाल ने माइक्रो बायोलॉजी से स्नातक डिग्री हासिल की है। उन्होंने बताया कि सन्यास की राह आत्म संतुष्टि के लिए चुनी है। मां आशा देवी की प्रबल इच्छा थी कि बेटा समाज सेवा में समर्पित हो। चार साल पहले वृंदावन में राधा कुंड से अध्यात्म की शुरुआत की थी। महाकुम्भ में उन्हीं के साथ सत्यनारायण पुरी ने भी महंत पारस गिरि के सान्निध्य में दीक्षा ग्रहण की है। वे अध्यात्म की दुनिया में कठिन साधना के लिए नागा संन्यासी बने हैं। अब उनका घर, परिवार, नौकरी आदि से मोह भंग हो चुका है। उनके गुरु ही सर्वोपरि हैं।

मन में वैराग्य की अलखः ठाणे, महाराष्ट्र के 26 वर्षीय प्रशांत आनंद पठाडे संन्यास की दीक्षा ग्रहण करने के बाद अब दिगंबर सोमवर गिरि बन गए है। ये बताते हैं कि उनके पिता आनंद राव पठाडे पुलिस महकमे में डिप्टी कमिश्नर हैं। चार भाइयों में सोमवर सबसे छोटे है। इंटर पास करने के बाद से ही घर वाले दुबई जाने के लिए कह रहे थे, लेकिन उनका मन भौतिकता से इतर सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित करता रहा था। चार साल पहले जूना अखाड़े 13 मढ़ी के थानापति विष्णु गिरि से नासिक के त्रिंबकेश्वर नील पर्वत पर मुलाकात हुई। वहीं से उनके शरणागत हो लिए, 26 जनवरी को गुरु के आदेशों और अखाड़े के नियमों का पालन करते हुए संन्यासी बन गए।

गंगा मइया ने बुलाया, 103 साल की रमेला चली आईः महाकुम्भ में संगम स्नान की कामना को लेकर देश-दुनिया भर से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। उसी में एक ऐसी महिला भी दिखीं जो लाठी

के सहारे झुककर संगम की ओर बढ़ती जा रही थीं। उनके अगल-बगल परिजन चल रहे थे। उन्हें देखकर अनुमान लगाया कि यह महिला कम से कम 90 वर्ष की होंगी। मैंने उनसे जब पूछा, माताजी कहां जा रही हैं तो वे बोलीं, बेटवा गंगा मइया बुलाई हैं, उनकी कृपा से संगम नहाइ जात अहेन। फिर उम्र पूछा तो उन्होंने बताया कि 103 साल की हूं। रमेला देवी नाम है बेटा..। तब परिजनों से जानकारी हासिल करने के लिए बात कर ही रहा था कि वे लाठी लेकर दस कदम आगे बढ़ गई। तब उनके परनाती अनित तिवारी तेज से आवाज देते हैं, काकी रुक जा। अनित बताते हैं कि काकी हम लोगों से मौनी अमावस्या स्नान के लिए जिद कर रही थीं। उन्हें बहुत ज्यादा भीड़ का हवाला देते हुए खूब समझाते रहे। वह सिर्फ यही कहती थीं कि गंगा मइया बुला रही हैं। हमका तू पचे नाहीं ले चलत हया।

तभी रमेला देवी कहने लगीं, तोहका खूब आशीर्वाद बेटा। कृपा बा मइया की यही लिए सबके लेकर आई गई। परनाती ने बताया कि काकी की एक आंख खराब हो चुकी है, इसके अलावा अभी तक पूरी तरह से स्वस्थ हैं। काकी पहली बार 2001 के कुम्भ में आई थीं, उसके बाद 2013 के कुम्भ और अब महाकुम्भ में आई हैं। उन्होंने बताया कि दो महीने पहले सरयू स्नान करने और प्रभु श्रीराम का दर्शन करने की जिद कर बैठी थीं।

शिविर में वेद मंत्रों के साथ ही एआई का भी ज्ञान ले रहे वेदपाठीः महाकुम्भ में हाईटेक साधु-संन्यासी श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहे हैं तो वहीं हाईटेक वेदपाठी छात्र भी कौतुहल का विषय बने हुए हैं। डिजिटल इंडिया में हाईटेक वैदिक बटुक वेदों के कठिन मंत्र, पुराण, उपनिषद, गीता, अंग्रेजी, गणित से

लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तक की शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

एक से पांच फरवरी तक विश्व हिन्दू परिषद के शिविर में आयोजित वेद विद्यालयों के शिविर में अपनी मेधा का हुनर मनवाने वाले स्वामी नरोत्तमानन्द गिरि वेद विद्यालय झूसी के वेदपाठी छात्र तकनीक की मदद से वेद ग्रंथों, मंत्रों को संरक्षित करना और उन्हें वैश्विक स्तर पर साझा करना सीख रहे हैं।

शिक्षा मंत्रालय के अधीन महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान से संबद्ध विद्यालय के वेदपाठी छात्रों को कंप्यूटर की बुनियादी जानकारी के साथ ही एआई, कंप्यूटर पर हिन्दी व अंग्रेजी टाइपिंग, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, पावर पॉइंट, एक्सेल, पीपीटी, फोटोशॉप आदि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। वेदपाठी छात्रों को कंप्यूटर का प्रशिक्षण देने वाले अध्यापक अंजनी कुमार सिंह कहते हैं कि वेदों के संरक्षण, संवर्धन व उन्नयन में कंप्यूटर का ज्ञान अत्यंत जरूरी है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के तहत देशभर के वेद विद्यालयों को हाईटेक बनाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने हाल ही में महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय संस्कृत शिक्षा बोर्ड के साथ बैठक की है। जिसमें इन वेद पाठशालाओं की गुणवत्ता को ठीक करने, उन्हें दूसरे स्कूलों के समकक्ष तैयार करने को लेकर चर्चा हुई है। इस दौरान इन स्कूलों से जुड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए विद्यांजलि योजना की तर्ज पर काम करने पर भी जोर दिया गया। हालांकि अभी सरकारी स्तर पर इन विद्यालयों को कोई लाभ नहीं मिल रहा है।

वैदिक ज्ञान को ऐसे समृद्ध करेगी तकनीकः

■ तकनीक के जरिए वेद ग्रंथों, मंत्रों को संरक्षित करना सीख रहे।

■ आधुनिक तकनीक से वैदिक ज्ञान को बढ़ावा देने की मुहिम।

■ वेदों के हस्तलिखित और मुद्रित संस्करणों को स्कैन करके डिजिटल स्वरूप में संग्रहित किया जा सकता है।

■ कंप्यूटर के माध्यम से वेदों का विस्तृत और खोज योग्य डेटाबेस तैयार किया जा सकता है।

■ कंप्यूटर प्रयोग से विलुप्त हो रही पांडुलिपियों और लुप्तप्राय सामग्री को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी।

■ आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स (एआई) का उपयोग करके खोई हुई सामग्री के पुन निर्माण करने का प्रयास किया जा सकता है।

■ मंत्र, ऋचाएं या विषय के आधार पर सामग्री को खोज सकते है।

■ वेदों के मंत्रों का उच्चारण सही तरीके से संरक्षित करने के लिए ऑडियो रिकॉर्डिंग और साउंड एनालिसिस की जा सकती है।

■ वेदों में निहित ज्ञान का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद और व्याख्या करने के लिए कंप्यूटर पर आधारित सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा सकता है।

एक हाथ में एकतारा और दूसरे हाथ में मजीरा लिए नारायण-नारायण का जाप करने वाले नारद मुनि के चरित्र को हर किसी ने टेलीविजन धारावाहिकों और पौराणिक फिल्मों में जरूर देखा होगा। इस महाकुम्भ में आपको पहली बार नारद मुनि से सीधे साक्षात्कार करने का मौका मिल रहा है। मन में कोई भी सवाल हो, सीधे नारद मुनि से पूछिए और उसका सटिक जवाब भी मिलेगा। जी हां... यह सब पहली बार डिजिटल महाकुम्भ में संभव हो रहा है और यहां के नारद मुनि एआई से जनित हैं।

महाकुम्भ मेला के सेक्टर नंबर तीन में डिजिटल अनुभूति केंद्र को पूरी तरह से डिजिटल बनाया गया है। लगभग 60 हजार वर्गफीट में स्थापित इस केंद्र में देश के विभिन्न मंदिरों के लकड़ी से मॉडल बनाकर रखे गए हैं। पूरे डिजीटल अनुभूति केंद्र को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), वर्चुअल रिएलिटी (वीआर), ऑग्मेंटेड रिएलिटी (एआर) व एलईडी डिस्प्ले व होलोग्राम से सजाया गया है। यहां प्रयाग माहात्म्य और त्रिवेणी संगम जैसी कहानियां भी दिखाई जा रही है। यदि इन सारी कहानियों के बावजूद आपके मन में कोई जिज्ञासा रहती है या कोई प्रश्न पैदा होता है, तो सीधे एआई से अवतरित नारद मुनि से संपर्क कर सकते हैं। एआई- आधारित चैटबॉट के माध्यम से नारद मुनि उनके हर सवाल का जवाब दे रहे हैं।

पहली बार डिजिटल महाकुम्भ की अनुभूति : यहां युवाओं में उत्साह देखने को मिल रहा है। कानपुर के अंकुर अग्रवाल, योगिता मिश्रा, इंदौर के विनोद बंडवाला, जबलपुर की संगीता और वाराणसी के शिवांश मिश्रा ने बताया कि उन्होंने एआई से बने नारद मुनि से महाकुम्भ की आध्यामिक महत्ता, महाकुम्भ के अनुष्ठान, महाकुम्भ के धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व के सवाल पूछे। वहीं कुछ युवाओं ने स्वर्ग व नरक की प्रथा व सनातन धर्म से जुड़े सवाल पूछे।

महाकुम्भ की पौराणिक कथा से सीधे जुड़ रहेः डिजिटल अनुभूति केंद्र को एक इवेंट मैनेजमेंट फर्म ने तैयार किया है। फर्म के निदेशक मोहित वर्मा ने बताया कि केंद्र की प्रदर्शनी में आठ गैलरियां हैं, जो तीर्थ यात्रियों के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों को भी भारत के इतिहास व संस्कृति से रूबरू करा रही है। प्रोजेक्शन के माध्यम से समुद्र मंथन की कहानी को दर्शाया गया है। यहां

एआई व वीआर से बनी यमुनोत्री ग्लेशियर में हाथों लहराने पर लहरें पैदा होने की अनुभूति हो रही है।

महाकुम्भ के जरिए जलवायु सुधार के प्रयासः महाकुम्भ के जरिए जलवायु सुधार को प्रेरित करने के लिए 16 फरवरी को प्रयागराज में कुम्भ की आस्था और जलवायु परिवर्तन विषय पर जलवायु सम्मेलन होगा। इस आयोजन में धर्मगुरुओं, धार्मिक संगठनों, वैज्ञानिकों, नीति-निर्माताओं, पर्यावरणविदों, नागरिक समाज और उद्योग जगत के नेताओं की भागीदारी होगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ इसका शुभारंभ करेंगे। साथ ही मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह भी मौजूद रहेंगे।

धार्मिक विचारक गौर गोपाल दास, स्वामी मुकुंदानंद, शालिनी मेहरोत्रा (श्री राम चंद्र मिशन), सिस्टर 'मनोरमा (ब्रह्मकुमारीज), प्रो. चंद्रमौली उपाध्याय, आत्माबध्दानंद आचार्य हरिदास गुप्ता अपने विचार रखेंगे। पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन शमन में धार्मिक नेताओं की भूमिका, पवित्र नदियां, जल सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन पर्यावरण के अनुकूल धार्मिक स्थल और महाकुंभ में सतत आयोजन को बढ़ावा देने में धर्म का योगदान विषयों पर चर्चा होगी।

धार्मिक स्थल और मंदिर स्थिरता के आदर्श मॉडलः राज्य सरकार धार्मिक स्थलों और मंदिरों को स्थिरता के आदर्श मॉडल के रूप में विकसित करने की योजना बना रही है। इसके तहत सौर ऊर्जा पैनलों की स्थापना, वर्षा जल संचयन प्रणाली का कार्यान्वयन, कचरे के पुनर्चक्रण की व्यवस्था, सिंगल-यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध, पवित्र स्थलों के चारों ओर हरित क्षेत्र का निर्माण शामिल है। सरकार धार्मिक संगठनों को पर्यावरण और

जलवायु शिक्षा, अभियानों और व्यावहारिक पहलों को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। सेमिनार में आईफोरेस्ट के सीईओ चंद्र भूषण, डॉ. राजेंद्र सिंह, अमरेंदु प्रकाश, अनिल कुमार जैन, शिक्षाविद उपेंद्र त्रिपाठी, राजेंद्र रतूू (राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान) शामिल होंगे।

तीर्थराज प्रयाग की इस विशिष्ट यज्ञभूमि पर आकर हर साल लाखों श्रद्धालु पावन त्रिवेणी से सर्वस्व कल्याण की कामना करते हैं। गंगा-यमुना व अदृश्य सरस्वती हर किसी की मनोकामना पूरी करती हैं। सकल पुण्य की इसी मनोकामना से लगभग 35 साल पहले कन्नौज के तिरवा रोड, हुसैन नगर के रहने वाले अजय सिंह भदौरिया पहली बार संगम स्नान के लिए आए थे। उस समय उन्होंने मां गंगा से संतान प्राप्ति की कामना की थी, जिसे गंगा मइया ने पूरा किया। इसे महज संयोग माना जाय या गंगा की कृपा कि अजय सिंह की एक बेटी और एक बेटे का जन्म तीर्थराज प्रयाग में हुआ। वहीं दूसरी बेटी का जन्म सीतापुर के नैमिषारण्य में हुआ, यानी अजय की चार संतानों में तीन का जन्म तीर्थस्थानों पर हुआ, जबकि सबसे छोटे बेटे का जन्म घर पर हुआ।

महाकुम्भ में स्नान के लिए आए अजय ने बताया कि चाहे माघ मेला हो, अर्ध कुम्भ या महाकुम्भ, 35 साल से हर साल माघ में प्रयागराज स्नान के लिए आते हैं। उन्होंने बताया कि 1995 में जब यहां अर्द्धकुम्भ लगा तब स्नान के लिए आया था, उस समय उनकी बेटी गंगा का जन्म हुआ था। उसका प्रसव झुंसी में कराया गया था। उसके बाद 1998 में नैमिषारण्य गया था तब दूसरी बेटी का जन्म हुआ जिसका नाम गोमती है। उसके बाद 2001 के कुम्भ में जब प्रयागराज स्नान के लिए आया तब बेटे का

जन्म हुआ, जिसका नाम संगम है। सबसे छोटे बेटे राघव का जन्म 2004 में हुआ। । अजय ने बताया कि बेटियों की शादी हो चुकी हैं और अब वह ससुराल में रहती हैं। बेटा संगम अहमदाबाद में प्राइवेट नौकरी करता है। राघव इस समय बीएससी की पढ़ाई कर रहे हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के अजय को राधेश्याम रामायण कंठस्थ है। उन्होंने बताया कि बच्चों का तीर्थस्थान पर पैदा होना मेरे लिए मां गंगा का प्रसाद स्वरूप है।

महाकुम्भ में इस बार अब तक अलग-अलग दंपति के सात बच्चों का जन्म हो चुका है। इसमें सबसे पहला बच्चा 30 दिसंबर को पैदा हुआ जिसका नाम कुम्भ रखा गया। उसके बाद गंगा, यमुना, सरस्वती, शंभू, बजरंगी और कर्ण का जन्म हुआ। कर्ण का जन्म सेक्टर 14 के अस्पताल में हुआ।

कुम्भ का मेला यानी संस्कृति की निरंतरता का वाहकः प्रयाग में होने वाला कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति की विशालता और सामुदायिक एकजुटता का अद्वितीय प्रतीक है। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का महापर्व है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्संरचना का भी मंच है। कुम्भ मेला विभिन्न जातीय, भाषाई और आर्थिक समूहों के बीच एक ऐसा अस्थायी 'इक्वलाइजर स्पेस' प्रदान करता है, जहां भेदभाव मिटकर समानता और सहभागिता का भाव प्रबल होता है।

यह आयोजन सामूहिक चेतना और अनुष्ठानिक प्रदर्शनशीलता की अवधारणाओं को मूर्त रूप देता है, जहां लाखों श्रद्धालु गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्नान कर अपने पापों से मुक्ति पाने का विश्वास रखते हैं। कुम्भमेला भारतीय समाज के बहुलतावाद और समावेशिता की परंपरा को पुनरुस्थापित करता है, जो बिभिन्न समुदायों को एक धागे में

पिरोकर सह-अस्तित्व और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है।

प्रयागराज में आयोजित कुम्भ मेला भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का अनोखा संगम है। यह विश्व का सबसे बड़ा सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जहां आस्था, परंपरा और विविधता का अप्रतिम दृश्य देख सकते हैं। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के त्रिवेणी संगम पर आयोजित यह मेला न केवल आध्यात्मिक शुद्धि का प्रतीक है, बल्कि भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को गहराई से समझने का अवसर भी प्रदान करता है।

कुम्भ का जन समागम मात्र भीड़ नहीं है। कुम्भ की भीड़ में एक प्रकार का सामूहिक प्रतिज्ञान होता है, जो शहर की भीड़ में नहीं होता, बाजार को भीड़ से अलग। कुम्भ की भीड़ में साथ होने का भाव निहित होने के साथ उत्सव का भाव भी बना रहता है। इस भीड़ में लोग एक दूसरे से सम्बद्ध अनुभव करते हैं। उत्सव का भाव बोध एवं अनुभूति कुम्भ मेला की भीड़ में सम्भव है। कुम्भमेले के 'स्व' में अकेलापन नहीं है। वहाँ स्व और किसी दूसरे के साथ एकमेव है। वहीं दूसरों को 'दूसरा' नहीं देखा जाता, उसे अपना ही अंश समझा जाता है। अन्य स्थानों की भीड़ में एककाकीपन है।

कुम्भ में प्रेरणाएँ और अभिप्राय विभिन्न हो सकते हैं। हमारे यहाँ इसको लेकर कई दृष्टिकोण हो सकते हैं। पहला तो पारम्परिक दृष्टिकोण- यानी समाज को धर्म, अध्यात्म और संस्कृति की ओर प्रेरित करने का भाव, संतों-साधुओं से मिलने, जीवन की दिशा जानने, उनका दर्शन करने का उद्देश्य। पौराणिक काल से लेकर अब तक कोई भी मेला किसी एक ही अभिप्राय से

नहीं होता। सभी की प्रेरणाएं भिन्न-भिन्न होती हैं। एक-सी प्रेरणाएँ लेकर भागीदारी करना कठिन है। कुम्भ मेला मात्र धार्मिक यज्ञ नहीं है कि एक ही मंतव्य से हो, कुम्भ मेला का एक ही कारण संभव नहीं। जिनकी प्रेरणाओं को शुद्ध कह सकते हैं, वह है कल्पवासियों की। कल्पवासियों की आध्यात्मिक प्रेरणा में मेला के सांस्कृतिक आयोजन समाहित रहते हैं। प्रातः काल स्नान, दान, पूजा, पाठ, चिंतन और सायंकाल कथा श्रवण, रामलीला, रासलीला देखना और श्री राम, श्रीकृष्ण की लीलाओं, चरित्रों को आत्मसात करना। महतों, पीठाधीश्वरों, कार्यक्रमों के बहाने सरकार की, व्यापारियों और सेवा उपलब्ध कराने वालों की प्रेरणाएं नितांत भिन्न हैं। ऐसे में जिस संस्कृति का निर्माण होता है, उसके अनेक पक्ष हैं-यह धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, विशुद्ध राजनीतिक और व्यापारिक हो सकता है। आज का मेला, जो हम लोग देख रहे हैं, वह आधुनिक है।

कलारूप हमेशा मेला में गुंथे रहते हैं। मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का रूप धीरे धीरे बदलता और निखरता गया। चार-पाँच दशक पूर्व के कुम्भ आयोजन के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में तप और अध्यात्म प्रसंगों का प्रदर्शन होता रहा है। कुम्भ क्षेत्र में कथा-प्रवचनों में अब भी जन भागीदारी अधिक होती है। बाद में, अवतारों की लीलाओं का मंचन प्रारम्भ हुआ। यह मेला संस्कृति को अभिव्यक्त करने के लिए है, यह बहुत स्पष्ट है। सन् 1980 के आस-पास से धर्म-अध्यात्म प्रबल नहीं होकर विज्ञापन की संस्कृति और छवि निर्माण की राजनीति का प्रवेश हुआ। इसी के वाहक कुछ कला केन्द्र बने। उसी समय सोनी से प्रायोजित टेलीविजन, कॉरपोरेट के रूप में आया। कला के व्यापारी भी

सक्रिय होकर सांस्कृतिक अस्मिता के उत्पादन को कुम्भ मेला का हिस्सा बनाने लगे। भारत सरकार की भी सांस्कृतिक सक्रियता इन्हीं दिनों शुरू हुई।

इसका भी उद्देश्य अलग-अलग रहा है। कलाकारों या कला का प्रदर्शन करने वाले 'परफॉमर्स' व्यापक समाज तक अपनी बात कह कर लोकप्रियता एवं धनार्जन अर्जित करने की इच्छा से शामिल होते रहे हैं। समाज और कलाकारों की दृष्टि से देखा जाए तो यह बात स्पष्ट होती है कि हर कलाकार यह महत्वाकांक्षा लेकर कुम्भ मेला में भागीदारी करना चाहता है कि व्यापक समाज के सामने कहीं ऐसा अवसर मिले जहाँ वह अपने मूल्यों का प्रदर्शन कर सके। संस्कृति हमारे मूल्यों का प्रदर्शन है ही। कुम्भ मेला का प्रमुख उद्देश्य ही है संस्कृति की निरंतरता को वहन करना। यहाँ कला, संस्कृति, समाज एक भाव बोध से जुड़ जाता है। हर कलाकार त्रिवेणी, गंगा मईया, बड़े हनुमान जी को नमन करने के बाद ही कला प्रदर्शन प्रारंभ करता है। छोटे-छोटे मंचों पर मेले के शिविर में रामलीला, रासलीला होने के साथ कुम्भ मेला के बड़े क्षेत्र में फैला रहता है। शिविर में ही डांडिया रास, बिरहा, भजन, सामाजिक गीत के प्रदर्शन होते हैं। कभी दो-तीन साल में यही कलाकार लघु मंचों का निर्माण कर अपनी कला का प्रदर्शन कर लिया करते थे। संदर्भ का व्यवहार से पुराना रिश्ता है। संदर्भ क्या है, यह महत्वपूर्ण है। कुम्भ में संदर्भ से हटकर कला प्रदर्शनों की बात नहीं हो सकती। प्रदर्शन स्थल बदल जाने से भी संदर्भ बदल जाता है।

सरकारी संस्थाओं के अपने संस्थागत उद्देश्य हो सकते हैं जैसे सिर्फ भागीदारी, अनुदान का उपयोग, विभागीय सक्रियता प्रदर्शित करने का उद्देश्य। इसी के साथ व्यावसायिक मानसिकता से कुछ संदर्भ बदलते गए। शायद कुछ लोगों में यह सोच रही हो

कि खादी बिकती है तो कल्चर को भी बिकना चाहिए। तकनीकी उपलब्धता ने इसमें उत्प्रेरक का ही काम किया। नब्बे के दशक में भूले-भटके शिविर में सोनी कम्पनी ने कलर सैंपल कम्पनी के माध्यम से टेलीविजन सेट दान में दिए थे कहा जाता है उनके ब्लैक एंड व्हाइट टेलीविजन सेट नहीं बिक रहे थे। शिविर में उनके विज्ञापन चलते रहते थे जिसके माध्यम से लोगों को उपभोक्ता बनाने की चेष्टा होती रहती थी।

यह मानकर चलना चाहिए कि कुम्भ मेला में सरकार की संलिप्तता से उसका उद्देश्य राजनीतिक भी हो ही जाएगा। संस्कृति को विशुद्ध अर्थ में लेने वालों को लग सकता है कि उनके यहाँ होने की क्या प्रासंगिकता है लेकिन सामाजिक प्रक्रिया में यह होता रहता है। किसी चीज को राजनीति से अलग कर देख पाना असंभव लगता है। बीता कुम्भ मेला (अर्द्ध कुम्भ) 'इलेक्शन मेला' कहा गया। अर्द्ध कुम्भ की अंतर्वस्तु से कितना सम्बन्ध उस समागम का था, इस पर बहस हो सकती है लेकिन इसका दूसरा पक्ष यह भी रहा कि भारत के अलग-अलग क्षेत्रों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ वृहद स्तर पर यहाँ होने लगीं। पहले अधिकतर उत्तर भारत की ही प्रस्तुतियाँ दिखती थीं। इस केन्द्रीकरण का प्रमुख पक्ष रहा-प्रदर्शन। यह प्रदर्शन सेक्यूलर विचार को भी लेकर खुला हुआ था। सामाजिक चेतना के साथ कई सामाजिक प्रश्न भी अर्द्ध कुम्भके उस आयोजन में शामिल रहे। नितांत धार्मिक मठों और संगठनों के लिए भी कुछ न कुछ उस आयोजन में था। कई बड़े और श्रेष्ठ कलाकारों को देखना-जानना भी महत्वपूर्ण पक्ष था उस आयोजन का। सरकार की ओर से कुम्भ में बड़े और नामी कलाकारों को बुलाए जाने का सिलसिला बीती सदी के आखिरी दशक से शुरू हो गया था।

अब जो कुम्भ मेला का स्वरूप है, उसकी भूमिका सन् 1823-1824 के आसपास बन गयी थी। भारतीय समाज में

मजबूत पैठ बनाने के लिए प्रयागवाल के लोगों के साथ मिलकर मेला को उद्यम बनाया। ब्रिटिश सरकार के हस्तक्षेप के पहले आयोजन से अंग्रेजों ने 119-120 पाउंड का राजस्व जुटाया और सन् 1936 (अंग्रेज सरकार द्वारा आयोजित अंतिम कुम्भ आयोजन) में 27 या 32 हजार पाउंड लाभ की कमायी की। यहां के कुम्भ मेला अपने आयोजन में इतना विस्तृत पहले नहीं रहा। सन् 1823 में प्रयागवाल के सहयोग से ब्रिटिश सरकार ने सोचा कि प्रयाग कुम्भ को बड़ा रूप दिया जाय। भव्यता और विशालता के लिए प्रयांग कुम्भ के चयन के पीछे यहाँ के संगम और कुम्भ पर्व के प्रति गहरी जन आस्था का जुड़ाव था। अंग्रेजों का यह भी मंतव्य था कि साधुओं-संतों पर और उनकी सरकार के प्रति असहमति या विरोध करने वालों पर भी नजर रखी जाय। स्वास्थ्य का प्रश्न भी था। दवा वितरण और हैजा के टीकाकरण के लिए इतना व्यापक समूह अन्यत्र कहीं मिल पाना असंभव था। कुम्भ के दौरान कला प्रदर्शनों में शामिल कलाकारों, प्रेक्षक, दर्शक, भावक, रसिक, भक्त, श्रद्धालु के रूप में सम्मिलित होने वाले जन दोनों की अलग मानसिकता निर्मित होती है। कलाकारों के सामने लघु भारत होता है। ऐसा विविध छवि समूह अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। कलाकार अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की मनः स्थिति में रहते हैं। धार्मिक आध्यात्मिक अंतःप्रेरणा भी निश्चित है। कल्पवास करने व आने वाला गृहस्थ ही किसी सांस्कृतिक आयोजन का भावक भी हो सकता है। धार्मिक प्रेरणा न होगी तो समाज का कोई व्यक्ति कल्पवास के लिए आएगा क्यों? धार्मिक प्रेरणा के अभाव में सामान्य जन की भागीदारी असंभव है। अंग्रेजी शब्द है 'मेली' यानी झुंड हो जाना, सब कुछ मिल जाना। मेला का अर्थ ही है मिलना, एक दूसरे से स्पृश्य यानी सकारात्मक अर्थ में एक दूसरे से उलझना जिससे सामाजिक ताने-बाने की बुनावट हो सके। बीते कुछ दशकों के

आयोजनों में मनोरंजन अधिक केन्द्र में आ गया है। पहले इनमें जीवन सूत्र प्रमुख था। यह कुम्भमेला में नहीं पूरे समाज में हुआ है। अब सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मंडी है कुम्भमेला। पहले के कुम्भ मेलों में क्रॉफ्ट बाजार आदि में दैनन्दिन जीवन में कलारूपों की अभिव्यक्ति थी, अब वह 'मंडी का माल' हो गया है। भीड़ का एक हिस्सा विशुद्ध प्रदर्शन देखने वालों की होती है। सम्भव है कुछ कलाकार भी धार्मिक आध्यात्मिक अंतःप्रेरणा से मुक्त होकर प्रदर्शन करते हों। **प्रवीण शेखरः देश के अग्रणी नाट्य निर्देशकों में शुमार, अंतरराष्ट्रीय-राष्ट्रीय नाट्य समारोहों में बतौर निर्देशक भागीदारी की। कला एवं संस्कृति पर कई शोध, किताबें, बहुतेरे लेख आदि प्रकाशित हैं। राष्ट्रीय पुरस्कार, राज्य सम्मान, उ.प्र. संगीत नाटक एकेडमी सम्मान, सीनियर फैलोशिप, कुम्भ फेलोशिप, अवॉर्ड आफ एक्सीलेंस आदि कई सम्मानों से अलंकृत हैं।**

परंपरा की पगडंडी से आधुनिकता के राजपथ पर प्रभावी प्रगतिः कुम्भ की समझ को आधुनिक पाश्चात्य इतिहास लेखन और विशेष तौर पर औपनिवेशिक इतिहास-लेखन ने न केवल प्रभावित किया है, अपितु भ्रमित किया है। है। वस्तुतः इसे संपूर्णता में समझने के लिये हमें खगोल, ज्योतिष के साथ ही प्रतीकों, दर्शन के ज्ञान का सहारा लेना पड़ता है। अनेक शहस्राब्दियों के विदेशी आक्रमणों, आंतरिक युद्धों और प्राकृतिक आपदाओं ने तो हमारे दस्तावेजों को नष्ट किया ही, रही बची कसर औपनिवेशिक सत्ताधीशों ने हमारी अमूल्य साहित्यिक-सांस्कृतिक धरोहर को लूट कर पूरी की। अतः हमें अपने इतिहास की अनेक रिक्तियों पर अफ़सोस के साथ शांत रहना पड़ता है !

आइये एक घटना से अपनी बात को आगे बढ़ाया जाए- वर्ष 1918 में आंग्ल वाइसराय के साथ केन्द्रीय विधायिका के सदस्य महामना मदन मोहन मालवीय कुम्भ क्षेत्र के हवाई सर्वेक्षण पर थे। इतने लोगों के समागम को देखकर वाइसराय ने प्रश्न किया कि इतने लोगों को एकत्रित करने में तो बहुत खर्चा आता होगा। महामना ने मुस्कुराते हुए अपनी जेब से पत्रा निकालकर कहा, मात्र दो पैसे! पत्रे का मूल्य तब दो पैसा था। स्पष्ट है जब बृहस्पति स्थिर राशि मेष (144 वर्ष की अवधि में वृष) तथा सूर्य एवं चंद्र मकर में स्थित हों तब प्रयाग में कुम्भ का आयोजन होता है।

वैसे इलाहाबाद या प्रयाग में कुम्भ का उल्लेख न मिलने का कारण है वार्षिक माघ मास का आयोजन। यहाँ पौष पूर्णिमा से माघ पूर्णिमा तक एक माह के कल्पवास का प्रावधान है, जिसको हम सृष्टि के प्रारम्भ से जोड़कर देखते हैं। वस्तुतः सत् + त्रेता + द्वापर कलियुग बराबर हैं एक महायुग के और अनेक महायुग से एक कल्प बनता है।। । ऐसी मान्यता है कि जो भी इस एक माह की अवधि में सांसारिकता त्याग कर संन्यासियों का सादा जीवन जीता है, उसे एक कल्प का पुण्य प्राप्त होता है।

जैसे ही कल्प की बात आती है, हमें स्वतः पृथ्वी और मानव उत्पत्ति की कथा अर्थात् समुद्र मंथन की ओर लौटना पड़ता है। और वहाँ भी "कुम्म" ही मुख्य आकर्षण है। कैसे यह अमृत कुम्भ प्रकट हुआ और कैसे असुरों से सुरक्षित रखने के लिए उसे लेकर इंद्र पुत्र जयंत भागा और चार स्थानों यथा हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में अमृत कलश से बूँदें छलकीं। जयंत के दिशा-निर्देश हेतु देव-गुरु बृहस्पति तो थे ही, किंतु तापमान के संतुलन को कायम रखने के लिए सूर्य और चंद्रमा भी थे और यहीं आप इन ग्रहों का संयोग इस कथा में भी मिलता है। अतः इस

"कुम्भ" को समझने के लिए वेदांग ज्योतिष का अध्ययन आवश्यक होता है। वेदांग ज्योतिष में खगोल अधिक और फलित ज्योतिष न्यूनतम है।

शेष स्थानों पर तो वार्षिक कल्पवास का प्रावधान नहीं है. केवल प्रयाग में ही है क्योंकि इसका अर्थ ही ब्रह्माजी की वेदी है। वैसे तो इसे यज्ञ भूमि माना गया है किंतु हम इसके महनीय कार्य के संपादन को भी यज्ञ की ही संज्ञा देते हैं अतः ब्रह्माजी द्वारा मानव-सृष्टि की रचना का यही स्थान रहा होगा ?! दूसरी बात कि शेष स्थानों पर नदियों के तट पर ही आयोजन होता है जबकि प्रयाग में गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम पर इसका आयोजन इसको पृथक पवित्रता तथा सांस्कृतिक महानता प्रदान करता है। आइये कुछ शब्द इस अदृश्य सरस्वती पर। हमें स्मरण रखना चाहिए कि यमुना पहले पश्चिम वाहिनी थी और सरस्वती के साथ अरब सागर की ओर बहती थी किंतु हिमालय के ऊंचाई पकड़ने के कारण शिवालिक-हिमालय क्षेत्र में हुए प्राकृतिक परिवर्तन के कारण सरस्वती भूमिगत हुई और यमुना पूर्ववाहिनी होकर गंगा के साथ संगम करने लगी। इसी क्रम में सरस्वती की कोई सहायक नदी या धारा यमुना के साथ बहती रही होगी। चूंकि इतिहास की निर्मिति में लोकस्मृति की भी एक भूमिका होती है अतः इसी के आधार पर सरस्वती का उल्लेख गंगा-यमुना के साथ होता रहा !

वापस कुम्भ पर आयें तो हम कह सकते हैं कि धन्वंतरि जिस अमृतकुंभ को लेकर प्रकट हुए थे वह प्रत्येक धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजन में अपरिहार्य रूप से सम्मिलित होता ही है। विशेष पूजन, शादी आदि से लेकर मंदिरों के मुख्य द्वार पर कलश या कुम्भ स्थापित होते हैं ताकि हमें स्मरण रहे कि हम, हमारी यह पृथ्वी सब की उत्पत्ति जल से ही हुई है।

जहाँ तक लिखित इतिहास के प्रमाण हैं वे युआन चवांग या ह्युएं सांग (644 ई.) के काल या सातवीं शताब्दी से प्राप्य हैं। संभवतः निरंतर युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं ने पूर्ववर्ती प्रामाणिक दस्तावेजों को नष्टप्राय किया होगा। चीनी यात्री के बाद अल बेरुनी ग्यारहवीं शताब्दी (1017 ई.) में भारत आया। इन दोनों यात्रियों ने प्रयाग में स्नान-दान के साथ ही मोक्ष की आकांक्षा में पातालपुरी मंदिर की छत से वटवृक्ष होते हुए त्रिवेणी संगम में कूदकर आत्मोसर्ग का विवरण दिया है।

इन दोनों यात्रियों के बीच के काल में शंकराचार्य ने नागा अखाड़ों को एक सुनिश्चित स्वरूप प्रदान कर दिया था और इससे पूर्व वे चारों दिशाओं में पीठ स्थापित कर चुके थे तथा बौद्ध तर्क के आधार पर हिंदू धर्म-समाज की पुनर्स्थापना कर चुके थे। तुर्क-अफ़ग़ान काल में तीर्थ-यात्रा कर ने शायद इसके स्वरूप को सीमित किया होगा तो दूसरी तरफ इसके विरोध स्वरूप भक्ति आंदोलन ने इसे ऊर्जा और प्राणवायु भी प्रदान किया होगा। अतः जैसे ही आगे सांस्कृतिक सम्मिश्रण की शक्तियां प्रवाहित हुई होंगी, तब इन अवसरों पर राजकीय हस्तक्षेप नगण्य हुआ होगा ?

अकबर 1561, 1567, 1571-72 तथा 1574 में पूर्वी अभियानों के कारण प्रयाग आया और यहीं किले का निर्माण 1574 में शुरू किया जो 1583 में पूर्ण हुआ। किले का निर्माण करके उसके पश्चिम में परकोटे से घिरे एक शहर इलाहाबास का निर्माण किया जो शाहजहाँ के काल में इलाहाबाद और आंग्ल काल में अलाहाबाद (अंग्रेजी में) हो गया। 1580 में अकबर ने अपने साम्राज्य को सुव्यवस्थित करने की नीयत से प्रांतों या सूबों में विभक्त किया और इसी इलाहाबास कलेसूबा तथा कड़ा-मानिकपुर की जगह सूबे का मुख्यालय बनाया। संगम की रेती

पर होने वाली धर्मचर्चों और विभिन्न मतों के संवाद ने उसे 1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना के निर्माण की प्रेरणा दी थी।

अकबर के शासन काल में शहजादे सलीम को तथा शाहजहाँ के शासनकाल में उसके पुत्र दारा शिकोह को यहाँ का सूबेदार बनाया था। खैर सत्ता औरंगजेब के हाथ आई और उसने भी अकबर के काल में मठों-मंदिरों को दिए गए अनुदानों की पुष्टि ही की, संभवतः कोई कुम्भ या अर्ध कुम्भका अवसर रहा होगा अन्यथा अरैल के सोमेश्वर महादेव के अतिरिक्त बालाजी के मन्दिर चित्रकूट, महाकाल उज्जैन, गोस्वामियों वृंदावन तथा जंगमबाड़ी (बनारस) को क्योंकर अनुदान दिया या पुराने अनुदानों की पुष्टि की जबकि 1679 में मंदिरों के ध्वस्तीकरण का फ़रमान वो दे चुका था ?

अंग्रेजों के समय इलाहाबाद का किला 1801 में उनके प्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गया। इसी किले के नीचे माघ, अर्घ कुम्भ और कुम्भ का मेला लगता था अतः उनका प्रशासनिक एवं सैन्य नियंत्रण के अधीन ही यह आयोजन होता था। वे इस अवसर का लाभ उठाते हुए धर्मान्तरण हेतु अपने धार्मिक साहित्य का वितरण करते थे और व्यापारिक हितों के मद्देनज़र यहाँ मुफ्त में चाय वितरण करते थे- इसी तरह यह चाय पीने वाला मुल्क हो गया और अंग्रेजों के आर्थिक लाभ का स्रोत ! 1857 में चूँकि यहाँ प्रयागवालों या प्रागवालों (पंडों) ने क्रांतिकारी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था अतः उन्हें दंडित किया गया। कुछ को मृत्युदंड दिया गया और कुछ को कालापानी भी नसीब हुआ ! 1860 में आंग्ल प्रशासन ने प्रागवाल सभा का विधिवत पंजीकरण करके उनके साथ सशर्त समझौता किया। इसीलिए जब 'क्रिश्चियन ब्रदरहुड' के अध्यक्ष आर्थर फ़ोए ने नागाओं की नग्नता को मुद्दा बनाकर इसे प्रतिबंधित करने के लिए लिखा तो धार्मिक-सांस्कृतिक मान्यता के आधार पर उसे ख़ारिज कर दिया

(1888)। प्रसिद्ध लेखक और विद्वान मार्क ट्वेन ने 1895 के कुम्भ का वृहद चित्रण किया है। बीसवीं सदी का पहला चित्रण सिडनी लो 1906 में दिया जो प्रिंस ऑफ़ वेल्स के साथ भारत भ्रमण पर आया था। इन दोनों ने बारहवें वर्ष के कुम्भ आयोजन को प्राचीनतम काल से शुरू माना है! ट्वेन दो मिलियन तो लो तीन मिलियन यात्रियों के सम्मिलित होने की बात करता है।

1918 में प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान पड़े कुम्भ के अवसर पर आंग्ल सरकार ने इसे प्रतिबंधित या सीमित करने के लिए रेल यात्रा को प्रतिबंधित किया था। इसी प्रकार 1924 के 'अर्ध-कुम्भ के दौरान संगम में फिसलन का बहाना बनाकर वहाँ स्नान प्रतिबंधित कर दिया। महामना जानते थे कि कल्पवासियों के लिए तीन स्नानों (त्रिकाल संध्या हेतु) मध्याह्न का स्नान संगम पर करने की परंपरा थी अतः जनवरी 15 को मकरसंक्रांति के पर्व पर उन्होंने 'जल सत्याग्रह' प्रारंभ कर दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू जो उस समय इलाहाबाद म्युनिसपैलटी के अध्यक्ष थे, वे भी बांस-बल्ली के पीछे से सत्याग्रही बने रहे और मध्याह्न के सूर्य के के सर के ऊपर आते ही बांस बल्ली पार कर संगम में डुबकी लगाने में सफल हुए और कल्पवासियों का स्नान मार्ग प्रशस्त किया।

इसी प्रकार 1942 का कुम्भ भारत छोड़ो आंदोलन और द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ। आंग्ल सत्ता ने पेट्रोल-डीजल, राशन के अलावा इलाहाबाद की ओर यात्रा पर टिकट की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था। उन्हें गांधी जैसे अर्ध-नग्न फकीर के बढ़ते प्रभाव में इस मेले से अपने शासन के लिए राजनीतिक संकट की आशंका भी थी। अतः इस कुम्भ में एक मिलियन से भी कम लोगों ने स्नान आदि किया।

1954 का कुम्भ मेला स्वतंत्र भारत का पहला कुम्भ था अतः अत्यधिक उत्साह का संचार होना स्वाभाविक था ! इस मेले

में छह मिलियन से अधिक लोग एकत्रित हुए थे। इसकी एक और विशेषता थी राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद द्वारा किले के अंदर किया गया 'कल्पवास' और मेले में भगदड़ के कारण अनेक लोगों की मृत्यु। यह घटना मौनी अमावस्या अर्थात् फ़रवरी 3, 1954 को उस समय घटी जब नागाओं के पांव छूने के क्रम में भगदड़ मची। पंडित जवाहर लाल नेहरू शहर में (अपने घर, आनंद भवन) मौजूद थे अतः वे भी राष्ट्रपति के साथ घटनास्थल पर पहुंचे थे और तभी इस क्षेत्र में 'वीआईपी आवागमन' को प्रतिबंधित करने का आदेश दिया था। कुम्भ क्षेत्र 1,300 एकड़ तक विस्तृत हो गया था।

1977, 1989 तथा 2001 ई. के कुम्भ का क्षेत्र तथा तीर्थयात्रियों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। 1989 के कुम्भपर टेलीविजन का स्पष्ट प्रभाव था तो 2001 वाले कुम्भ पर कंप्यूटर क्रांति का प्रभाव था और ये परिवर्तन कुम्भके स्वरूप को भी परिवर्तित करने में कारक तत्व बने। और अब कृत्रिम मेधा और उपभोक्तावाद के युग में जो स्वरूप यह धारण कर चुका है वह तो होना ही था। यह एक अपरिहार्य प्रगति का संकेत है! 2019 के कुम्भ के बाद अनेक अवसरों का प्रथमदृष्टया बीबीसी के पूर्व संवाददाता मार्क टुली ने आउटलुक में गरीब गुरबों को इन पर्वों की आत्मा ही माना और उनके लिए अधिक सुविधाओं की वकालत की है! **प्रो.हेरम्ब चतुर्वेदी**

सृजन से विसर्जन की यात्रा है कुम्भः परमात्मा ने इस पवित्र घरा का सृजन ही लोकोपकारी मूल्यों के प्रसार हेतु किया है। हमारी जीवन पद्धति, पर्व-परम्पराओं और प्रार्थनाओं में व्यक्तिगत अभ्युदय के साथ-साथ समष्टि के सामुहिक कल्याण और लोकमंगल के स्वर समाहित होते हैं। परमात्मा ने गुण, कर्म

और विभाग के अनुसार इस सृष्टि का सृजन किया है और अपनी प्रकृति के अनुरूप सबका अपना अलग वैशिष्ट्य भी है। जैसे अग्नि की दाहकता और जल की शीतलता भिन्न-भिन्न कार्य हैं और दोनों की प्रकृति भी अलग है। सर्प, बिच्छू, विषधर आदि जीव भी पारिस्थितिक संतुलन और आहार श्रृंखला की दृष्टि से उपयोगी होते हैं। जैसी दृष्टि होगी तदानुकूल परिवेश की निर्मिति होती जाएगी। हमें अन्यों में केवल दुर्गुण और दोष ही न दिखें, अपितु दूसरों की श्रेष्ठता, सद्‌गुण और महानता भी अनुभूत होना चाहिएः परमार्थ प्रकृति का मूल स्वर है। धरती, अम्बर, जल, प्राण, पवन, प्रकाशादि के रूप में परमात्मा स्वयं भी पारमार्थिक कार्यों में संलग्न है। भगवान नारायण लोककल्याण की संसिद्धि के लिए मदरांचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण कर समुद्र मन्थन में कूर्म का रूप धारण कर देवगणों के सहायक हुए। जिसकी मूल भावना सृजन की ही थी। समुद्र मन्थन अर्थात् मनोमन्थन। हम जब भी मन्थन करते है तो निश्चित रूप से कोई संकल्प लेते हैं। यदि संकल्प शुभ व पारमार्थिक हो तो नियन्ता-नियति, परमात्मा-प्रकृति एवं सकल दैव सत्ता अभीप्सित लक्ष्य की संप्राप्ति में सहायक बनने लगते हैं। वेदों का सूत्र है तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु जो मनोजयी है वही अमृतत्व का अधिकारी है। निरभिमानिता ईश अनुग्रह और समस्त लौकिक-पारलौकिक अनुकूलताओं का मूल है। समुद्र मन्थन के समय निकला अमृत श्रम की ही निष्पत्ति थी। देव-दानव संग्राम में अमृत घट से छलकी बूँदों से महिमामंडित चार स्थानों यथा प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन एवं नासिक में कुम्भ राग गूँजता है। पर्व के दौरान कालगणना के अनुरूप पवित्र सलिलाओं का जल अमृत तुल्य हो जाता है। इसके अतिरिक्त वैचारिक मन्थन से सत्संग रूपी अमृत भी प्राप्त होता है।

आत्मपरिष्करण-आत्मपरिशोधन और जीवन निर्माण की आधारशिला है-सत्संग। सत्संग की महिमा अद्‌भुत अकथनीय है। विवेक जागरण, दिव्यता के प्रस्फुटन व भगवत्प्राप्ति आदि श्रेष्ठ पुरुषार्थों के मूल में सत्संग ही है। जीवन-सिद्धि रूपी पुष्प का अंकुरण सत्संग, स्वाध्याय और सद्विचारों के बीजारोपण द्वारा ही सहज सम्भव है। शास्त्रो में उल्लेख है कि सन्त-सत्पुरुषों के सान्निध्य में श्रद्धा-विश्वास की मथानी और सत्संग स्वाध्याय द्वारा उपार्जित 'विचार-अमृत ही अनन्तता अपराजेयता, अमृतत्व और जीवन सिद्धि का मूल है।

मनुष्य में अंतर्निहित श्रेष्ठता का प्रकटीकरण ही सत्संग की फलश्रुति है। जिस प्रकार क्षीर का मन्थन करने से उसमें दही-मक्खन, घृत आदि औषधीय गुणों से युक्त पदार्थ प्रकट होते हैं, उसी प्रकार सत्संग-स्वाध्याय और सन्त सत्पुरुषों के सान्निध्य में जीबन की सम्पूर्णता प्रकट होती है। भारत की कालजयी-मृत्युंजयी संस्कृति की दिव्य अभिव्यक्ति कुम्भ पर्व में गिरि-कन्दराओं, मठ-मन्दिरों और आश्रमों में रहने वाले लाखों तपः पूत संन्यासियों और सन्तों का दर्शन-सान्निध्य त्रिविध तापों का शमन करने वाला और पारलौकिक प्रयोजनों की सिद्धि करने वाला होता है, जो पर्व का अनुपम वैशिष्ट्य है। इस नश्वर जगत में 'ज्ञान, विवेक और विचार सत्ता ही चिरस्थायी है। सृष्टि के स्वाभाविक क्रम में जन्म विकास द्वारा और अन्त सभी अनन्त में विसर्जित होते रहते हैं। सनातन धर्म का वैशिष्ट्य और अप्रतिम सौन्दर्य आह्वान तथा विसर्जन की प्रक्रिया में सहज दृष्टिगोचर है। विसर्जन ही श्रेष्ठ सृजन की भूमिका तैयार करता है। हमारी संस्कृति में विसर्जन का अर्थ है पुनः सृजन।हमारे देश में विसर्जन के बाद भी पत्र, पुष्प इत्यादि को आदरपूर्वक सहेज कर रखने की

परम्परा है। आध्यात्मिक मूल्यों के प्रस्फुटन, निर्बाध ज्ञान परम्परा के विकास, जल संरक्षण व समष्टि के कल्याण को समर्पित कुम्भ पर्व इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जहाँ उत्सवकाल में अनेक धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और वैचारिक आयोजनों की श्रृंखला के लिए जनमानस का आह्वान कर स्वस्थ एवं सकारात्मक विचारों का सृजन किया जाता है। तदुपरान्त विश्व को प्रेम, शान्ति, सद्भाव और समरसता के अनेक सूत्र देकर कुम्भपर्व का विसर्जन कर दिया जाता है।

भारत देश उत्सव-प्रिय है, जो सदैव उत्सवों में रत नज़र आता है। जहाँ जन्म से मृत्यु तक हर गतिविधि, उत्सव का विषय है। जिसकी उत्सव-प्रियता केवल उल्लास और आनन्द से ही नहीं उपजती, अपितु इसमें आत्म-संघर्ष का गौरव, अपराध-बोध का तर्पण और पीड़ा का निरसन भी लक्ष्य होता है। इन्हीं उत्सवों के भीतर भारतीय समाज के विकास की यांत्रिकी भी छुपी हुई है। यदि किसी को सृजन और विसर्जन की कला सीखनी है तो संन्यासियों की जीवनशैली का दर्शन करना चाहिए। प्राची में प्रकाश-रश्मियों के साथ सूर्य का उदय, आरोहण और नित्य-प्रति अस्त होना इस बात का परिचायक है कि उद्भव, उत्कर्ष और पराभव प्रकृति का शाश्वत नियम है। वस्तुतः रात्रि के घने अंधकार में ही सूर्योदय के संकेत छिपे होते हैं। उसी प्रकार असफलता कुछ और नहीं अपितु सफलता प्राप्ति की संसूचना ही है। जीवन का प्रत्येक सूर्योदय हमें हमारे लक्ष्य और संकल्पनाओं की संपूर्ति के नवीन अवसर प्रदान करता है, इसलिए सदैव नव सृजन, नवोन्मेषी विचार एवं अवसरों का स्वागत करना चाहिए। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि भारत की सामाजिक

समरसता, सांस्कृतिक एकता और दिव्यता की अनुपम अभिव्यक्ति कुम्भ पर्व सृजन से विसर्जन की यात्रा है। **स्वामी अवधेशानन्द गिरी,आचार्य़ महामंडलेश्वर जूना अखाड़ा**

महाकुम्भ में सेवा भाव बन जाता है पवित्र दायित्व, महाकुम्भ केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह आध्यात्मिक चेतना, सेवा और मानवता का विराट संगम है। यह दिव्य अवसर आत्मशुद्धि और मोक्ष की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करता है, जहाँ असंख्य श्रद्धालु अपने सांसारिक बंधनों को त्यागकर ईश्वरीय प्रेम में लीन हो जाते हैं। यहाँ सेवा भाव न केबल एक सामाजिक कर्तव्य के रूप में, बल्कि आध्यात्मिक साधना के रूप में प्रकट होता है। जब मनुष्य निःस्वार्थ भाव से सेवा करता है, तो वह स्वयं को अहंकार से मुक्त कर दिव्यता के समीप पहुँचता है। इस दिव्य आयोजन में भोजन सेवा का विशेष महत्व है। विभिन्न भक्तों द्वारा श्रद्धालुओं के लिए अन्नदान किया जाता है, जहाँ साधारण से साधारण व्यक्ति भी अपने सामर्थ्य अनुसार भोजन उपलब्ध कराने का प्रयास करता है। यह केवल उदरपूर्ति का साधन नहीं, बल्कि आत्मिक संतोष और पुण्य अर्जन का मार्ग भी है। महाकुम्भ में सेवा भाव एक पवित्र दायित्व बन जाता है, जहाँ असंख्य हाथ एक-दूसरे की सहायता के लिए उठते हैं। विभिन्न साधु-संत, तपस्वी और भक्त इस पुनीत कार्य में संलग्न होकर अपने कर्मों को पवित्र करते हैं। सेवा का यह प्रवाह केवल दान या सहायता तक सीमित नहीं रहता। यह करुणा, परोपकार और आत्मिक उत्थान का प्रतीक बन जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी भूखे को भोजन कराता है, किसी रोगी का उपचार करता

है या किसी असहाय को सहारा देता है, तो वह केवल परोपकार नहीं करता, बल्कि अपने भीतर प्रेम, त्याग और समर्पण की लौ प्रज्वलित करता है।

जो हाथ भोजन ग्रहण करने के लिए उठते हैं, वही हाथ किसी और को भोजन देने के लिए भी तत्पर होते हैं। इस प्रकार, अन्नदान सेवा भाव का वह स्वरूप है, जहाँ देने वाला और लेने वाला दोनों ही समान रूप से ईश्वर की कृपा के भागी बनते हैं।

चिकित्सा सेवा भी महाकुम्भ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब करोड़ों श्रद्धालु एकत्रित होते हैं, तो अनेक वृद्ध असहाय, बीमार और दिव्यांग जनों को विशेष देखभाल की आवश्यकता होती है। सेवा में समर्पित भक्तगण और चिकित्सक निःस्वार्थ भाव से तन, मन और आत्या से पीड़ित व्यक्तियों की सहायता करते हैं। निःशुल्क औषधि वितरण, प्राथमिक उपचार और स्वास्थ्य परामर्श से न केवल शरीर को संजीवनी मिलती है, बल्कि पीड़ित आत्मा को भी सुकून प्राप्त होता है। यह सेवा केवल चिकित्सा तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सहानुभूदि और आत्मीयता की भावना को जागृत करने का माध्यम बनती है।

महाकुम्भ में सुरक्षा और व्यवस्था बनाए रखना भी एक महत्वपूर्ण सेवा कार्य है। श्रद्धालुओं की सुविधा और उनकी रक्षा के लिए अनेक समर्पित सेवक दिन-रात कार्यरत रहते हैं। भीड़ प्रबंधन, मार्गदर्शन और आपातकालीन सहायता की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए कई सेवाभावी लोग अपना योगदान देते हैं। विशेष रूप से वे लोग, जो अपने प्रियजनों से बिछुड़ जाते हैं, उन्हें सहायता केंद्रों के माध्यम से पुनः मिलाने का कार्य भी इसी सेवा भाव का एक उदाहरण है। यह न केवल एक सामाजिक

उत्तरदायित्व है, बल्कि आत्मीय प्रेम और बंधुत्व की भावना को भी जागृत करता है।

स्वच्छता भी इस पुण्य आयोजन का एक महत्वपूर्ण अंग है। आध्यात्मिक दृष्टि से स्वच्छता को पवित्रता से जोड़ा जाता है। इसीलिए सेवा भाव से प्रेरित अनेक साधक इस कार्य में संलग्न रहते हैं। गंगा तटों की सफाई, स्नान घाटों की व्यवस्था और पवित्र जल को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए असंख्य श्रद्धालु समर्पित रहते हैं। यह केवल बाहरी स्वच्छता नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धि का भी प्रतीक है। जब मनुष्य स्वच्छता के प्रति जागरूक होता है, तो उसका मन भी निर्मलता और सात्विकता की ओर उन्मुख होता है।

महाकुम्भ में आने वाले भक्तों के मार्गदर्शन और सहायता के लिए विभिन्न स्थानों पर सेवा केंद्र स्थापित किए जाते हैं। विशेष रूप से वृद्ध, दिव्यांग और नए आगंतुकों के लिए सहायता केंद्र अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। यहाँ निःस्वार्थ सेवा में रत व्यक्ति हर किसी के लिए मार्गदर्शक बनकर कार्य करता है, जिससे श्रद्धालु अपने आध्यात्मिक उद्देश्य की पूर्ति में बाधारहित आगे बढ़ सकें। यह केवल भौतिक सहायता नहीं, बल्कि आत्मिक सहयोग भी है, जहाँ सेवा करने वाला स्वयं को ईश्वर की कृपा का माध्यम समझकर अपने भीतर आनंद और संतोष का अनुभव करता है।

महाकुम्भ में सेवा करने वाले किसी मान्यता, जाति या संप्रदाय की सीमाओं में बंधे नहीं होते। वे केवल एक ही ध्येय को अपनाते हैं मानवता की सेवा करना, जो परमात्मा की सच्ची आराधना है। यहाँ व्यक्ति अपनी स्वयं की इच्छाओं से ऊपर उठकर केवल दूसरों की भलाई के लिए कार्य करता है। जिससे

उसका अंतर्मन शुद्ध और निर्मल बनता है। यह सेवा भाव केवल महाकुम्भ तक सीमित नहीं रहता है।

समाज में प्रेम करुणा व सहिष्णुता का संदेश भी प्रसारित करता है। इस महान आयोजन में किया गया प्रत्येक सेवा कार्य सामाजिक कर्तव्य नहीं बल्कि आध्यात्मिक उन्नति का एक मार्ग भी है। जब कोई व्यक्ति सेवा भाव से ओतप्रोत होकर किसी भूखे को भोजन कराता है, किसी रोगी का उपचार करता है, किसी असहाय को सहारा देता है या स्वच्छता के कार्य में अपना योगदान देता है तो वह केवल समाज की सेवा नहीं करता है बल्कि स्वयं को आध्यात्मिक रूप से परिपूर्ण करता है। सेवा का यह भाव ही महाकुम्भ को अनोखी पहचान देता है। जहां धर्म केवल पूजा और अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहता है। वह प्रेम, करुणा व परोपकार के रूप में प्रकट होता है।

यह सेवा और मानवता की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति भी है। यहां सेवा करने वाला और सेवा ग्रहण करने वाला दोनों ही ईश्वर की कृपा के भागी बनते हैं। यह आयोजन हमें सिखाता है कि सच्चा धर्म केवल अपनी मुक्ति की कामना करना नहीं है बल्कि दूसरों के कष्टों को दूर करने में निहित है। सेवा भाव से ओतप्रोत होकर यदि हम अपने जीवन में भी इसी सिद्धांत को अपनाएं तो संपूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखा जा सकता है। यहीं महाकुम्भ का वास्तविक संदेश है। सभी के प्रति प्रेम, समर्पण व सेवा की भावना को जाग्रत करना। जिससे यह धरा दिव्यता से आलोकित हो सके। **डॉं आशीष गौतम भैया जी, संस्थापक अध्यक्ष दिव्य प्रेम सेवा मिशन, हरिद्वार**

महाकुम्भ की गोद में, बच्चों सा उल्लासः

महाकुम्भ की गोद में, बच्चों सा उल्लास, सारी जनता लिख रही, लहरों पर इतिहास।

गंगा के तट पर जगा, ऐसा जीवन राग, तन तो काशी हो गया, मन हो गया प्रयाग।

महाकुम्भ को जी रहा, तीरथराज प्रयाग, जन्म निराला का हुआ, छिड़ा वसंती राग।

है पंचमी वसंत की, महाकुम्भ का साथ, गंगा यमुना गा रहीं, लिए हाथ में हाथ।

सरस्वती के मौन की, महिमा अपरम्पार, संस्कृति का संगम रचे, श्वेत श्याम जलधार।

बासमती से दिन हुए, समय पछोरे सूप, गंगा की निर्मल हँसी, लहरों सजती धूप।

गंगा में तैरे दिया, लहर लहर कचनार, ना ऐसा मेला कहीं, ना ऐसा त्योहार।

केवट की नावों भरा, पुण्य और वरदान, विनय पत्रिका हो गई, गगा की मुस्कान।

तीखी सदी में जिए, रही स्वय को बींध, कल्पवास में माँ जगे, बच्चों को दे नींद।

दुबली उसकी देह है, लेकिन पुण्य अपार, कैवल कथरी ओढ़ती, गमा जी की धार।

एक बार जो देख ले, गंगा जी का घाट, सचमुच कम लगने लगे, सारा पूजा पाठ।

सबके अपने पंख हैं, सबके अपने पांव, गंगा सबको दे रही, तारों वाली छांव।

गंगा ने मुह धो दिया, धुले भाव अनुभाव, भरद्वाज आश्रम जगा, पडे तुम्हारे पांव।

हम गंगा के लाडले, तनहा माँ की पीर, सीढ़ी पर जागे लहर, जागे दास कबीर।

खिचडी, मावस, पूर्णिमा जीभर जिए वसंत, जितने दुनियादार है उतने ऊचे संत।

एक शहर मन में जिए, और जिए इक गांव, उतनी ही रस्साकशी जितनी बूढ़ी नाव।

पूजा कीर्तन आरती, लहरें मछली कूल, सबकी आंखों में खिले, सोनजुही के फूल।

भजन, भूख, विरुदावली, जप तप सी उपवास, सब आपस में जुड़ रहे, जैसे सन्धि समास।

कहीं भूख की भगिमा, कहीं भोग पर भोग, कैसी पूजा प्रार्थना, कैसा योग वियोग।

ये गृहस्थ की जिदगी, ये संतों की सांस, गंगा रही निकालती, सबके मन की फांस।

यश मालवीय

यह प्रयाग है साधोः

कुछ दरिया, कुछ कश्ती में कुछ रेत में दीपक जलते हैं संगम का अलवेला मौसम, आओ हम भी चलते हैं।

भारद्वाज ऋषि का आश्रम, है चित्रकूट का मार्ग यही यह प्रयाग है साचो, इसमें द्वादश माधव मिलते हैं।

ऋृंग्वेरपुर यहीं, यहीं पर केवट का संवाद मधुर, माया जिसकी दासी राक्षस, उसी राम को छलते है।

अमृत कलश यहीं छलका था, महाकुम्भ का पर्व यहाँ धर्म अर्थ और काम मोक्ष के सब गुण इसमें मिलते हैं।

नागा, दंडी, सिद्ध, अघोरी, पंडे और पुरोहित भी वृद्ध, अपाहिज, बालक पैदल गंगा तट पर चलते हैं।

धूनी प्रवचन, भडारे हैं, दान पुण्य का क्षेत्र यहां इसमें लौकिक और अलौकिक ब्रह्मकमल भी खिलते हैं।

पौष, माघ पूर्णिमा मकर, मौनी वसंत की महिमा है, कल्पवास में सदगृहस्थ भी विधि विधान में ढलते हैं।

मल्लाहों के साथ लहर पर जल पंछी के कौतुक हैं, इसका वैभव पुण्य देखकर इंद्र देव भी जलते हैं।

जयकृष्ण राय तुषार

एक जगह पूरा भारतः

सभी गाव यहां हैं एक साथ सभी कस्बे, शहर और महानगर,
एक जगह पूरा भारत, भारत भीतर एक नया भारत।
दुनिया के सब देश बसे, दुनिया भीतर एक नई दुनिया।
एक साथ हैं जगत के लोग, वस्त्र-निर्वस्त्र का महालोक,
शीत भीगी रेत पर त्याग, तपस्या, सद्विचार का महासंगम।
महानदियों के मिलन भूमि पर साधक मनुष्यों का महासंगम,
अनेकता में एकता, वसुधैव कुटुम्बकम।
तारिकाएं, बंजारन सौंदर्य सबका है रेत,
यहां साधना का दिव्य और भव्य स्वरूप।
सर्वे भवन्तु सुखिन का महामंत्र साकार,
सनातन संस्कृति यहां लेती महा आकार।
अद्यतन से अद्यतन, पुरातन से पुरातन,
दमक रहा आभामंडल इसी काया में मोक्ष।
इसी लोक में स्वर्ग, वैराग्य का वैभव,
धन-धान्य, ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म-साधना।
तप का अद्‌भुत संयोग ग्रहों का है महायोग,

विकसित, सुरक्षित भारत का स्वप्न।
धरती और स्वर्ग का महामिलन,
तन ही नहीं मन भी घुलता यहां।
इसी देह में मिलता पुनर्जन्म,
मनुष्य होता है पुनर्नवा।
आओ महाकुम्भ में देखो, विश्वगुरु का कैसा जलवा!

श्रीरंग

शुभ मुहूर्त में संगम स्नान- दान भी वट वृक्ष के समानः सामाजिक व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के उद्देश्य से मनीषियों ने वर्ण आश्रम व्यवस्था बनाई थी। व्यक्ति के जीवन को 100 साल की उम्र को चार भागों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में बांटा गया। ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्या अध्ययन करने का विधान और गृहस्थ आश्रम में वैवाहिक संस्कार के माध्यम से प्रवेश करके अपने वर्ण के अनुसार कर्म करते हुए शेष सभी आश्रम के लोगों के लिए धार्मिक कृत्य करना, संतान उत्पन्न करना, धन अर्जित करना, उद्योग करना तथा दान करना। शास्त्रों के अनुसार यदि व्यक्ति सही मुहूर्त में संगम या पवित्र नदी में स्नान आदि से निवृत होकर जप, तप, यज्ञ, हवन अनुष्ठान करके अल्प मात्र भी दान करता है तो वट वृक्ष के समान बढ़ता चला जाता है।

ऋण मुक्त होकर दान करना सर्व श्रेष्ठः गृहस्थ आश्रम में रह रहे प्रत्येक व्यक्ति से ही शेष तीनों आश्रम के लोगों का दैनिक जीवन संचालित होने का विधान है। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ या संन्यास आश्रम हो सभी आश्रम के लोगों का जीवन दान के द्वारा ही संचालित होने का विधान बताया गया है। गृहस्थ आश्रम में रहते हुए व्यक्ति उद्योग, श्रम करते हुए तीनों आश्रमों के लोगों की सेवा करता है। पालन पोषण करता है उनको दान करता है

तो वह व्यक्ति अपने सभी प्रकार ऋण से मुक्त होकर सद्गति को प्राप्त करता है। यहां भी दान का विशेष महत्व बताया गया है।

धन का उपभोग नहीं करना नाश के समानः धन की तीन ही गतियां होती हैं जिसमें दान, भोग और नाश शामिल है। यानी धन का यदि दान नहीं हुआ या सही जगह धन का उपभोग नहीं हुआ तो उसे संग्रहित धन का अंतिम रूप नाश ही है। साथ ही शास्त्रों के अनुसार जिसके पास विद्या नही है, न तप है, न दान हैं और न ही उनके पास ज्ञान, शील व धर्म है। ऐसे व्यक्ति, मनुष्य के रूप में पशु के समान विचरण करते हुए इस पृथ्वी पर भार बने हुए हैं। संगम तट पर कल्पवास करते हुए पूर्ण नियमों का पालन करते हुए भागवत कथा का श्रवण करते हुए या अपने इष्ट देव के नाम का जाप करते हुए दान करता है उसे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।

संगम तट पर पूर्ण नियमों का पालन करते हुए कल्पवास करने वाले अपने इष्ट देव के नाम का जाप करते हैं, और दान करते हैं तो उन्हें अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।

बदला दान का स्वरूप, शामिल हुईं आधुनिक वस्तुएः आजकल दान के स्वरूप में परिवर्तन आया है। पहले परंपरागत रूप से जो ग्रहों उपयोगी वस्तुएं थीं। मूल रूप से आहार दान, औषधि दान, ज्ञान दान, कन्या दान, जीवनदान, गोदान, पिंड दान व उपयोगी वस्तुओं के दान को श्रेष्ठ माना माना गया है। दान का विधान तो आदि काल ऋग्वैदिक काल से है लेकिन जैसे-जैसे सभ्यता का विकास दान की वस्तुओं के स्वरूप में परिवर्तन होने लगा। आज के परिवेश में देखा जाए तो पिछले कुछ वर्षों से कल्पवासी अपने तीर्थपुरोहितों की जरूरत के अनुसार वस्तुओं को दान करते हैं। जिसमें मुख्य रूप से कार, बाइक, स्कूटी,

एलईडी, डबल बेड, फ्रिज, वॉशिंग मशीन, लैपटॉप, कंप्यूटर, आईफोन, मोबाइल, रेंजर साइकिल आदि शामिल है।

दान की परंपरा में शय्या दान श्रेष्ठः इसी तरह की परंपराओं एवं नियमों का पालन करते हुए आज भी लाखों की संख्या में लोग संगम तट पर कल्पवास करते हुए भागवत कथा, श्री शिव महापुराण आदि का श्रवण करके दान करते है। शास्त्रीय विधान एवं परंपरा के रूप में देखा जाए तो शय्या दान को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। शय्या दान में जीवन की उपयोगी सारी वस्तुओं का दान करने का विधान शास्त्रों में बताया गया है। सामानों की संख्या में देखा जाए तो 84 प्रकार के वस्तुओं के दान का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। **डाँ पंडित दिवाकर त्रिपाठी पूर्वांचली, निदेशक, उत्थान ज्योतिष संस्थान**

श्रद्धा से अल्प दान भी महाफल के समानः तीर्थ राज प्रयाग में त्रिवेणी तट पर केवल गंगा, यमुना व अदृश्य सरस्वती का संगम ही नहीं बल्कि ज्ञान, दान और भक्ति का भी संगम रहा है। वहीं संगम की रेती पर माघ मास में दान देने का विशेष महात्म्य रहा है। अनेक प्रकार के दान और उससे मिलने वाले फलों का वर्णन शास्त्रों में वर्णित है, जिसमें श्रद्धा रहित बड़े दान का अल्प फल व श्रद्धा सहित अल्प दान भी महाफल देने वाला बताया गया है। दान की इस विशिष्ट परंपरा को देखते हुए राजा-महाराजाओं ने प्रयाग की यज्ञ भूमि में आकर महादान किया। वहीं प्रयाग में सर्वस्व दान की परंपरा सम्राट हर्षवर्धन के समय काल से मिलती है, जो वर्तमान में शय्या दान के प्रचलित हुई। सर्वस्व दान में 84 तरह की वस्तुएं शामिल थीं लेकिन बदलते परिवेश में तीर्थ पुरोहितों की जरूरत अनुसार दान में दैनिक जीवन की उपयोगी वस्तुएं शामिल हो रही हैं। प्रयाग में दान की इस समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इस बार दिव्य-भव्य व

डिजिटल में महाकुम्भसंत-महात्माओं व देश के शीर्ष उद्योगपतियों के अलावा 2000 से अधिक सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं की ओर से अनवरत अन्न, वस्त्र व द्रव्य दान किया जा रहा है।

सम्राट हर्षवर्धन ने प्रयाग में किया था सर्वस्व दानः शोध संस्थान के निदेशक व इतिहासकार डॉ. प्रदीप कुमार केसरवानी के अनुसार सम्राट हर्षवर्धन पहली बार 613 ई. में प्रयागराज आए थे। उसके बाद जब 643 ई. में दानोत्सव आयोजित किया गया था। माना जाता है कि उस सयम प्रयागराज का छठवां कुम्भ था। उस दानोत्सव में चीनी यात्री व्हनेसांग और महाकवि बाणभट्ट भी शामिल हुए थे। वह दानोत्सव 74 दिनों तक चला था। दानोत्सव के 75वें दिन सम्राट हर्षवर्धन ने प्रयाग में अपना सर्वस्व दान कर दिया था। सर्वस्व दान के बाद उनके पास जब कुछ नहीं बचा तब अपनी बहन राजश्री के वस्त्रों को धारण कर अपने राज्य को प्रस्थान किए थे। डॉ. केसरवानी के अनुसार सम्राट हर्षवर्धन के सर्वस्व दान का दृश्य देखकर व्हनेसांग की आंखें भर आई थीं। दानोत्सव के बाद चीनी यात्री व्हनेसांग को सम्राट हर्षवर्धन ने संगम की रेती पर पैदल चलकर प्रयाग से विदा किया था। सम्राट ने उस समय एक सैन्य टुकड़ी व्हनेसांग के सम्मान में भेजी थी जो तिब्बत की सीमा तक गयी थी।

शय्या दान के साथ संगम से विदा होंगे कल्पवासी: तीर्थराज प्रयाग में दान की इसी विशिष्ट परंपरा के अनुसार 10 लाख से अधिक कल्पवासी जीवन-मृत्यु के बंधनों से मुक्ति के लिए इस समय साधना के साथ शय्या दान की परंपरा को भी निभा रहे हैं। अचला सप्तमी से शुरू हुआ शय्या दान का विधान माघी पूर्णिमा तक चलेगा। शय्या दान वही कल्पवासी करते हैं, जिनका तीन, छह व 12 साल के कल्पवास का संकल्प पूरा हुआ हो। लेकिन इस बार महाकुम्भमें 144 साल बाद पुण्य योग होने के

कारण निर्धारित संकल्प के बीच में ही शय्या दान कर रहे हैं। 1000 से अधिक तीर्थ पुरोहितों के सानिध्य में लाखों श्रद्धालु कर रहे कल्पवास कर रहे हैं। कल्पवास का विधान कोई भौतिक प्रवास नहीं बल्कि यह कठोर नियमों, अनुशासन और अनुष्ठानों की प्रतिबद्धता को माना जाता है।

इलाहाबाद डिग्री कॉलेज में संस्कृत विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राजेन्द्र त्रिपाठी रसराज के अनुसार दान तीन तरह के होते हैं नित्य, काम्य और नैमित्तक। गौशाला, बाग, तड़ाग, आदि के निर्माण काम्यफल देने वाले होते हैं। जो दान दिन-प्रतिदिन किए जाते हैं उसे नित्यदान कहा जाता है। स्वर्ग प्राप्ति, विजय, ऐश्वर्य, खी, पुत्र आदि प्राप्ति की इच्छा से जो दान किया जाता है काम्य दान कहलाता है। नैमित्तक दान तीन तरह का होता है। कालाक्षेप, क्रियाक्षेप और धनाक्षेप। अन्न, दधि, मधु, रक्षा की वस्तु, गौ, भूमि, सोना, हाथी आदि यह उत्तम पदार्थ उत्तम दान की कोटि में आते हैं। विद्या, शख, औषधि मध्यम वस्तुएं मध्यम दान की श्रेणी में आता है। इन वस्तुओं के अतिरिक्त वस्तुओं का दान अधम दान कहा गया है।

प्रयाग महात्म्य में दान में 84 वस्तुओं का उल्लेख मिलता है, जिसे देने से सकल पुण्य की प्राप्ति होती है। दान की इन वस्तुओं में कुर्ता, धोती, पगड़ी, टोपी, अंगोछा, बनियान, ओढ़नी, चौकी, आसन, हाता, जूता, लालटेन, चंवर, खड़ाऊ, चूल्हा, थाली, लोटा, बटुआ, गिलास, कटोरा, रस्सी, बाल्टी, चकला, बेलन, तवा, चिमटा, कलघुल, संडसी, कड़ाही, पंचपात्र, आचमनी, गोमुखी, माला, पंखा, चंदन, चम्मच, चंदन घिसने का होरसा, कलश, दीवट, घोड़ा, हाथी, पालकी, बैलगाड़ी, मंजन, इत्र,

साबुन, तेल, शीशा, कंघा, दातून, इलाइची, पीकदान, पानदान, कत्था, सुपारी, स सरीता, लौंग, सोने सोने व वा चांदी के आभूषण, सोने की प्रतिमा, चादी की प्रतिमा, देवताओं की प्रतिमा सहित हाथी, घोड़ा, नाग शामिल है। साथ ही नारियल, फल, सब्जी, आटा, नमल, दाल, चावल, घी, जौ, गुड़, हल्दी, गोदान, भूमिदान, भवन दान, कमंडल, घड़ी, छड़ी, कुश आसन, पूजा सामग्री शामिल है। **ईश्वर शरण शुक्ल**

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज, श्रद्धा सर्वोपरिः 1000 से अधिक तीर्थ पुरोहितों के सानिध्य में लाखों श्रद्धालु कर रहे कल्पवास।

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज के अंतिम अमृत स्नान पर्व बसंत पंचमी पर सुरक्षा, सुगमता और स्वच्छता का संगम देखने को मिला। एक तरफ जहां करोड़ों श्रद्धालुओं ने पूरी आस्था और संयम के साथ संगम तट पर आस्था की डुबकी लगाई, वहीं लोगों की सुरक्षा व भीड़ प्रबंधन को लेकर प्रशासन की जबरदस्त तैयारी रही। रिकॉर्ड संख्या में रेल, बस व विमान सेवा संचालन ने यात्रियों को सुगमता का अहसास कराया, वहीं डिजिटल नेविगेशन ने अलग-अलग घाट, मंदिर, पार्किंग आदि स्थलों पर आसानी से पहुंचने की राह दिखाई। मानवता की यह अमूर्त सांस्कृतिक विरासत भारतीय संस्कृति की गौरवशाली परंपरा, विविधतापूर्ण सामाजिक परिवेश और लोक आस्था का साक्षात्कार करा रही है।

महाकुम्भ की आभा से अभिभूत हुये विदेशी मेहमानः खास आयोजन है महाकुम्भ, मुझे बहुत खुशी है कि राज्य सरकार और विदेश मंत्रालय राजनायकों के लिए इस यात्रा की व्यवस्था

कर रहा है। महाकुम्भ मेला 2025 बहुत ही खास आयोजन है, इसलिए मैं हिंदू संस्कृति को समझाने के लिए वहां जाने को उत्सुक हूं। **केडची ओनो, जापान के राजदूत**

परंपराओं का पालन कर खुश हूं, मैं हमेशा यहां आना चाहता था, लेकिन कभी भी किसी कुम्भ में जाने का अवसर नहीं मिला। इस महत्वपूर्ण समारोह में भाग लेकर प्रसन्न हूं। यहां की परंपराओं का पालन करके बहुत खुशी भी हो रही है। सरकार द्वारा किये गये इंतजाम के लिए धन्यवाद।

मारियानो काउचिनो, अर्जेंटीना के राजदूत

भारतीय संस्कृति का दर्शन, मैं कई वर्षों से भारत से जुड़ी हुई हूं। यह खास और शुभ महाकुम्भ का समय है, यह सौभाग्य है कि मैं भारत में हूँ। यह दृश्य मेरी आँखों और आत्मा के लिए गौरवान्वित करने वाला है। यह निश्चित रूप से भारतीय धरोहर और संस्कृति को दर्शाता है, जिस पर गर्व होना चाहिए।

डायना मिकेविकिएने, लिथुआनिया की राजदूत

विदेशी पर्यटकों ने भीड़ प्रबंधन को सराहाः महाकुम्भ की भव्यता व दिव्यता देखने अमेरिका, रूस व मध्य एशिया के कई देशों से बड़ी संख्या में विदेशियों ने पहुंचकर संगम में पुण्य की डुबकी लगाई और बोले कि भीड़ को कुशलतापूर्वक नियंत्रित किया गया।

45 लाख से अधिक लोगों द्वारा वाटर एटीएम का उपयोगः महाकुम्भ नगर में जल निगम की ओर से लगाए गए वाटर एटीएम स्नानार्थियों के लिए काफी मददगार साबित हो रहे हैं। निगम की ओर से सभी 25 सेक्टरों में कुल 233 वाटर एटीएम लगाए गए हैं। इनके जरिये प्रतिदिन चौबीसों घंटे स्नानार्थियों को शुद्ध जलापूर्ति की जा रही है। अब तक 45 लाख से अधिक लोग इनका इस्तेमाल कर चुके हैं।

अविस्मरणीय अनुभवः यह सीएम योगी की प्रशासन व्यवस्था का ही परिणाम है कि करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु बिना किसी परेशानी और व्यवधान के संगम में स्नान कर पा रहे हैं। नागालैंड, जम्मू कश्मीर से लेकर केरल के अंतिम गांव से भी श्रद्धालु पवित्र त्रिवेणी में स्नान करने आ रहे हैं। महाकुम्भ में प्रशासन व्यवस्था पूरी तरह व्यवस्थित है, किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है।

स्वामी अधोक्षजानंद जी महाराज, गोवर्धन पीठाधीश्वर

महाकुम्भ की व्यवस्थाएं बहुत सुंदर हैं। योगी सरकार और मेला प्रशासन दिन रात मेहनत कर रहा है। उनकी कोशिशों का ही नतीजा है कि करोड़ों भक्त पूरी दुनिया से यहां आ रहे हैं और महाकुम्भ का आनंद ले रहे हैं। यहां सकारात्मक ऊर्जा का संचार चारों दिशाओं में व्याप्त है। मुख्यमंत्री जी की व्यवस्था को साधुवाद है।

स्वामी चरणाश्रीत गिरि महाराज, महामंडलेश्वर श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा और स्वर योग पीठाधीश्वर

मैंने 2013 और 2019 के महाकुम्भ और कुम्भ मेले भी देखे हैं लेकिन जैसी व्यवस्था इस महाकुम्भ की गई है वह भूतो न भविष्यति' की उक्ति पर पूरी तरह खरी बैठती है।यह महाकुम्भ अद्भुत, अविश्वसनीय है, प्रशासन पूरी तरह से दिन-रात श्रद्धालुओं की सेवा में कार्यरत है।

श्रीमहंत योगी रामनाथ जी महाराज

गंगा स्नान करके जीवन सफल हुआ। यहां के इंतजाम किसी से कम नहीं। केवल 35 दिनों में इस नगरी को खड़ा कर देना अद्भुत है। महाकुम्भनगर जादूनगरी है, इसे यहां आकर

महसूस किया जा सकता है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई देता हूं।

अनुपम खेर, अभिनेता

त्रिवेणी संगम में मुझे किसी बड़े त्यौहार की अनुभूति हो रही है। यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है कि मैं यहां आई। मुझे इस बात की खुशी है कि सब लोगों में इतना विश्वास है और सभी इतनी आस्था के साथ यहां पर आए हैं... उत्तर प्रदेश सरकार ने अच्छी व्यवस्था की है।

साइना नेहवाल, खिलाड़ी

डिजिटल खोया-पाया केंद्र द्वारा 13000 से अधिक लोगों की सहायताः महाकुम्भ में डिजिटल खोया-पाया केंदों से हजारों श्रद्धालुओं और उनके परिजनों को राहत मिली है। अब तक कुम्भ में बिछड़े हुए 13 हजार से अधिक लोगों को उनके परिवारों से मिलाने में सफलता मिली है। इनमें 64 फीसदी से अधिक संख्या महिलाओं की रही। यही नहीं पुलिस ने 23 विभिन्न राज्यों और नेपाल से आए श्रद्धालुओं का उनके परिवारों से सफलतापूर्वक मिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गंगा की निर्मल धाराः महाकुम्भ के दौरान गंगा की स्वच्छ और अविरल धारा के उद्देश्य की पूर्ति में जियो ट्यूब तकनीक काफी सहायक साबित हुई है। इस विधि से 23 अनटैप्ड नालों का पानी ट्रीटमेंट के बाद गंगा नदी में छोड़ा जा रहा है। पानी को और शुद्ध औरं डिसइन्फेक्ट करने के लिए ओजोनाइजेशन किया जाता है। इससे पानी में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ जाती है जिससे जलीय जीव-जंतुओं को भी फायदा होता है।

केंद्रीय अस्पताल में रिकॉर्ड ओपीडीः उत्तर प्रदेश के 76वें जनपद महाकुम्भ नगर के नाम एक नई उपलब्धि जुड़ गई है। इस जनपद केंद्रीय अस्पताल में 47 दिनों 50 हजार मरीजों की

ओपीडी हुई इतना ही नहीं, एक दिन में 4000 अधिक मरीज भी देखे गए हैं। एक दिन में सबसे अधिक मरीजों की ओपीडी मकर संक्रांति के प्रथम अमृत स्नान पर्व यानी 14 जनवरी को हुई थी। इसके अलावा अब तक 2500 मरीज भर्ती किए जा चुके हैं। अस्पताल के 10 बेड की आईसीयू में 100 से अधिक मरीजों की जान भी बचाई जा चुकी है।अस्पताल की माइनर ओटी में 1700 मरीजों का उपचार किया गया। लगभग 1200 मरीजों को प्लास्टर भी चढ़ाया गया। 100 बेड के केंद्रीय अस्पताल में ओपीडी की शुरुआत 13 दिसंबर से हुई थी। अस्पताल में आईसीयू के साथ इमरजेंसी, महिला व पुरुष वार्ड हैं। यहां पर 24 घंटे ओपीडी चलती है। अल्ट्रासाउंड, एक्सरे की जांचे भी मरीजों के लिए उपलब्ध है। अस्पताल की केंद्रीय पैथोलॉजी में 2 लाख से अधिक खून की जांचें की जा चुकी हैं।

स्वच्छता के दूतः मेरी ड्यूटी पार्किंग क्षेत्र में आठ घंटे की रहती है। बाहर से लोग आते हैं तो कहते हैं कि बहुत अच्छा काम कर रहे हो। यह सुनकर खुशी होती है। **विजय, फतेहपुर**

मुझे महाकुम्भ में काम करने का अवसर मिला। अन्य दिनों में सुबह छह बजे से ड्यूटी रहती है। लोग हमारी मेहनत की सराहना करते हैं, साथ ही साफ-सफाई में भी सहयोग करते हैं। **सीताराम, फतेहपुर**

दो महीने से ड्यूटी कर रहा हूं। परिवार में छह बच्चे हैं, बाकी दिनों में गांव में मजदूरी करता हूं। यहां आकर बहुत खुशी हो रही है। ड्यूटी के साथ लोगों की सेवा करने का मौका मिल रहा है। **मेवालाल, बांदा**

गंगा मैया की सेवा करने का मौका मिल रहा है। हमारा यही प्रयास रहता है कि कहीं गंदगी न दिखे। हमारी मेहनत को देखकर लोग खुश होते हैं तो हमें अच्छा लगता है।

सनी कुमार, चित्रकूट

संतों की अरबों-खरबों की सत्ता संभाल रहे परदेसी चेले: महाकुम्भ में संतों का वैभव हर किसी को आश्चर्य में डाल रहा है। लग्जरी कारों से लेकर महल सरीखे शिविर श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहे हैं। कई संत ऐसे हैं, जिनकी संपत्ति अरबों-खरबों में है। भारत ही नहीं कई देशों में उनके आश्रम हैं। अध्यात्म की राह चुनने वाले ये संत अपनी दुनियावी सत्ता शिष्यों को सौंप देते हैं। कुछ संत ऐसे भी हैं, जिनका साम्राज्य विदेशी शिष्य संभाल रहे हैं।

भारतीय वायु सेना के फाइटर पायलट से आध्यात्मिक गुरु बने पायलट बाबा लंबे समय तक अर्द्धकुम्भ और महाकुम्भ में श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र रहे। बीते वर्ष 20 अगस्त को उनके ब्रह्मलीन होने के बाद जूना अखाड़े के अंतरराष्ट्रीय संरक्षक श्रीमहंत हरि गिरि ने जगजीतपुर हरिद्वार स्थित पायलट बाबा के आश्रम में उनकी मुख्य शिष्या जापान की केको आईकावा (योगमाता केवलानंद) को उनका उत्तराधिकारी घोषित किया। केको आईकावा ने बड़ी संख्या में शिष्यों के साथ महाकुम्भ में संगम स्नान किया। पायलट बाबा के भारत एवं विदेशों में कई आश्रम और आध्यात्मिक केंद्र हैं, जिनका मूल्य सैकड़ों करोड़ में आंका जाता है।

पीएम से मुलाकात की: टोनी नाडेर ने रविवार को महाकुम्भ में आने से एक दिन पहले शनिवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से दिल्ली में मुलाकात की थी। उन्होंने प्रधानमंत्री के सामने महाकुम्भ के दिव्य आयोजन की तारीफ की थी। डेढ़ दशक पहले

टोनी ने संभाली थी जिम्मेदारी, दुनियाभर में भावातीत ध्यान के पर्याय रहे महर्षि महेश योगी के उत्तराधिकारी लेबनान के तंत्रिका वैज्ञानिक, चिकित्सक और वैदिक विद्वान डॉ. टोनी नाडेर हैं। महर्षि महेश योगी ने वर्ष 2000 में ही टोनी नाडेर को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। पांच फरवरी 2008 को ब्रह्मलीन हुए महर्षि महेश योगी के 70 से अधिक देशों में आश्रम और शैक्षणिक संस्थाएं आदि को संभाल रहे टोनी नाडेर की नेटवर्थ तीन खरब से अधिक आंकी गई है।

भगदड़ में जिसे मृत माना, वो तेरहवीं के दिन घर पहुंचा: महाकुम्भ के सबसे बड़े मौनी अमावस्या स्नान पर्व पर भगदड़ के बाद से लापता जीरो रोड के खूंटी गुरु घर लौट आए। हादसे में लापता खूंटी गुरु को मृत मानकर उनकी तेरहवीं की तैयारी हो रही थी। शाम को भोज के लिए मोहल्ले में तैयारी चल रही थी कि खूंटी गुरु ई-रिक्शा से उत्तरे। खूंटी गुरु को देखकर सभी भौचक रह गए।

कांग्रेस नेता अभय अवस्थी ने बताया कि खूंटी गुरु के परिवार में कोई नहीं है। 28 जनवरी को वे मौनी अमावस्या पर्व पर संगम स्नान करने गए थे। भगदड़ की घटना के बाद जब खूंटी गुरु कई दिन घर नहीं लौटे तो मोहल्लेवालों ने उनको मृत मान लिया और प्रतीकात्मक तेरहवीं की तैयारी शुरू कर दी। तेरहवीं में 13 ब्राह्मणों को भोज कराने की तैयारी हो रही थी। तैयारी के बीच खूंटी गुरु ई-रिक्शा से उत्तरे। खूंटी गुरु को देखने के बाद तेरहवीं का कार्यक्रम निरस्त कर दिया गया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर यह वाकया साझा करने वाले अभय अवस्थी ने बताया कि खूंटी गुरु अकेले रहते हैं। जीरो रोड बस अड्डे के सामने दोनों वक्त भोजन और नाश्ता करते हैं। परिवार में और सदस्य नहीं होने के कारण साथी मदद भी करते हैं।

36 घंटे बाद भी नहीं मिले संगम में डूबे दो श्रद्धालु: माघी पूर्णिमा के एक दिन पहले मंगलवार दोपहर संगम में डूबे दो श्रद्धालुओं का 36 घंटे बाद भी पता नहीं चल सका। देहरादून के दोनों श्रद्धालु संगम स्नान के बाद नाव में सवार होते समय डूब गए थे। जल पुलिस, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, पीएसी जवानों ने बुधवार को घंटों सर्च ऑपरेशन चलाया, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। हादसे के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। उत्तराखंड के देहरादून के एक ही परिवार के छह सदस्य, बेंगलुरु के एक परिवार के तीन लोग मंगलवार दोपहर बोट क्लब से एक ही नाव से संगम नौज श्यामसुंदर घाट पहुंचे। स्नान के बाद नाव पर सवार होते समय नाव पलट गई।

संकल्प पूरा कर संगम की रेती से विदाई शुरूः दिव्य-भव्य व डिजिटल महाकुम्भ का पांचवां प्रमुख स्नान पर्व माघी पूर्णिमा। इस पुण्य बेला में पूर्ण हुआ पुरातन परंपरा और जीवन मूल्यों का कल्पवास। एक माह के कल्प का अल्प प्रवास पूरा कर कल्पवासी विदा होने लगे।

माघी पूर्णिमा पर कल्पवासियों ने ब्रह्ममुहूर्त में डुबकी लगाने के बाद पूर्वजों को नमन किया। क्षौर कर्म के साथ तीर्थ पुरोहितों के सान्निध्य ने हवन-पूजन कर यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, द्रव्य आदि दान किया। हालांकि मेला क्षेत्र में साधन उपलब्ध न होने के कारण कुछ कल्पवासी अभी एक-दो दिन शिविर में रुकेंगे। वहीं कुछ कल्पवासी त्रिजटा स्नान करके प्रस्थान करेंगे। कल्पवासी एक माह का कल्पवास पूरा करने के बाद त्रिवेणी स्नान कर एक दूसरे को तिलक लगातीं सुहागिनें।

दुर्लभ पुण्यकाल की अलौकिक अनुभूति: महाकुम्भ में लाखों कल्पवासियों को उनकी भक्ति साधना में इस बार अमृत रूपी जो तत्व प्राप्त हुआ वह अनंत है। कल्पवास अत्यंत सुफल

रहा। इस बार महाकुम्भ में 144 साल बाद ग्रहीय योग का ऐसा पुण्यकाल रहा, जिसकी अलौकिक अनुभूति नया जीवन-नई ऊर्जा से फलीभूत किया।

समय से पूर्व शय्या दान कर मांगा आशीष: कल्पवास में विधान है कि संकल्प की निश्चित अवधि एक, तीन, छह व 12 साल पूर्ण होने कर शय्या दान करना चाहिए। लेकिन अद्भुत योग के चलते इस बार लगभग एक लाख कल्पवासियों ने संकल्प अवधि के मध्य में ही शय्या दान किया और आशीष मांगा।

तुलसी का बिरवा ले गए साथ: जिन कल्पवासियों के पास साधन था वे अपनी गृहस्थी वाहनों पर लादकर ले गए। कल्पवासी अपने साथ भगवान शालिग्राम, आसन और तुलसी का पौधा ईश्वर के प्रसाद स्वरूप साथ लेकर गए। कल्पवास आरंभ करने पर उन्होंने शिविर के बाहर जौ बोया था उसका कुछ अंश गंगा में समर्पित कर धन-धान्य की कामना की।

विदाई की बेला में नम हो रहीं आंखें: माह भर साथ रहने वाले कल्पवासियों की विदाई की बेला आई तो भावुक हो गए। एक-दूसरे के गले मिले तो आंखें नम हो गई। कल्पवासियों ने मोबाइल नंबरों का आदान-प्रदान कर सुख-दुःख में साथ निभाने और अगले साल मिलने का वादा भी किए।

महाकुम्भ में 'श्रवण कुमार' संग 'राम-भरत' सा अनुराग: आस्था के इस मेले में मानवीय संबंधों के रंग बिखरे हैं। देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु हजारों किमी की दूरी तय कर पुण्य की डुबकी लगाने आ रहे हैं। घर से लेकर संगम पहुंचने तक में तमाम परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।कोई अकेले आ रहा है तो कोई पूरे परिवार व समूह के साथ। जो लोग चलने में सक्षम हैं उनके लिए तो संगम आना आसान है लेकिन बुजुर्ग व असहाय लोगों का संगम में डुबकी लगाना सपने जैसा है। बिखरते

सामाजिक व पारिवारिक ताने-बाने के बीच महाकुम्भ में कहीं श्रवण कुमार दिख रहे हैं तो कहीं राम-भरत सा प्रेम।

पुण्य स्नान के लिए भोपाल से आए सोनू और चंदर के बीच राम-भरत सा स्नेह देखकर श्रद्धालु बरबस कह रहे थे कि भाई हो तो ऐसा। दिव्यांग चंदर (27) अपने छोटे भाई सोनू की पीठ पर बैठकर सेक्टर-19 में इस्कॉन शिविर के निकट धार्मिक पुस्तकों की खरीदारी कर रहे थे। चंदर ने बताया कि बचपन में पोलियो हो गया था इसलिए चलने में असमर्थ हूं। कोशिश करके दोनों हाथ में जूता पहनकर घुटने के बल चंद कदम चल पाता हूं। मैं घर से बाहर जहां भी जाता हूं वहां भाई सोनू ही पीठ पर लेकर मुझे आते-जाते हैं। इसी तरह कटनी मप्र से स्नान के लिए आए 80 वर्षीय सियाराम चलने में असमर्थ हैं। बुधवार रात छिवकी जंक्शन पर उतरने के बाद सियाराम को उनके बड़े बेटे अशोक कुमार अपनी पीठ पर बैठाकर संगम पहुंचे।

बुजुर्ग मां को घर में बंद कर सास-ससुर संग चला गया

कुम्भ: लोक हो या शास्त्रीय परंपरा सभी जगह स्पष्ट कहा गया है कि माता-पिता की सेवा से बढ़कर न दुनिया में कोई पुण्य है न धर्म। लेकिन बुधवार को पुण्य बटोरने के नाम पर रामगढ़ में जो अमानवीय मामला सामने आया वह विचलित करने वाला है। दरअसल, रामगढ़ के अरगड़ा में अखिलेश कुमार तीन दिन पहले अपनी 65 साल की मां संजू देवी को घर में बंद कर सास-ससुर, पत्नी-बच्चों के साथ प्रयागराज कुम्भ स्नान करने चला गया। तीन दिन बाद बुधवार को जब मां भूख से बिलबिलाने लगी तो घर के अंदर से आवाज लगायी। पड़ोसियों ने आवाज सुनकर पुलिस को खबर किया। साथ ही वृद्धा संजू देवी की बेटी को भी सूचना दी गई। बाद में पड़ोसियों की मदद से घर का ताला तोड़कर वृद्धा को बाहर निकाला गया। बेटी ने सीसीएल के नईसराय अस्पताल में भर्ती कर मां का इलाज करवाया। इस

तरह की अमानवीय घटना सामाजिक और पारिवारिक संरचना पर कई सवाल भी खड़ा करती है। वार्ड पार्षद संगीता देवी के प्रतिनिधि रजीत पासवान ने बताया कि अखिलेश कुमार तीन दिन पहले अपनी मां संजू देवी को घर में बंद कर पत्नी तथा बच्चों के साथ कुम्भ चला गया। संजू देवी ने दो दिन तो किसी तरह काट लिया पर तीसरे दिन भूख के कारण उनका धैर्य जवाब दे गया। वह घर में बिलखने लगी।

संजू देवी ने बताया कि दो दिन तक उसने चूड़ा खाकर भूख मिटाने की कोशिश की, लेकिन तीसरे दिन भूख के मारे उसके धैर्य ने जवाब दे दिया तब वह घर के अंदर से ही चिल्लाने लगीं। आसपास के लोग बेटे के इस कृत्य की निंदा कर रहे हैं। हिन्दुस्तान' से फोन पर बातचीत में बेटे अखिलेश कुमार ने बताया कि मां की तबीयत खराब थी। इसलिए कुम्भनहीं आया। मां की सहमति मिलने के बाद ही प्रयागराज आया हूं।

महाकुम्भ पहुंचकर पत्नी के नाम की डुबकी लगाई: मुंबई के रहने वाले चंद्रकात साह की पत्नी अमृता ने दस वर्ष पहले संगम में डुबकी लगाने की इच्छा जाहिर की थी। पत्नी की इच्छा तो पूरी नहीं हो पाई, लेकिन महाकुम्भ ने चंद्रकांत को अवसर प्रदान किया संगम आने के लिए। उम्र के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुके चंद्रकांत अकेले नहीं आ सकते थे तो वे अपने साथ अपनी सालियों रेखा पारिक और शोभना सेठ को लेकर पहुंचे। उन्होंने पत्नी के नाम से पांच डुबकी लगाई और संगम का पवित्र जल भी लेकर गए। चंद्रकात प्लास्टिक का कारोबार करते हैं। पत्नी का निधन दस वर्ष पहले हार्टअटैक से हो गया था।

सोशल मीडिया पर 80 लाख की पहचान बनी बुद्ध प्रतिमा: महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं को विभिन्न शिविरों में लगी देवी-देवताओं की दिव्य प्रतिमाएं आकर्षित कर रही हैं। इन्हीं प्रतिमाओं से एक भगवान बुद्ध की है जो इन दिनों सोशल

मीडिया पर छाई हुई है। हिमालय बौद्ध संस्कृति संरक्षण सभा और उत्तर प्रदेश संस्कृति विभाग के अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध शोध संस्थान की ओर से सेक्टर 18 में स्थापित बौद्ध विशेष संगम शिविर के बाहर लगी पीले रंग की गांधार शैली की भगवान बुद्ध की खड़ी प्रतिमा लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रही है। प्रतिमा के साथ फोटो और सेल्फी लेकर लोग अपने फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम और दूसरे सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा कर रहे हैं। शिविर के संयोजक और दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. चंदन कुमार ने बताया कि गूगल से रिपोर्ट लेने पर पता चला है कि 80 लाख से अधिक लोगों ने इस प्रतिमा को अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर साझा किया है. जो निश्चित रूप से भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धालुओं की आस्था और आकर्षण को दर्शाता है।

यह प्रतिमा सेक्टर 18 में एक तरह का लैंडमार्क बनी हुई है और लोग भटकने पर एक-दूसरे को इसी प्वाइंट पर मिलने के लिए बुलाते हैं। पूरे मेले में चार लाख से अधिक लोगों ने शिविर में आकर बुद्ध धर्म और संस्कृति को करीब से जाना-समझा। यहां श्रद्धालुओं के लिए प्रदर्शनी भी लगाई गई है जिसमें लोग काफी रुचि ले रहे हैं।

11 देशों के लामा और भिक्षु शिविर में आएः महाकुम्भ के दौरान इस शिविर में 11 देशों के बौद्ध लामा और भिक्षु का आगमन हुआ। डॉ. चंदन कुमार के अनुसार रूस, मंगोलिया, कोरिया, नेपाल, भूटान, बर्मा, वियतनाम, कंबोडिया, तिब्बत, जापान और श्रीलंका से लामा और भिक्षुओं ने आकर बौद्ध और सनातन धर्म के आपसी संबंध को मजबूत बनाने का काम किया।

अपने बारे में समाज में बनी भ्रांतियां दूर करेंगे अघोरीः आमतौर पर तंत्र-मंत्र और रहस्यमयी शक्तियों का पर्याय माने-जाने वाले अघोरियों को भी अपनी छवि की चिंता सताने लगी

है। महाकुम्भ में सेक्टर 18 स्थित अखिल भारतीय अघोर अखाड़ा ने अपने 'मन की बात' जन-जन तक पहुंचाने का निर्णय लिया है। इसके लिए प्रत्येक राज्य और जिले में कमेटी गठित की जाएगी और अधोरियों को लेकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों को दूर करेंगे।

अखाड़े के माहासचिव अघोरी पृथ्वीनाथ ने बताया कि अघोरियों को लेकर समाज में तरह-तरह की भ्रांतियां व्याप्त हैं, जैसे अघोरी शव खाते हैं, ऊपरी फेर करते हैं, भूत-प्रेत, आत्माओं का साथ होता है। कुछ बहरूपिए काले वस्त्र डिज़ाइन सीधे-सादे लोगों को डराने के साथ उनका आर्थिक शोषण करते हैं। इसके चलते समाज में अघोरियों के खिलाफ बातावरण बनता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि असली अघोरी कभी डरावने नहीं होते, बल्कि वे बिल्कुल सरल और निष्कलंक होते हैं, जो मेले में खोपड़ी या हड्डियां लेकर घूमते हैं, वे तांत्रिक हो सकते हैं, परंतु अघोरी नहीं। अघोरी कभी अपनी पूजा खुले में नहीं करते, बल्कि गोपनीयता बनाए रखते हैं।

डरावने नहीं, बल्कि सरल होते अघोरी। नाथ सम्प्रदाय से जुड़ाव रखने वाले अघोरी साधना पद्धति में भौतिक जीवन से अलग कठिन प्रयोग करते हैं। वे श्मशान, जंगलों और अखिल भारतीय अपोर अखाड़ा निर्जन स्थलों में रात्रिकालीन साधना करते हैं, जहां कोई सांसारिक मोह नहीं होता। अघोरी सूक्ष्म मंडलों में मौजूद रहस्यमयी शक्तियों पर अनुसंधान करते हैं और साधनाओं के माध्यम से परम सत्य की खोज में रहते हैं। वे आत्माओं को मुक्ति देने की प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं।

महाकुम्भ में स्नान करने वालों ने भरा रेलवे का 'कलश'

प्रयागराज संगम, प्रयाग स्टेशनों के लिए एक लाख 61 हजार टिकटों की बिक्री हुई। इनमें जनरल टिकटों की बिक्री ही एक

लाख 3 हजार है। आरक्षण कराकर यात्रा करने वाले श्रद्धालु भी कम नहीं रहे। 58 हजार से ज्यादा यात्री विभिन्न ट्रेनों में आरक्षण कराकर संगम तट पहुंचे। मुरादाबाद रेल मंडल में कुम्भ मेले में सबसे ज्यादा जनरल व आरक्षित टिकट बरेली से 68 हजार व मुरादाबाद में 19716 टिकटों की बिक्री हुई। यह आंकड़ा पौष पूर्णिमा से माघी पूर्णिमा (12 फरवरी) तक करीब एक महीने भर का है। जबकि ओवरआल पूरे मंडल में भी टिकट बिक्री का नया रिकार्ड कायम हुआ है। एक जनवरी से 15 फरवरी तक 58 लाख टिकटों की बिक्री से रेलवे को 81.71 करोड़ की आय हुई। बरसों बाद प्रयागराज में लगे महाकुम्भ मेले में संगम में स्नान करने के लिए लोगों में होड़ रही। अमृत स्नान के लिए लोगों ने आनन फानन में रेलवे से टिकट खरीदे और यात्रा की। भीड़ के चलते ही रेलवे को दिल्ली समेत अन्य स्थानों से कई स्पेशल ट्रेनें चलानी पड़ी। मुरादाबाद मंडल में प्रमुख विभिन्न स्टेशनों से स्नान के लिए संगम, प्रयाग, सूबेदारगंज के लिए यात्रियों ने ट्रेनों में आरक्षण कराए।

पावन पर्व महाकुम्भ दिलों को जोड़ने का भी संगम बनाः

महाकुम्भ का पावन पर्व सिर्फ आस्था और विश्वास का संगम नहीं, बल्कि दिलों को जोड़ने का एक अनमोल अवसर भी बना। इस बार महाकुम्भ ने लोगों को न सिर्फ आध्यात्मिक शांति व संतुष्टि दी, बल्कि वर्षों से मृतप्राय हो चुके रिश्तों में नई जान फूंक दी। महाकुम्भ में आने वाले श्रद्धालुओं ने प्रयागराज से जुड़े दोस्तों व रिश्तेदारों को वर्षों बाद कॉल कर संबंधों में जान फूंकी। नंबर न होने पर सोशल मीडिया के जरिए संपर्क किया जिससे रिश्तों में नई गर्माहट आई।

धूमनगंज के सोनू को 15 साल बाद उनके पुराने दोस्त की कॉल आई। दोस्त ने न केवल महाकुम्भ में आने की योजना के बारे में बताया, बल्कि सोनू के परिवार का हाल भी पूछा। वर्षों

की खामोशी के बाद आई इस कॉल ने दोनों के बीच की दूरी मिटा दी। इसी तरह नैनीताल के मोनू ने शादी के 30 साल बाद सुलेमसराय में रहने वाले अपने रिश्तेदार अभय को याद किया। उन्होंने महाकुम्भ के बहाने संपर्क किया। ये सिर्फ सोनू और मोनू की कहानी नहीं, बल्कि न जाने कितने रिश्ते इस बार महाकुम्भ ने जोड़े। मेले में सिर्फ तीर्थयात्री ही नहीं, बल्कि भावनाओं की गंगा भी बही। लोगों ने बचपन के दोस्तों, स्कूल के साथियों और दूरदराज के रिश्तेदारों को फोन कर हालचाल लिया। किसी ने बचपन की शरारतें याद की, तो किसी ने बीते जमाने की बातें याद कर हंसी-ठिठोली।

अरैल में स्नानार्थियों के लिए गंगा बनीं वरदानः महाकुम्भ के समापन से पहले अरैल में स्नान करने वालों को गंगा ने बड़ी राहत दी है। अरैल के किसी भी घाट पर डुबकी लगाने के लिए श्रद्धालुओं को पर्याप्त जल मिल रहा है। महाकुम्भ के दौरान गंगा के प्रवाह में निरंतर परिवर्तन से अरैल के घाटों पर राहत तो दशाश्वमेध घाट पर डुबकी लगाने वालों के लिए मुश्किल खडी हो गई है। गंगा का प्रवाह बदलने से दशाश्वमेध घाट से लेकर संगम नोज तक जल कम होने लगा था। संगम नोज पर बालू निकालकर गहराई बढ़ाई गई। इससे संगम नोज पर श्रद्धालुओं को स्नान के लिए जल मिलने लगा। संगम नोज की तरह दशाश्वमेध घाट पर भी बालू अधिक हो गई है।

कुछ खास बातेः

- वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए उत्तर प्रदेश की कुल जीडीपी (राज्य सकल घरेलू उत्पाद) 27.51 लाख करोड़ का अनुमान
- इसमें महाकुम्भ के जरिए एक प्रतिशत और इजाफा होने की उम्मीद

- इसमें जीएसटी, टोल टैक्स, विभिन्न प्रकार के कर वसूली व अन्य आर्थिक गतिविधियां शामिल 66 करोड़ से ज्यादा लोगों के प्रयागराज आने के चलते 3.50 लाख करोड़ से ज्यादा का टर्नओवर
- यूपी की जीडीपी वृद्धि 11.6 प्रतिशत व राष्ट्रीय औसत वृद्धि 9.6 प्रतिशत
- प्रयागराज की जीडीपी 68727.11 करोड़ रुपये, यूपी में प्रयागराज का नंबर छटवां
- महाकुम्भ में 45 दिन के आयोजन में 66.30 करोड ने स्नान किया

विदेशी मीडिया सेः आस्था और उमंग का केंद्र रहा महाकुम्भ विदेशी मीडिया में भी खूब छाया रहा। विश्वभर के लगभग हर बड़े मीडिया की इस महापर्व पर लगातार नजर रही।

यह एक ऐसा आयोजन था, जहां अमेरिका की कुल आबादी से ज्यादा लोग जुटे। **द वॉल स्ट्रीट जर्नल, अमेरिका**

यह आयोजन में केवल GG श्रद्धालु और पर्यटक ही नहीं बल्कि नेता और हस्तियां भी पहुंची। **द न्यूयॉर्क टाइम्स**

यह डिजिटल कुम्भ था। इसमें व्यवस्था बनाने के लिए तकनीक का बेहतरीन इस्तेमाल किया। **रॉयटर्स**

यह पर्वों का पर्व था। लोगों GG की उमंग और उत्साह चरम पर रहा। **द गार्डियन**

आयोजन में भभूति लपेटे नागा साधुओं ने स्नान किया। उनके क्रियाकलाप आकर्षण का केंद्र रहे। **सीएनएन**

यह विश्व का सबसे बड़े धार्मिक समारोह था। **एक्सप्रेस ट्रिब्यून, पाकिस्तान**

महाकुम्भ मानवता का सबसे सबसे बड़ा समागम था। **बीबीसी**

महाकुम्भ 2025 इनके लिए किया जाएगा यादः

- राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री समेत कई मंत्रियों ने लगाई पुण्य की डुबकी।
- महाकुम्भ की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गंगा पूजन से की ।
- दो राज्यों (उत्तर प्रदेश और राजस्थान) की कैबिनेट की बैठक हुई।
- 4000 हेक्टेयर की कुम्भनगरी में 13 अखाड़ों ने निभाई सनातन परंपरा।
- 13.5 किलोमीटर का गंगा पथ पहली बार बनाया गया।
- महाकुम्भ में अब तक तीन विश्व रिकॉर्ड बने, चौथे की तैयारी है।
- तैयारी समीक्षा, कार्यक्रमों के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ अक्तूबर से फरवरी तक 17 बार प्रयागराज आए।
- हिमाचल के सीएम सुखविंदर सिंह, दिग्विजय सिंह, सचिन पायलट भी आए।
- महाकुम्भ का औपचारिक समापन गुरुवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे। स्नान पर्वों के साथ सामान्य दिनों में श्रद्धालुओं की संख्या के कारण इस बार लगातार काम किया गया। यह मेला वास्तव में अब तक के सबसे बड़े मेलों में शामिल हैं। **विजय किरन आनंद, डीएम महाकुम्भ नगर**

महाकुम्भ के चर्चित चेहरेः

- एप्पल के सहसंस्थापक और सीईओ स्टीव जॉब्स की पत्नी लॉरेन पावेल यहां भगवा वेश में दिखीं।
- अभिनेत्री ममता कुलकर्णी महामंडलेश्वर बनीं, 23 साल बाद चर्चा में आईं।

- अदाणी समूह के गौतम अदाणी, रिलायस के मुकेश अंबानी और इंफोसिस की सुधा मूर्ति समेत सभी बड़े औद्योगिक घराने पहुंचे।
- अक्षय कुमार, कैटरीना कैफ, रवीना टडन, पंकज त्रिपाठी, विवेक ओबेराय, सोनाली बेंद्रे, प्रीति जिंटा समेत तमाम फिल्मी सितारे संगम पहुंचे।
- सुनील गावस्कर, सुरेश रैना, खली, साइना नेहवाल, कुंबले भी आए।

" श्रद्धा और विश्वास का यह विशाल समागम भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अद्‌भुत और जीवंत प्रतीक है। महाकुम्भ मानवता को एकता और आध्यात्मिकता का संदेश देता है। **द्रौपदी मुर्मू, राष्ट्रपति**

स्वस्थ कुम्भ, सात लाख से अधिक श्रद्धालुओं का उपचारः महाकुम्भनगर में सामान्य से लेकर विश्वस्तरीय इलाज की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। कनाडा, जर्मनी, रूस के साथ एम्स दिल्ली और आईएमएस बीएचयू के एक्सपर्ट द्वारा अब तक कुल सात लाख से अधिक श्रद्धालुओं का इलाज किया जा चुका है। महाकुम्भ मेला के नोडल चिनिया अधिकारी ने बताया कि एलोपैथी के 23 हॉस्पिटल में 5.47 लाख से अधिक मरीजों का उपचार किया गया। इसके अलावा 4.64 लाख से अधिक श्रद्धालुओं की पैथोलॉजी जाच भी की गई। इसके साथ साथ एक्सपर्ट डॉक्टरों ने 2.18 लाख मरीजों का आयुर्वेद और होम्योपैथी के जरिए उपचार किया है।

24 घंटे अलर्ट आयुष चिकित्सा टीमः आयुष मंत्रालय, भारत सरकार एवं राज्य आयुष सोसाइटी उत्तर प्रदेश के सहयोग से 20 आयुष अस्पताल महाकुम्भ क्षेत्र में 24 घंटे कार्यरत हैं। इनमें आयुर्वेद के 10 और होम्योपैथी के 10-10 अस्पताल

शामिल हैं। अब तक इस पद्धति से 2.18 लाख से अधिक श्रद्धालुओं का उपचार किया जा चुका है। इसमें एम्स आयुर्वेद, दिल्ली से 7 विशेषज्ञ डॉक्टर के अलावा कनाडा के डॉक्टर समेत कई देशों के एक्सपर्ट चिकित्सकों ने श्रद्धालुओं का उपचार किया और उनकी जांच कर दवाएं भी उपलब्ध कराई हैं।

महाकुम्भ के आयुर्वेदिक अस्पतालों में पंचकर्म, जड़ी-बूटी आधारित उपचार, योग चिकित्सा और प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से रोगियों का उपचार किया जा रहा है। इसके अलावा श्रद्धालुओं को आयुष डॉकेट, योगा डॉकेट, कैलेंडर, औषधीय पौधे और स्वास्थ्य संबंधी जागरुकता सामग्री वितरित की जा रही है।

योग शिविरः मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान, नई दिल्ली से 5-5 योग प्रशिक्षकों की टीमें महाकुम्भ क्षेत्र में योग सत्र संचालित कर रही हैं। इन सत्रों में विदेशी श्रद्धालु विशेष रुचि दिखा रहे हैं। जर्मनी, स्वीडन, अमेरिका, कनाडा, फ्रांस, नेपाल आदि देशों से आए श्रद्धालुओं ने भारतीय चिकित्सा पद्धति की सराहना की।

विशेष स्वर्णप्राशन औषधिः महाकुम्भ में 01 से 12 वर्ष तक के बच्चों को पुष्य नक्षत्र के दौरान विशेष आयुर्वेदिक औषधि स्वर्णप्राशन दी जा रही है। इससे उनकी एकाग्रता, बुद्धि कौशल, रोग प्रतिरोधक क्षमता और शारीरिक विकास में वृद्धि हो रही है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सनातन धर्म की संस्कृति के प्रति समर्पित हैं। यही कारण है कि वे महाकुम्भ के आरंभ और अंतिम दौर में संगम में स्नान करने आए। उन्होंने सादगी से स्नान किया। श्रद्धालुओं को समस्या न हो, इसके लिए मेला क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया। महाकुम्भ के उत्कृष्ट आयोजन में प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्कृष्ट कार्य किया। **श्रीमहंत**

रवींद्र पुरी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद व मां मनसा देवी मंदिर ट्रस्ट हरिद्वार

प्रयागराज देश-दुनिया के करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र है। यह बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे भी आस्था की डुबकी लगाने का अवसर मिला। उत्तराखण्ड सरकार महाकुम्भप्रयागराज की तरह ही 2027 में हरिद्वार में होने वाले कुम्भ को ऐतिहासिक और सुविधाजनक बनाने के लिए तैयारी कर रही है। **पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड**

युगों से पीढ़ियों को ऐसे क्षण का इंतजार रहता है जब पूरी दुनिया के लोग संगम में आस्था की डुबकी लगाने आते हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी को इस दिव्य और भव्य आयोजन के लिए धन्यवाद। **ज्योतिरादित्य सिंधिया, केंद्रीय मंत्री**

मानवता के इतिहास का सबसे बड़ा आयोजन चल रहा है, जो 144 साल बाद आया है। इस अभूतपूर्व आयोजन और सुव्यवस्थित महाकुम्भ के लिए सरकार बधाई की पात्र है। महाकुम्भ के दिव्य आयोजन से पूरी दुनिया भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता की शक्ति देख रही है। केंद्र और यूपी सरकार ने मिलकर इसे ऐतिहासिक बना दिया है। इस भव्य आयोजन के लिए केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार को शुभकामनाएं। **डॉ. आशुतोष मिश्रा, सांस्कृतिक राजदूत, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया**

यहां भारी भीड़ है, लेकिन फिर भी सारी व्यवस्थाएं सुचारु रूप से चल रही हैं। आयोजन को सफल बनाने के लिए किए गए सभी प्रयास सराहनीय हैं। अगर मेरे पास समय होता तो मैं यहीं अपना घर बना लेता। यह दिव्य है। **संजय मिश्रा, अभिनेता**

मैंने त्रिवेणी में डुबकी लगाई। यहां के माहौल में अद्भुत और सकारात्मक ऊर्जा है। मैंने अब तक कहीं भी ऐसा भव्य मेला नहीं देखा। मैं 2019 में भी आया था, लेकिन इस बार की व्यवस्था अधिक शानदार व अद्भुत है। **मधुर भंडारकर, फिल्म निर्देशक**

वेद मंत्रों के साथ ही एआई का ज्ञानः महाकुम्भ में हाईटेक साधु-संन्यासी श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहे हैं तो वहीं हाईटेक वेदपाठी छात्र भी कौतूहल का विषय बने हुए हैं। डिजिटल इंडिया में हाईटेक वैदिक बटुक वेदों के कठिन मंत्र, पुराण, उपनिषद, गीता, अंग्रेजी, गणित से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तक की शिक्षा हासिल कर रहे हैं।

वैदिक ज्ञान को कैसे समृद्ध करेगी तकनीकः

- वेदों के हस्तलिखित और मुद्रित संस्करणों को स्कैन करके डिजिटल स्वरुप में संग्रहीत किया जा सकता है।
- कंप्यूटर के माध्यम से वेदों का विस्तृत और खोज योग्य डेटाबेस तैयार किया जा सकता है।
- मंत्र, ऋचाएं या विषय के आधार पर सामग्री को खोज सकते हैं।
- कंप्यूटर प्रयोग से विलुप्त हो रही पांडुलिपियों और, लुप्तप्राय सामग्री को संरक्षित और पुनर्जीवित करने में मदद मिलेगी।
- आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का उपयोग करके खोई हुई सामग्री के पुनः निर्माण करने का प्रयास किया जा सकता है।

- वेदों के मंत्रों का उच्चारण सही तरीके से संरक्षित करने के लिए ऑडियो रिकॉर्डिंग और साउंड एनालिसिस की जा सकती है।
- वेदों में निहित ज्ञान का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद और व्याख्या करने के लिए कंप्यूटर पर आधारित सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया जा सकता है।

नेत्रदान का संकल्पः संगम में आस्था की डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालु और कल्पवासी यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, द्रव्य व शय्यादान कर रहे हैं। दान की इसी परंपरा को समृद्ध करते हुए महाकुम्भ में पहली बार श्रद्धालु स्वेच्छा से नेत्रदान का संकल्प भी ले रहे हैं। महाकुम्भ के सेक्टर 6 बजरंग चौराहा स्थित नेत्र कुम्भ में आने वाले नेत्र रोगियों व अन्य श्रद्धालुओं में लगभग 22 लोग प्रतिदिन नेत्रदान का संकल्प पत्र भर रहे हैं। 5 जनवरी से शुरु हुए नेत्र कुम्भ में अब तक 670 लोगों ने नेत्रदान का संकल्प लिया है। वहीं एक लाख पांच हजार से अधिक लोगों की आंखों की जांच की जा चुकी है। 7,926 लोगों को मोतियाबिंद के ऑपरेशन की सलाह दी गई है। 68,460 लोगों को निशुल्क चश्मा दिया जा चुका है। नेत्र कुम्भ में अभी तक हुए नेत्रदान का संकल्प पत्र भरने वालों में सबसे कम उम्र के 12 साल के एक छात्र और 78 साल के एक बुजुर्ग भी शामिल हैं।

एक जनपद-एक उत्पाद पर शोधः ओडीओपी (एक जनपद-एक उत्पाद) कार्यक्रम के तहत युवाओं को मिल रहे प्रोत्साहन और सहायता का असर अब साफ दिखने लगा है। इस योजना की सफलता और इसके व्यापक प्रभाव को जानने के लिए भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) की एक टीम शोध कर रही है। आईआईएम हैदराबाद के प्रोफेसर के नेतृत्व में तीन अन्य शिक्षक और आठ छात्र आए हैं। टीम यह जानने का प्रयास कर रही है कि ओडीओपी के तहत विभिन्न जिलों के उत्पादों की बिक्री और व्यवसाय पर क्या प्रभाव पड़ा है। इसके लिए टीम ने

महाकुम्भ मेला क्षेत्र में आयोजित प्रदर्शनी का दौरा किया, जहां प्रदेश के 75 जनपद से आए प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र के उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई है। प्रदर्शनी में शामिल एक युवा उद्यमी ने बताया कि ओडीओपी योजना के तहत उन्हें अपने उत्पाद को बाजार तक पहुंचाने में काफी मदद मिली है। उन्होंने कहा कि पहले हमारे उत्पाद सिर्फ स्थानीय बाजार तक ही सीमित थे, लेकिन अब हम इन्हें दूसरे राज्यों और विदेशों में भी भेज रहे हैं। 2019 कुम्भ में ओडीओपी कार्यक्रम के अंतर्गत 4.30 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ था, जबकि इस बार 35 करोड़ रुपये तक के कारोबार का अनुमान है।

हरि कीर्तन

मनुष्य को अपनी आस्था में इतनी शक्ति अर्जित करनी चाहिए कि एक नजर में भावनात्मक तूफान शांत हो सके। इसके लिए प्रार्थना बहुत उपयोगी है। उदास होने के बजाय कठिन हालातों में संभावनाओं की तलाश करें। उम्मीद ना छोड़े और आशावान बनें आपको यह एहसास होता जाएगा कि यह समय भी निकल जायेगा। विश्वास, ज्ञानियों के वाणी, रीति-रिवाज और प्रार्थनाओं से पैदा होते हैं। हम महसूस करने लगते हैं कि मैं अकेला नहीं हूँ, मंजिल मिलेगी कल मैं दोबारा प्रयास कर सकता हूँ। इन सभी को समझने के लिए धार्मिक होना बहुत जरूरी है। विज्ञान कहता है किसी चीज में विश्वास मानसिक और भावनात्मक सेहत के लिए बहुत प्रभावशाली ढंग से काम करता है। आपका आध्यात्मिक विश्वास सुरक्षा और हर्ष के भाव को बढ़ाते हुए अर्थपूर्ण रिश्तो का निर्माण करता है बस ब्रह्मांड पर विश्वास करिए।

महाकुंभ में भारत के साथ-साथ विदेशी के भी लोगों ने आस्था स्नान किया जाहिर है आस्था और विश्वास के कारण उन्हें यह मौका मिला। बहुतेरे लोग जो स्नान नहीं कर पाए उसके बहुत सारे कारण भी हो सकते हैं परंतु उनकी आस्था, विनम्र प्रार्थना ने भी बहुत कुछ दिया। परवरदिगार पर आस्था के संदर्भ में भगवान कृष्ण ने गीता में लिखा है सुखे दुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जया जयौ यानी सुख-दुःख, हानि-लाभ, जय-पराजय, को समान भाव से समझकर कर्म करते रहना चाहिए। जीवन में प्रभु को समर्पित होकर समभाव रखने वाले व्यक्ति ही सफल होते हैं इसी समभाव को रखने वाला हर पल अपने जीवन

में उत्सव महसूस करता है। मनुष्य का जन्म संघर्षों का सामना करने के लिए मिला है। संघर्षों से उबर कर ही हम सफल और समर्थ बनते हैं। समुद्र में जैसे तूफान आता है वैसे हमारे जीवन में भी तूफान आते हैं जो ब्यक्ति धैर्य, ज्ञान, विद्या के प्रशिक्षण में पूर्ण होता है वही जीवन के तूफान रूपी खेल में सफल हो जाते हैं। बचे हुए लोग हार-जीत, मान-अपमान, आशा-निराशा और हानि-लाभ के द्वन्दो के बीच ही जूझते रहते हैं। जीवन को उत्सव बनाने के लिए हमारे पास पुरुषार्थ मनोबल और जीवन दृष्टि चाहिए। उसकी आत्म दृष्टि ही हमें आत्म बल प्रदान करती है इसी आत्म बल से हर कार्य उत्सव के रूप में बदल जाता है। जीवन में हार-जीत की चिंता किए बिना व्यक्ति जब अपने हर कर्म ईश्वर के चरणों में अर्पित करता चला जाता है तब वह निश्चित सफलता और यश का भागीदार होता है। जीत की सफलता से मतवाला हाथी बनकर मदमस्त नहीं होना चाहिए। इसी संदर्भ में ज्ञानियों के संदेश भी प्रस्तुत है।

हरिकीर्तन से लाभः सहिष्णुता और क्षमाशीलता व्यक्तिगत जीवन के महान आभूषण हैं। लेकिन यह समझना जरूरी है कि सामूहिक जीवन में सहिष्णुता और क्षमा की अलग भूमिका होती है। अगर कोई आपको निजी तौर पर चोट पहुंचाए, अपमानित करे या कष्ट दे, तो क्षमा करना श्रेष्ठ माना गया है। यह आपके मन को शुद्ध करता है, आपकी आत्मा को ऊंचा उठाता है, लेकिन जब मामला समाज या समूह का हो, तब क्षमा करना आपके अधिकार क्षेत्र में नहीं है। मान लीजिए, कोई शत्रु समाज पर प्रहार करता है, तब चुप रहना या उसे सहन करना समाज के साथ अन्याय होगा। ऐसे समय संघर्ष करना ही धर्म है। इसलिए हमेशा याद रखें कि व्यक्तिगत जीवन में क्षमा गुण है, पर सामूहिक जीवन में यह अवगुण बन सकता है।

दुर्योग से हमने सामूहिक जीवन में भी अत्यधिक सहनशीलता दिखाई है। इसके कारण समाज कई बार पतन की ओर गया। इसलिए इस कमजोरी से सावधान रहना चाहिए। यदि किसी व्यक्ति को समाज में सम्मान नहीं मिले, तो आपका कर्तव्य है कि आप उसे सम्मान दें। अगर किसी को आमंत्रण नहीं दिया गया, तो आप उसे अपने घर बुलाएं। अगर किसी को नमस्कार नहीं मिलता, तो आप उसे नमस्कार करें। ऐसा करने से आपके मन में शुद्धता आएगी। जब लेने के बजाय देने की भावना मन में होती है, तब मन पवित्र होता है।

एक बात हमेशा स्मरण रखना चाहिए कि हमारे कर्मों पर परमपुरुष की बराबर नजर है, मगर उनका और भक्तों का रिश्ता न्यायाधीश व अपराधी वाला नहीं है। यह एक परिवार जैसा संबंध है, जिसमें प्यार और स्नेह है। परमपुरुष अपने भक्तों से नाराज होते हैं, लेकिन प्रेम के कारण। समाज में न्यायपालिका की भूमिका होती है अपराधी को दंड मिले और समाज स्वच्छ रहे। लेकिन आध्यात्मिक क्षेत्र में परमपुरुष भक्तों के साथ न्यायाधीश जैसा व्यवहार नहीं करते। वह अपने भक्तों को गोद में लेते हैं, उन्हें संभालते हैं। लोग कहते हैं कि परमपुरुष भक्तों से उनके सारे पाप मांग लेते हैं। लेकिन सच्चा भक्त कभी ऐसा नहीं करेगा। वह कहेगा, 'प्रभु, मैं आपको फूल, भोजन, मिठाई अर्पित कर सकता हूं, लेकिन अपने पाप नहीं दे सकता। फिर भी, प्रेम के कारण परमपुरुष चुपके से भक्तों के पाप अपने ऊपर ले लेते हैं। इसी कारण उनका नाम हरि पड़ा, अर्थात जो पाप हर लेते हैं।

जब लोग हरिकीर्तन में डूबे रहते हैं, तो उनका मन पतित नहीं होता। वह पवित्रता, स्वास्थ्य और शांति से भरा रहता है।

इससे साधना में भी गहराई आती है। इसलिए हर साधक को चाहिए कि अपने खाली समय को व्यर्थ की बातों या चिंताओं में न गंवाए, बल्कि सामूहिक हरिकीर्तन करे। इससे मन निर्मल रहेगा, साधना गहरी होगी और जीवन का हर क्षण सार्थक बनेगा। **श्री श्री आनंदमूर्ति**

सबसे अनिवार्य अहिंसाः योग के पहले अंग का पहला स्वरूप अहिंसा है। अहिंसा की प्राप्ति होगी, तभी आदमी चित्त को एकाग्र कर पाएगा। अहिंसा का व्यापक अर्थ है- किसी को किसी भी तरह से दुख नहीं पहुंचाना। न वाणी से, न शरीर से। जब हम किसी की समाप्ति या उसे नुकसान पहुंचाने का संकल्प करते हैं, तो यह भी हिंसा है, यह नहीं होना चाहिए।

मां हिंस्यात सर्वाभूताणि। हमें किसी के साथ हिंसा नहीं करनी है। इसलिए सनातन धर्म में लिखा है कि मच्छरों, कीट-पतंगों को भी मारने, वृक्ष-लताओं को काटने से भी पाप उत्पन्न होता है। यज्ञ में लकड़ी की जरूरत होती है, पेड़ काटे जाते हैं, तो जैसे यज्ञ से पुण्य मिलता है, ठीक उसी प्रकार हरा-भरा पेड़ काटने से पाप भी मिलता है। इसलिए लोग मनुष्यों की ही नहीं, किसी भी तरह से हिंसा नहीं करें। कौन-सा संप्रदाय होगा, कौन-सी ऐसी जाति होगी, जिसको हिंसा पसंद है? योग के पहले अंग यर्म का पहला स्वरूप अहिंसा है। जिसे वेदों ने सबसे पहली बार समाज में प्रकट किया था-किसी भी प्राणी के साथ हिंसा मत करो। ऐसे आख्यान भी आए हैं, जब तितली के पंख में कांटे को छुआ दिया, तो दंडस्वरूप सूली पर बैठना पड़ा। शास्त्रों में वर्णित हैं ऐसे प्रसंग। कितना बड़ा चिंतन है महर्षि पतंजलि का-अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः, अर्थात जब योगी का अहिंसा

भाव स्थिर हो जाता है, तब उसके निकटवर्ती हिंसक जीव भी वैर त्याग देते हैं।यम का दूसरा अंग है सत्य। वेदों ने कहा- सत्यम वद। यह किसी एक जाति या काल के लोगों के लिए नहीं कहा था, सबके लिए कहा था। सत्य सभी को बोलना चाहिए। महर्षि पतंजलि ने कहा- सत्य प्रतिष्ठायां क्रिया फलाश्रयत्वम, अर्थात सत्य में यदि कोई प्रतिष्ठित है, तो उसकी वाणी में संपूर्ण क्रियाओं के फल आ जाएंगे। सत्य बोलने वाला यदि कह देगा, तो पापी भी स्वर्ग चला जाएगा। सत्य की आवश्यकता पूरे संसार को है। सत्य बोलने से सच्ची शक्ति उत्पन्न होती है।

यम का तीसरा अंग है अस्तेय, अर्थात, चोरी का अभाव होने पर योगी के सामने हर प्रकार के रत्न उपस्थित हो जाते है। पूरी दुनिया की समस्या है कि लोग छल-कपट, अनेक तरह के गलत हथकंडों से दूसरे की वस्तु, जमीन, संसाधनों को अपना बना लेते हैं, संपूर्ण मानव जाति ही चोरी से त्रस्त है।

योग के लिए अपरिग्रह जरूरी है। उपनिषदों में लिखा गया है कि संग्रह उतना ही करना चाहिए, जितने में जीवन का निर्वाह हो जाए। मगर आज जो लोग योग के प्रचार में लगे हैं, उनमें से ज्यादातर बड़े परग्रिही हैं। जबकि पतंजलि ने स्पष्ट लिखा है- अपरिग्रही को सभी तरह के फल की प्राप्ति होगी, उसे बैठे-बैठे ही सभी रत्नों की प्राप्ति होगी। **रामानंदाचार्य स्वामी श्री रामनरेशाचार्य**

सच्चे ज्ञानी की पहचानः हर मनुष्य के मन में कभी न कभी यह सवाल जरूर उठता है कि हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

इस सृष्टि के पीछे एक महान शक्ति है, जिसको परम पुरुष या सर्वोच्च सत्ता कहा गया है। यह वही शक्ति है, जिसने इस ब्रह्मांड की रचना की है, इसे संचालित किया है और जिसके अंतर्गत सभी चीजें उत्पन्न होती हैं। जो व्यक्ति इस सत्य को समझता है, वह अमरता की ओर अग्रसर होता है। एको हि रुद्रो न द्वितीयाय... का अर्थ है कि केवल एक परमब्रह्म अस्तित्व में है, दूसरा कोई नहीं। हमारे चारों ओर दिखाई देने वाले विभिन्न रूप और वस्तुएं केवल उस सर्वोच्च शक्ति की मानसिक सृष्टि हैं। रचना से पहले वह केवल एक अस्तित्व था। जब उसने अपनी इच्छा से विविधता की रचना की, तो प्रकृति के प्रभाव से सृजन की प्रवाहिनी आरंभ हुई।

सृष्टि के विविध रूप हैं- निर्जीव और जीवित मनुष्य, मन, प्राण और बुद्धि। सब उसी परम सत्ता के प्रकट रूप हैं। आनंद मार्ग के दार्शनिक ग्रंथों में कहा गया है कि सभी भौतिक और आध्यात्मिक विविधताओं की जड़ एक ही है। एक मूल सत्ता ही सभी भौतिक और सूक्ष्म जगतों की रचना और संचालन कर रही है। अंततः सभी जगत उसी में विलीन हो जाते हैं। वही पदार्थ का कारण है और हर वस्तु का साक्षी भी है। मानव को चाहिए कि वह पूरी तरह उस सर्वोच्च आत्मा में विलीन हो जाए।

अनेक लोग समय, प्रकृति, भाग्य या पदार्थ को सृष्टि का मूल कारण मानते हैं, लेकिन गहनता से विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सभी सीमित हैं। वास्तव में, जो भी हम भौतिक कारण मानते हैं, अणु, परमाणु या ऊर्जा स्वयं मूल तत्व नहीं, बल्कि प्रकृति के स्थिर प्रभाव का रूप है। इसलिए किसी

भी वस्तु के मूल तत्व को जानने के लिए ब्रह्म को जानना आवश्यक है, जो शिव और शक्ति का सम्मिलित रूप है।

जो व्यक्ति प्रत्येक कण, अणु और परमाणु में उस परम आनंदमय सत्ता को देख लेता है, उसके लिए संपूर्ण ब्रह्मांड आनंदमय हो जाता है। बाहरी जगत में भले विविधताएं दिखाई देती हों, आंतरिक जगत में केवल एक आत्मा है। ज्ञानी मनुष्य सच्ची साधना, भक्ति और ईमानदारी के माध्यम से परम पुरुष की मूल अवस्था में विलीन हो जाता है। उसे यह समझ आता है कि वह न तो मन है, न इंद्रियां है, न तन्मात्राएं है, बल्कि चेतना और आनंद का अनंत प्रवाह है। इस विविधता में एकता का दर्शन वही व्यक्ति करता है, जो बाहरी भिन्नताओं के बावजूद आंतरिक एकता को देख पाता है। परम पुरुष की यह दिव्य-लीला है और सच्चे ज्ञानी इसे पहचानकर आत्मिक रूप से स्थिर हो जाते हैं।

सिर्फ पूजा-पाठ नहीं अध्यात्म: मनुष्य का शरीर एक अद्भुत यंत्र है और उसका वास्तविक संचालक मन है। जब मन को दिशा सकारात्मक और ईश्वर-उन्मुखी होती है, तब जीवन केवल आत्मसुख तक सीमित नहीं रहता, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण की ओर प्रवाहित होता है। यदि हम अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत इच्छाओं तक सीमित रख दें, तो यह समाज को असंतुलन और अशांति की ओर ले जाता है।

अध्यात्म का अर्थ केवल पूजा-पाठ या साधना तक सीमित नहीं है। इसका वास्तविक स्वरूप कहीं व्यापक और गहरा है। जब मनुष्य अपने भीतर की चेतना को जागृत कर आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध जोड़ने का प्रयास करता है, तभी वह अध्यात्म कहलाता है। यह साधना हमें भीतर से ऊंचा उठाती है,

हमारे मन की उच्च आकांक्षाओं को पोषण देती है और जीवन को एक नई दिशा प्रदान करती है। अध्यात्म बताता है कि मनुष्य के भीतर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसी मौलिक वृत्तियां अंतर्निहित हैं, और इनको सही दिशा देना ही जीवन का मूल उद्देश्य होना चाहिए।

इतिहास साक्षी है कि जब-जब समाज ने अध्यात्म की अनदेखी की और केवल स्वार्थपूर्ण चिंतन को अपनाया, तब-तब उसने संघर्ष, विनाश और संकट का सामना किया। व्यक्तिगत सुख की होड़ ने मानव समाज को कभी स्थायी शांति नहीं दी, बल्कि अशांति और पीड़ा को ही जन्म दिया। जब तक पृथ्वी पर स्वार्थ की मानसिकता विद्यमान रहेगी, तब तक मानवता को संकट झेलना हो पड़ेगा। इसके विपरीत, जब चिंतन सामूहिक कल्याण और सकारात्मकता की दिशा में होता है, तब मानव समाज सुख और संतुलन से भरा जीवन जीता है।

मनुष्यत्व का वास्तविक पथ तभी संभव होता है, जब हम अध्यात्म को अपने जीवन का केंद्र बनाते हैं। आत्मसुख तत्व हमें सीमित कर देता है, जबकि सम-समाज तत्व, यानी सामूहिक कल्याण हमें महानता की ओर ले जाता है। यही कारण है कि इतिहास में जिन्होंने सामूहिक कल्याण को अपनाया, वही मानवता के सच्चे उपासक और समाज के पथ प्रदर्शक बने। अध्यात्म हमें सिखाता है कि मनुष्य का शरीर केवल भौतिक उपभोग का साधन नहीं, बल्कि परमपुरुष की ओर अग्रसर होने का माध्यम है। जब साधना द्वारा मन ईश्वरोन्मुखी बनता है, तब मनुष्य सच्चे अर्थों में मानवता का पुजारी बनता है।

हम मानव शरीर के अधिकारी थे, इसलिए हमें यह मिला और इसका सर्वोत्तम उपयोग यही है कि हम अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत इच्छाओं तक सीमित न रखकर सामूहिक कल्याण और ईश्वर की ओर ले जाएं। वास्तव में, यही मानवता का पथ है और यही अध्यात्म का सच्चा संदेश। **श्री श्री आनन्दमूर्ति**

जब दिल में हो जगह : एक फकीर अपने छोटे से झोपड़े में बीवी के साथ रहता था। एक रात तेज बारिश हो रही थी। लगभग आधी रात को किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी। फकीर ने बीवी से कहा, द्वार खोल दो, द्वार पर शायद कोई यात्री,कोई अपरिचित मित्र है।बीवी ने कहा, अपरिचित मित्र ? हमारे तो जो परिचित हैं,वे भी मित्र नहीं होते। फकीर ने कहा, यह प्रेम का भाव है। तुम द्वार खोलो। पत्नी ने फिर टोका, हम दो के लिए ही जगह तंग है। तीसरा आदमी भीतर आएगा, तो हम क्या करेंगे?

फकीर ने कहा, पगली, यह किसी अमीर का महल नहीं कि छोटा पड़ जाए, गरीब का झोपड़ा है। जब दिल में जगह हो, तो झोपड़ा भी महल-सा मालूम होता है। तुम द्वार खोल दो। द्वार पर खड़े हुए आदमी को कैसे लौटाया जा सकता है? अभी तक जहां हम दोनों लेटे थे, तीनों बैठ लेंगे। बैठने के लिए काफी जगह है। पत्नी को दरवाजा खोलना पड़ा। एक मित्र आ गया, पानी से तरबतर। उसके कपड़े बदलवाए। फिर दरवाजा बंद करके तीनों बैठे-बैठे गपशप करने लगे। थोड़ी देर में दो और आदमियों ने दरवाजे पर दस्तक दी। फकीर ने द्वार से लगकर बैठे व्यक्ति से कहा- दरवाजा खोल दो, मालूम होता है कोई आया। उस आदमी ने कहा, अब जगह कहां है?

फकीर हंसने लगा। उसने कहा, बड़े पागल हो। मैंने तुम्हारे लिए जगह नहीं बनाई? प्रेम था, इसलिए जगह थी। प्रेम अब भी है, वह तुम पर ही खत्म नहीं हो गया। दरवाजा खोलो। अभी जहां हम दूर-दूर बैठे हैं, अब लगकर बैठ जाएंगे। पास-पास बैठने को काफी जगह है। दरवाजा खोलना पड़ा। दो और आदमी भीतर आ गए। वे पास-पास बैठकर गपशप करने लगे। रात कुछ आगे बढ़ी। एक गधे ने आकर सिर लगाया दरवाजे से। वह भी शरण चाहता था। फकीर ने दरवाजे से लगकर बैठे दोनों आदमियों से कहा- दरवाजा खोल दो। लगता है, कोई और मित्र आ गया।

तीनों ने एक स्वर में कहा, मित्र नहीं, गधा है। इसके लिए द्वार खोलने की क्या जरूरत है? फकीर ने कहा, तुम्हें शायद पता नहीं, अमीर के दरवाजे पर आदमी के साथ भी गधे जैसा व्यवहार किया जाता है। यह गरीब की झोंपड़ी है, हम गधे के साथ भी आदमी-सा व्यवहार करने के आदी हैं। दरवाजा खोल दो! वे सब कहने लगे, मगर जगह ? फकीर ने कहा, जगह बहुत है, अभी तक हम बैठे थे, अब खड़े हो जाएंगे। खड़े होने के लिए काफी जगह है। तुम लोग घबराओ मत, अगर जरूरत पड़ी, तो मैं बाहर होने को तैयार हूं। प्रेम इतना कर सकता है। एक प्रेमपूर्ण हृदय बनाने की जरूरत है। व्यक्तित्व में प्रेम की संभावना बढ़ती जानी चाहिए। वह इतनी बढ़ जानी चाहिए कि पौधों के प्रति, पक्षियों के प्रति, पशुओं के प्रति, अपरिचितों के प्रति बढ़ता चला जाए। **ओशो**

धर्म से सब कुछ मिलेगा : यतोअभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। यह महर्षि कणाद का एक महत्वपूर्ण वाक्य है, जिसे सदा ध्यान में रखना चाहिए। इसके अर्थ को समझना बहुत आवश्यक है। यहां धर्म वह है, जो अभ्युदय अर्थात सांसारिक विकास देता है और निःश्रेयस अर्थात मोक्ष भी देता है। अभ्युदय और निःश्रेयस, ये दोनों शब्द हमारे दर्शन में विशेष स्थान रखते हैं। ईश्वर हमें प्रेरित करते हैं कि हम ऐसे कर्म करें, जिससे इस लोक में भी हमें सब कुछ मिले और परलोक में भी सब कुछ मिले। लौकिक फल हमें मिले और अलौकिक फल भी। भगवान ने हमें संसार का सबसे बड़ा फल मनुष्य जीवन निःश्रेयस के लिए ही दिया है।

कौन थे महर्षि कणाद ? अनुपम त्याग के प्रतीक थे। फसल काटते हुए खेतों में जो अन्न गिर जाते थे, उसी को चुनना और उन्हें ही भोजन के संसाधन के रूप में व्यवहार में लेना उनकी प्रवृत्ति थी। कण खाकर वह तपस्वी जीवन व्यतीत करते थे, इसलिए कणाद कहलाए।

हृदय में उनके वाक्य को बसा लीजिए। जिसे करने से भोग भी मिलेगा और मोक्ष भी मिलेगा, उसी को धर्म कहते हैं। अनेक लोग समझते हैं कि धर्म करने से केवल परलोक में ही कुछ मिलेगा। समझते हैं कि परलोक में ही ईश्वर के समान परिवेश मिलेगा, पर ध्यान रहे, धर्म करने से इस लोक में भी कल्याण होता है। अभ्युदय अर्थात लौकिक संपत्ति, धन-संपत्ति, बच्चे, पत्नी, सुदंरता, प्रतिष्ठा इत्यादि। हमें अभी यहां मिली हुई सुविधाएं अभ्युदय ही हैं। धर्म केवल यही नहीं देता, मोक्ष भी देता है। कोई संदेह नहीं कि हमारा अंतिम पड़ाव मोक्ष है।

मृत्यु को बेवकूफी में ही कहीं अंत कह दिया जाता है। मनुष्य जीवन में अंतिम पड़ाव तो भगवान का धाम है, लेकिन यह बात हमारे ध्यान में नहीं आती है। लोगों को मोक्ष देने के लिए ही भगवान अवतार ग्रहण करते हैं। मोक्ष देने के लिए ही भगवान अव्यक्त से व्यक्त हो जाते हैं। यहां सोचना चाहिए कि भगवान आपको मोक्ष कैसे देंगे ? इसके लिए आप भक्ति कीजिए। भगवान ने हमें जीवन दिया और कहा कि अब मोक्ष के लिए तत्पर हो जाओ। श्रद्धावान को मोक्ष की प्राप्ति होती है, पर सावधान रहें, अंधभक्ति को श्रद्धा नहीं कहते हैं।

मधुसूदन सरस्वती जी ने कहा कि गुरु वाक्य और शास्त्रों के वाक्य में इधर-उधर कुछ भी नहीं है। अकंपित विश्वास का नाम ही श्रद्धा है। कंपित विश्वास से लाभ नहीं होता है। हमें तत्पर श्रद्धा के लिए प्रेरित करने के लिए ही ईश्वर अवतार लेते हैं। तत्पर का अर्थ है, जुड़ने की बुद्धि। जिनसे बड़ा कोई नहीं है, वह ईश्वर लीलाओं का प्रदर्शन करते हैं और हमें तत्पर बनाने के लिए ही अपने दिव्य धाम से यहां आते हैं। हमें स्वयं से जोड़ने के लिए ही यहां आते हैं। अतः इधर-उधर कहीं मत भटकिए। **रामानंदाचार्य स्वामी श्रीरामनरेशाचार्य**

जो सामाजिक सेवा की पहचान बन गया : संयुक्त राज्य अमेरिका के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी। इसकी नींव लेलैंड और जेन स्टैनफोर्ड ने 1885 में अपने इकलौते बेटे लेलैंड जूनियर की याद में रखी थी।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय, जो उत्तरी अमेरिका में न्यूयार्क के उत्तर में स्थित है, विश्व का सर्वोत्तम विश्वविद्यालय स्थित है, बल्कि कहना चाहिए कि माना जाता था। आज यह स्थान विज्ञान, सॉफ्टवेयर आदि अनेक विषयों में कैलिफोर्निया स्थित

स्टैनफोर्ड विवश्वविद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया है। असल में स्टैनफोर्ड ने अपने पुत्र को हार्वर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ने भेजा। स्टैनफोर्ड अपने तेल के उद्योग में बहुत होशियार थे, किंतु अन्य करोड़पतियों की तुलना में वो सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत मानते थे। दुर्भाग्य से किसी कारणवश उनके पुत्र की मृत्यु विद्यार्थी जीवन में ही हो गई। अतएव श्री तथा श्रीमती स्टैनफोर्ड ने तय किया कि अपने मृत पुत्र के लिए हार्वर्ड विश्वविद्यालय में स्मारक बनवाने के लिए कुछ धन दान में देंगे, इसलिए कैलिफोर्निया से वो हार्वर्ड गए। एक दिन सुबह वे हार्वर्ड के वाइस चांसलर के दफ्तर में पहुंचे।

वाइस चांसलर की व्यक्तिगत सहायक को उन्होंने अपना ध्येय बतलाते हुए उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। वे बहुत सादी पोशाक में थे और विनम्रतापूर्वक बात कर रहे थे। व्यक्ति सहायक ने अंदर जाकर वाइस चांसलर को सब बतलाया। वाइस चांसलर ने सब सुनने पर तथा यह जानकर कि वे साधारण व्यक्ति हैं, कहा कि उससे कह दो कि वे बहुत व्यस्त हैं और उन्हें कम-से-कम एक घंटा रुकना पड़ेगा।

व्यक्तिगत सहायक ने स्टैनफोर्ड से यह कह दिया। स्टैनफोर्ड ने सहर्ष एक घंटा रुकने का प्रस्ताव मान लिया। एक घंटे के बाद भी उन्हें और रुकना पड़ा। अंत में जब वाइस चांसलर ने देखा कि यह व्यक्ति बिना मिले नहीं जाएगा, तब उन्होंने उन्हें मिलने के लिए बुलाया। साधारण से दिखने वाले स्टैनफोर्ड का प्रस्ताव उन्होंने सुना और समझाते हुए कहा कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय बहुत बड़ा विश्वविद्यालय है, दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं तो घटती रहती हैं। वे यदि इस तरह के स्मारक बनवाने के लिए लोगों के प्रस्ताव स्वीकार करते रहे, तो यह विश्वविद्यालय एक कब्रिस्तान बन जाएगा।

स्टैनफोर्ड ने विनम्रतापूर्वक कहा कि उनकी योजना में कोई मूर्ति स्थापित करना नहीं था। वरन किसी एक आधुनिक विषय के लिए नया विभाग दान करना था। अब तो वाइस चांसलर का धीरज टूट गया और उन्होंने कहा, 'आपको जरा भी अनुमान नहीं है कि एक विभाग बनवाने के लिए लाखों डॉलर लगते हैं, नहीं तो आप ऐसा प्रस्ताव नहीं रखते।' स्टैनफोर्ड ने कहा, 'जी, यह तो ठीक है कि मुझे इस रकम का सही अनुमान नहीं है। मैं तो एक करोड़ डॉलर का अनुमान करके निकला था।' उनकी पत्नी ने टोका, 'प्रिय, तब तो हम कैलिफोर्निया में एक नया विश्वविद्यालय बनवा सकते हैं।'

स्टैनफोर्ड ने कहा, 'प्रिय, तुम ठीक कहती हो।' उन्होंने वाइस चांसलर को धन्यवाद' दिया और कैलिफोर्निया वापिस आकर इस विश्व प्रसिद्ध स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी - का निर्माण किया, जो श्री तथा श्रीमती स्टैनफोर्ड की सामाजिक सेवा की पहचान - बन गया है।

कर्तव्य पालनः राजधानी की एक बस्ती में जमींदोज नाली की सफाई करते हुए दो हरिजनों को जीवन से हाथ धोना पड़ा। यह नाली कई दिनों से रुकी पड़ी थी और उसका गन्दा पानी ऊपर बहता रहता था। किन्तु उसकी सफाई की जिम्मेदारी कौन उठाये, इस बारे में म्युनिसिपल कमेटी और इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के बीच विवाद चलता रहा और अंत में यह तय पाया गया कि म्युनिसिपल कमेटी को यह काम करवाना होगा। शुरू में एक हरिजन नाली के भीतर घुसा, पर नाली में इतनी गैस पैदा हो गई थी कि वह फौरन बेहोश हो गया। थोड़ी-थोड़ी देर में एक-एक करके दो हरिजन और नाली में दाखिल हुए और उनकी भी

वही दशा हुई अर्थात बेहोश होकर नाली के भीतर पड़ गये। एक नागरिक ने अपने प्राणों को जोखिम में डालकर इन हरिजनों को गन्दी नाली से बाहर निकाला, किन्तु उनमें से दो मौत के मुंह में पहुंच गये और केवल एक के बच जाने की आशा की गई ।

आज के युग में मनुष्य के जीवन का मूल्य बहुत कम आंका जाता है। मैने पढ़ा कि भारतीय सेना के एक उच्च अफसर को जो ले. कर्नल थे, अमृतसर से दिल्ली की यात्रा करते हुए रेलगाड़ी के पहले दर्जे के डिब्बे में कत्ल करके बाहर फेंक दिया गया। इस घटना को समाचारपत्रों में प्रमुख स्थान मिला, क्योंकि समाचार संबंध ऐसे व्यक्ति से था, जिसका समाज में ऊंचा स्थान माना जाता है। गन्दी नाली की सफाई करते हुए इन दो हरिजनों की मौत की घटना कितनी ही करुणाजनक क्यों न हो, वह न समाचारपत्रों और न समाचारपत्र पाठक का ध्यान उस हद तक अपनी ओर खींच पाई, जिस हद तक फौजी अधिकारी की मृत्यु ने खींचा। म्युनिसिपल कमेटी के स्वास्थ्य विभाग के अफसर ने दुर्घटना की जो सफाई दी है, उसमें भी हमको कुछ हृदयहीनता की गन्ध आती है। उन्होंने कहा है कि हरिजनों को नालियों के भीतर घुसते समय नालियों के मुंह दो जगह से खुले रखने की हिदायत है। अभागे हरिजनों ने इस हिदायत का पालन नहीं किया होगा और इसलिए उन्हें अपनी जान से हाथ धो लेना पड़ा। किन्तु घटनास्थल पर म्युनिसिपल दारोगा भी तो मौजूद थे। अशिक्षा के कारण यदि हरिजनों ने इस हिदायत की उपेक्षा की तो वह क्षम्तव्य समझी जा सकती है, किन्तु म्युनिसिपल दारोगा ने इसका क्यों नहीं ध्यान रखा?

अपने मां-बाप को क्यों शत्रु समझने लगीं संतानेः मथुरा की एक लड़की ने अपने पूरे परिवार को इसलिए जहर दे दिया,

क्योंकि माता-पिता एक लड़के से उसके रिश्ते के खिलाफ थे। एक अनाथ बच्ची को जिस महिला ने पाला था, उसी पालक मां को अपने दो किशोर मित्रों की मदद से लड़की ने मार दिया। एक लड़के को मां ने मोबाइल देने से मना किया, तो उसने मां की हत्या कर दी। एक बेटे ने पिता को तवे से मार-मारकर हत्या कर दी। एक लड़के ने मां को क्रिकेट बैट से हमला करके मार दिया और नीचे के कमरे में आकर टीवी देखने लगा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। दिल्ली में एक लड़के ने इस बात पर माता-पिता और बहन की हत्या कर दी कि उसके मुकाबले माता-पिता उसकी बहन को ज्यादा पसंद करते थे, वह लड़का बॉक्सिंग चैंपियन भी था।

जयपुर में भी एक लड़के ने माता-पिता और बहन को कुल्हाड़ी से काट डाला। जांच में पाया गया कि यह लड़का मोबाइल एडिक्टेड था। पंद्रह-सोलह घंटे मोबाइल देखता था। उसे अपने किये पर पछतावा भी नहीं था। नागपुर में भी एक लड़के ने अपने माता-पिता को मार डाला, क्योंकि वह कुछ और करना चाहता था और माता-पिता उससे कुछ और आशा रखते थे। बुलंदशहर में भी एक सोलह साल की लड़की ने पहले अपने माता-पिता के खाने में नशे की बहुत सी गोलियां मिलाईं। जब वे बेहोश हो गए, तो उन्हें कुल्हाड़ी से काट डाला। लड़की का कहना था कि वह लड़कों से बात करती थी, माता--पिता को यह पसंद नहीं था, इसलिए उन्हें मार डाला।

मामूली बातों पर अपने ही माता-पिता, अभिभावक की हत्याएं क्या भयभीत नहीं करतीं? आश्चर्य यह है कि इन किशोर-किशोरियों को अपने कृत्य का पछतावा भी नहीं है। ये घटनाएं न केवल डराती हैं, बल्कि समाज में फैल रही एक गंभीर समस्या की तरफ हमारा ध्यान भी खींचती हैं। हमारे समाज में माता-

पिता की हत्या करने वालों को बहुत हेय दृष्टि से देखा जाता है। हमारे प्रेरक ग्रंथों में ऐसे उदाहरण विरल ही हैं, जिनमें बच्चों ने अपने माता-पिता की हत्या की हो। भारत तो 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' के जाप जपने वाला देश रहा है। कहते हैं कि माता-पिता के ऋण से आप कभी मुक्त नहीं हो सकते। श्रवण कुमार जैसे मातृ-पितृ भक्त की कहानियां जनमानस में बसी हुई हैं। मध्य प्रदेश के कान्हा नेशनल पार्क में श्रवण ताल है। मान्यता है कि यह वही ताल है, जिससे श्रवण कुमार अपने माता-पिता के लिए पानी भरने आए थे और महाराज दशरथ के तीर का शिकार हुए थे।

दरअसल, सारी घटनाओं को ध्यान से देखें, तो पता चलता है कि ये युवा नहीं चाहते कि घर वाले उन्हें किसी भी बात पर रोकें-टोकें। वें जो चाहते हैं, उन्हें करने दिया जाए, जबकि माता-पिता या घर वाले चाहते हैं कि बच्चे सुरक्षित रहें। उन्हें कोई नुकसान न पहुंचे। वे जीवन में अच्छा करें। पढ़-लिखकर ठीक-ठाक रोजगार पाएं। छोटी उम्र से ही किसी विपरीत लिंगी आकर्षण में न फंसें। घर वालों के नजरिये से ये बातें सही हैं। लेकिन वे यह भूल जाते हैं कि दुनिया बदल गई है। जिन किशोरों के घर वाले उन्हें ज्यादा टोकते-रोकते हैं, उनके दोस्त ही उनका जीना दूभर कर देते हैं। वे उनका मजाक उड़ाते हैं और अपनी आजादी का हवाला देते हैं कि उनके घर वाले तो किसी बात के लिए मना नहीं करते। ऐसे में, बच्चों के मन में स्पर्द्धा उत्पन्न होती है। वे सोचते हैं, उनका अमुक दोस्त या सहेली अगर अपने मन की कर सकते हैं, तो वे क्यों नहीं? तब उन्हें अपने घर वाले ही सबसे बड़े दुश्मन नजर आते हैं और उनसे छुटकारा एकमात्र विकल्प लगता है। ऐसे बच्चों का जीवन भी बर्बाद हो जाता है।

आज के बच्चे सूचना-समाज में रह रहे हैं। मोबाइल ने उनके लिए दुनिया के दरवाजे खोल रखे हैं। हर तरह की खबर और कंटेंट को देखते हैं, तो उन्हें पुराने तौर-तरीके से समझना भी मुश्किल है। अपने देश में पोर्न साइट्स देखने वाले बच्चों की संख्या बहुत अधिक है। यह भी सच है कि माता-पिता किसी भी सूरत में ये नहीं जान सकते कि बच्चे क्या देख रहे हैं और देखकर क्या सीख रहे हैं? भारत जैसे देश के लिए यह स्थिति बेहद चिंताजनक है, जहां अपने ही घर में माता-पिता बच्चों से सुरक्षित नहीं। इस समस्या के निदान के लिए मनोविज्ञानियों और समाज को गंभीरता से मंथन करना चाहिए।

ज्ञान से गायब प्रेम का जादूः एक बेहद खूबसूरत राजकुमारी थी। उसकी प्रशंसा सभी करते, लेकिन कोई उससे विवाह का प्रस्ताव रखने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। हताश होकर राजा ने अपोलो देवता से सलाह ली। देवता ने राजकुमारी (साइकी) को शोक का वस्त्र पहनाकर पहाड़ की चोटी पर अकेली छोड़ने की सलाह दी और कहा, भोर होने से पहले एक सर्प उसके पास आएगा और उससे विवाह करेगा।

राजा ने अपोलो की सलाह के अनुसार कदम उठाया। खौफ और सर्दी से ठिठुरती राजकुमारी देर रात तक भावी पति का इंतजार करती रही। आखिरकार उसे नींद आ गई। सुबह जब उसकी आंखें खुलीं, तो वह रानी के रूप में एक खूबसूरत महल में थी। हर रात उसका पति उसके पास आता और प्रेम जताता। लेकिन पति की बस एक शर्त थी साइकी जो चाहे मांग सकती थी, मगर उसे उस पर पूरा भरोसा करना होगा और उसका चेहरा कभी नहीं देखना होगा। राजकुमारी लंबे समय तक सुखी रही। हालांकि, कभी-कभी उसे एक सर्प से शादी होने का डर

सताता था। एक रात, जब उसका पति सो रहा था, तब उसने कक्ष को रोशन कर दिया और देखा कि उसका पति इरोस (कामदेव) तो अनुपम सौंदर्यशाली है। कक्ष में रोशनी से इरोस जाग उठा। उसे धक्का लगा कि जिस स्त्री से वह इतना प्रेम करता रहा, वह उसकी एकमात्र इच्छा पूरी नहीं कर पाई और वह गायब हो गया।

हर बार, जब मैं यह कहानी पढ़ता हूँ, तो खुद से पूछता हूँ क्या हमें कभी प्रेम का चेहरा देखने को नहीं मिलेगा? वर्षों बाद समझ पाया कि प्रेम किसी दूसरे व्यक्ति में विश्वास का एक रूप है और हमें इसके हर पल को जीना और उसका आनंद लेना चाहिए। जब भी हम इसको समझने की कोशिश करते हैं, तो इसका जादू गायब हो जाता है।बहरहाल, अपने प्यार को वापस पाने के लिए बेताब साइकी अपने पति इरोस की मां, एफ्रोडाइट (वीनस) की परीक्षाओं के लिए खुद को समर्पित कर देती है। वीनस साइकी की सुंदरता से ईर्ष्या करती थी। उसने एक परीक्षा में साइकी से कहा कि उसे अपनी सुंदरता का कुछ हिस्सा उसे देना होगा। साइकी उस बक्से के बारे में जानने को उत्सुक हो जाती है, जिसमें देवी वीनस के लिए सुंदरता रखी जानी थी। एक बार फिर वह रहस्य जानने के लिए उसे खोल बैठती है। उस बक्से में उसे कुछ भी नहीं मिला, बस भयानक नींद मिली, जिसने उसे निष्क्रिय बना दिया।

उधर इरोस अपनी पत्नी के प्रति अधिक सहनशील न होने के पछतावे में घुल रहे थे। आखिरकार अपने बाण की नोक से उन्होंने साइकी को गहरी नींद से जगाया और कहा तुम अपनी जिज्ञासा के कारण लगभग मर गई थी। दोनों ने परमपिता बृहस्पति से प्रार्थना की कि यह मिलन कभी न टूटे। वरदान मिला,

उस दिन से, साइकी (मानव का सार) और इरोस (प्रेम) हमेशा के लिए एक हो गए। **पाउलो कोएल्हो**

अपमान से मृत्यु श्रेष्ठ हैः सीजर और क्लियोपेट्रा प्राचीन रोमन इतिहास के ऐसे दो पात्र है, जो सदा मन की कल्पना को रोमांचित करते रहे और साहित्य, चित्र, स्थापत्य व मंचों पर अवतरित होते रहे। कालांतर में कल्पनाओं के इतने बिंब बन जाते हैं कि पात्रों और घटनाओं का सत्य कहीं ओझल हो जाता है। ऐसा प्रायः उन हस्तियों के साथ होता आया है, जो सत्तासीन परिवारों से संबंधित होते हुए भी प्रेम व त्रासदी के संयोजन में जीवन का अर्थ तलाशते हैं। सीजर और क्लियोपेट्रा का प्रणय जितना दिलचस्प और विवादास्पद रहा, अंत उतना ही रहस्यपूर्ण और त्रासद था।

कविताओं में क्लियोपेट्रा को खूबसूरती की मिसाल के तौर पर पेश किया जाता है, लेकिन सच तो यह है कि प्यार सिर्फ बाहरी खूबसूरती पर निर्भर नहीं करता। सीजर और क्लियोपेट्रा के मामले में भी यही बात सच है। इस प्रेमी युगल का सौंदर्य ऐसा नहीं था, जिसे उल्लेखनीय कहा जा सके। ये दोनों एक-दूसरे प्रति सौंदर्य से नहीं खिंचे थे, अपितु इन्होंने एक-दूसरे के व्यक्तित्व में वर्चस्व की आकांक्षा को समानता के स्तर पर अनुभव किया था। इसी अनुभव ने दोनों को एक-दूसरे के लिए जरूरी बना दिया। सीजर उस समय विश्व सर्वाधिक शक्ति संपन्न सम्राट था।

14 फरवरी 44 ईसा पूर्व के सैन्य अभियान के पश्चात पहले से ही अनेक विजय अभियानों में गौरवान्वित हुए सीजर ने स्वयं को रोम का अधिनायक घोषित कर दिया। वह अपने परिपथ से भटक गया, क्योंकि उसकी यह घोषणा रोम के राजनीतिक स्वरूप से मेल नहीं खाती थी। क्लियोपेट्रा मूलतः

यूनानी थी। उसके पूर्वज प्टोलिमी तीन शताब्दियों से मिस्र में शासन कर रहे थे। यूनान की प्राचीन सभ्यता व आक्रामकता के अंकुरों को अपने में समेटे क्लियोपेट्रा सत्ता के लिए लंबे समय से उत्तराधिकार की लड़ाई में संघर्षरत थी। प्रतिद्वंद्वी अपने ही भाई-बहन थे।

ऐसे कठिन उद्देश्य की पूर्ति के लिए सीजर जैसे विजेता का साथ सर्वथा उपयुक्त था। सीजर के व्यक्तित्व में अपनी महत्वाकांक्षाओं की प्राप्ति संभावित होते देख वह स्वाभाविक रूप से उसके प्रणय सूत्र में बंध गई।

सीजर शक्तिशाली रोमन साम्राज्य का अधिपति था। रोम के शासक का रोम के परंपरागत शत्रु यूनान की राजकुमारी से प्रणय भला कोई कैसे सहन कर सकता था। उसके इस प्रणय प्रसंग से रोम की सीनेट के सदस्य अप्रसन्न थे। राजधर्म को व्यक्ति निष्ठा से ऊपर रखते हुए, उन्होंने सामूहिक रूप से सीजर की हत्या की योजना बना डाली। 04 अप्रैल 44 ईशा पूर्व की प्रातः सीजर की पत्नी उद्विग्न थी। कारण, उसने पिछली रात्रि अपने पति के जीवन को लेकर एक स्वप्न देखा। सीजर की मनःस्थिति भी अशांत थी। उसे भी कुछ पूर्वाभास हो गया था। पत्नी ने पति को सावधान रहने की और उस दिन घर से बाहर न जाने की सलाह दी। सीजर ने सुझाव मान लिया और निश्चित किया कि वह पूर्व निर्धारित सीनेट की बैठक में न जाकर घर में दिन व्यतीत करेगा।

बैठक में सीजर की प्रतीक्षा हो रही थी। सदस्यों को अपनी योजना में विघ्न पड़ता नजर आया। योजना की सफलता सुनिश्चित की गई थी, क्योंकि सीजर के अंतरंग मित्रों को भी विश्वास में लिया हुआ था, किंतु जब सीजर आ ही नहीं रहा था, तो सब व्यर्थ,सदस्य व्यग्र हो उठे। सीजर के मित्र को उसे लिवाने भेजा गया। सीजर ने टालने का प्रयास किया। मित्र आग्रह पर

उतर आया। सीजर ने वास्तविक कारण बताया। मित्र ने पुरुष मनोविज्ञान खेला 'एक सम्राट को स्वप्न से अपनी गतिविधियां संचालित करना शोभा नहीं देता।' सीजर शिथिल हुआ व प्रस्थान कर गया। प्रातः के ग्यारह बजे थे, सीनेट प्रतीक्षारत थी। उसे एक याचिका पकड़ायी गई। तत्क्षण उस पर आक्रमण करते हुए उसके शाही लिबास को खींचा गया। पहला प्रहार ! कमजोर वार था। सीजर ने सिर बचाने का प्रयास किया, लेकिन और सदस्य भी टूट पड़े। सीजर प्रतिरोध करता रहा। एक प्रहार ब्रूट्स की ओर से आया। सीजर हतप्रभ, 'ब्रूट्स, तुम भी...।' प्रतिरोध टूट गया। जूलियस सीजर की हत्या हो चुकी थी।

इस बीच क्लियोपेट्रा अपनी ताकत बढ़ा रही थी। रोम में मार्क एंटोनी एक सशक्त दावेदार के रूप में उभरा। क्लियोपेट्रा का स्वाभाविक प्रेमी अब मार्क एंटोनी था। इस प्रणय में क्लियोपेट्रा को जो अपेक्षित था, मार्क एंटोनी ने वही किया। उसने क्लियोपेट्रा के आदेश पर उसकी उत्तराधिकार की लड़ाई निष्कंटक कर दी, उसके अंतिम प्रतिद्वंद्वी की हत्या करके।

यही नहीं, अपनी प्रेमिका के प्रेम में वह इतना आसक्त हुआ कि उससे अपनी रोमन पत्नी का परित्याग कर क्लियोपेट्रा से विवाह कर लिया। यह बात रोमवासियों को नागवार लगी। मार्क एंटोनी व क्लियोपेट्रा सेना लेकर आगे बढ़े, लेकिन रोमन सेना से उसका कोई मुकाबला न था। क्लियोपेट्रा कैद हुई। एंटोनी ने आत्महत्या कर ली।

ऑक्टेवियन ने पिछले सभी हिसाब चुकाने के लिए क्लियोपेट्रा को रोम की सड़कों पर घुमाने की योजना बनाई। अपमान से मृत्यु श्रेष्ठ है। युद्ध के इस आदर्श को स्वीकार कर क्लियोपेट्रा ने आत्महत्या कर ली। इसके साथ ऑक्टेवियन की

उसे रोम की सड़कों पर जलील करने की योजना धरी की धरी रह गई।

स्वस्थ जीवन का महान सूत्र है योग : प्रत्येक वर्ष 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' मनाया जाता है। यह दिन केवल योग के महत्व को दर्शाने के लिए ही नहीं, बल्कि यह याद दिलाने के लिए भी है कि जीवनशैली में योग को अपनाकर हम दैहिक, मानसिक और भौतिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं। इस दिन का विशेष कारण यह भी है कि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे जीवन व ऊर्जा के प्रतीक के रूप में भी देखा जाता है। आज के युग में प्रदूषण, रासायनिक तत्वों से भरा भोजन, माइक्रो प्लास्टिक का फैलाव और जीवन-शैली से जुड़ी बीमारियां मानव शरीर को लगातार नुकसान पहुंचा रही हैं। केवल दवाओं और वैक्सीन पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शरीर की प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक क्षमता ही हमें लंबे समय तक सुरक्षित रख सकती है। कोरोना महामारी में हमने देखा है कि आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ ही योग व प्राणायाम ने कारगर भूमिका का निर्वहन किया है। कहा जाता है कि यदि हम दिन के चौबीस घंटे में से रोज कम से कम चौबीस मिनट भी अपने मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए निकालते हैं, तो कई बीमारियों से स्वतः ही बचाव हो जाता है। वैसे, पश्चिम के शोधकर्ताओं ने भी योग को व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की उत्तमता के लिए कारगर माना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया भर में पांच प्रतिशत वयस्क आबादी अवसाद से पीड़ित है। यदि योग को जीवन में उतारा जाता है, तो न केवल व्यक्तिनिष्ठ प्रगति होती है, बल्कि

सामाजिक उत्कर्ष भी होता है। भारत की धर्म संस्कृति और धरोहर ने विश्व को बहुत कुछ ऐसा दिया है, जो इंसान को अच्छे मार्ग कि ओर अग्रसर करता है। इन्हीं में से एक है योग विधि, जिसे अपनाकर इंसान तन-मन से स्वस्थ "होता है। योग मात्र शरीर को ही दुरुस्त नहीं करता, बल्कि मानसिक तौर पर भी स्वस्थ बनाता है। यह इंसान का प्र का प्रकृति से भी तालमेल बढ़ाता है। आज बहुत से लोगों को शारीरिक और मानसिक, दोनों तरह की बीमारियों ने जीना दुश्वार किया हुआ है। आज की भागदौड़ और भौतिकतावाद में इंसान इतना व्यस्त हो गया है कि अपने शरीर की तरफ जरा भी ध्यान नहीं देता और बीमारियों से ग्रस्त हो जाता है। अगर लोग योग को अपना लें, तो वे अपने शरीर को चुस्त-दुरुस्त रख सकते हैं। ख्याल रखना होगा कि योग तभी निरोग बनाएगा, जब योग के साथ-साथ खानपान और जीवनशैली में भी सुधार हो।

गलत योग करने से नुकसान भी हो सकता है। योग करते समय कुछ गलतियां करने से समस्याएं हो सकती हैं। इसके अलावा, कुछ विशेष शारीरिक स्थितियों में योग करना हानिकारक है। गलत तरीके से योग करने या बहुत अधिक योग करने से मांसपेशियों में खिंचाव और दर्द होता है। अगर आप अपनी शारीरिक सीमा से ज्यादा योग करते हैं या बहुत देर तक करते हैं, तो इससे मांसपेशियों पर ज्यादा दबाव पड़ता है। इसके अलावा, बहुत ज्यादा योग करने से थकान महसूस होती है। अगर आपको थकान या जी मिचलाने जैसा महसूस हो, तो तुरंत योग करना बंद कर दें। कुछ लोगों को ज्यादा योग करने से सांस फूलने की समस्या आती है।

अगर आपके शरीर में किसी भी प्रकार की सूजन नजर आए, तो यह भी ज्यादा योग करने का संकेत हो सकता है। कुछ विशेष शारीरिक स्थितियों में योग करना हानिकारक है। गर्भावस्था वाली महिलाएं, हृदय रोग या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं वाले लोगों को योग करने से पहले डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। इसके अलावा, अगर आपको कोई स्वास्थ्य समस्या है, तो योग करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें। योग के तुरंत बाद नहाना या ठंडा पानी पीना शरीर के लिए हानिकारक है। यदि आप योग से होने वाले संभावित नुकसानों के बारे में चिंतित हैं, तो किसी योग्य योग शिक्षक से सलाह लेना सबसे अच्छा है। एक अनुभवी शिक्षक आपको सही तरीके से योग करने व अपनी शारीरिक सीमाओं का सम्मान करने में मदद कर सकता है।

आज की भागमभाग भरी जिंदगी में लोगों के पास बिल्कुल समय नहीं है। जीवन शैली इतनी बदल गई है कि आदमी हँसना तक भूल गया है। नशा, बुरी लतों आदि ने व्यक्ति को अंदर से पूरी तरह खोखला कर दिया है। ऐसे में मानव जीवन का असली मूल्य ही खो गया है। पैसा ही आदमी का मुख्य मकसद हो गया है। इसी वजह से वह अवसाद ग्रस्त भी होता है। मानव जीवन को हर तरह की गतिविधियों की आवश्यकता है। ऐसे में, अगर मनुष्य जीवन का असली आनंद लेता है, तो तनाव से मुक्त होकर हास्य के साथ ही तनाव मुक्त जीवन जीना होगा। लेकिन इसके लिए समय कहां है ? हमारी दिनचर्या ऐसी हो गई है, नौकरी-पेशा की ऐसी भागमभाग है कि एक मिनट की भी फुर्सत नहीं मिल पाती। प्रकृति के अनुसार खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचार भी नहीं मिलते तो व्यक्ति स्वस्थ, मजबूत और

दीर्घायु कैसे रह सकता है? आज जिस तरह लोगों की दिनचर्या हो गई है, वह घातक ही नहीं, जानलेवा भी है।

संगीत भी एक साधना : भारत में संगीत क्षणिक आमोद-प्रमोद व अतृप्त तृष्णा की वस्तु न होकर समस्त ब्रह्मांड अथवा व्यक्त जगत से ऐक्य का आभास है, चिरानंद प्रदान करने वाली आध्यात्मिक साधना है और सांसारिक दुखों से मुक्ति प्रदान करने व ब्रह्म तक मानव को ले जाने वाला मार्ग है। संसार में संभवतः ऐसा अन्य कोई देश नहीं, जहां संगीत इतने पुराने युग से जनजीवन में इतना व्याप्त हो, जितना वह भारत में सहस्त्रों वर्षों से रहा है।

संसार की सभी जातियों की अपेक्षा भारतवासियों के कहीं अधिक संगीतप्रेमी होने की बात का जिक्र मेगस्थनीज भी कर गया है। ईसा पूर्व 150 के लगभग लिखे गए इंडिका नामक अपने ग्रंथ में आर्यन ने मेगस्थनीज का यह कथन उद्धृत किया है कि सब जातियों की अपेक्षा भारतीय लोग संगीत के कहीं अधिक प्रेमी हैं।

भारत में संगीत ने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में वह काम किया है, जो संभवतः अन्य कोई शक्ति शताब्दियों के परिश्रम के पश्चात भी न कर पाती। देश के किसी भी ग्राम में आप चले जाइए, आपको वहां का साधारण कृषक भी अनेक आध्यात्मिक तथ्यों से पूर्णतया परिचित मिलेगा। श्री कजिन्स ने अपने ऐसे ही एक अनुभव का जिक्र कुछ दिनों पूर्व परिजन पत्रिका में किया था। उन्होंने लिखा था, एक ग्राम में वह किसी सज्जन से कई घंटे गूढ़ दार्शनिक तत्वों की बातचीत करते रहे। उस सज्जन के ज्ञान से प्रभावित कजिन्स ने चलते समय उनसे कहा कि वह अपना पता लिखकर दे दें। किन्तु उनके आश्चर्य की

उस समय कोई सीमा नहीं रही, जब उस सज्जन ने ऐसा करने में अपनी असमर्थता प्रकट की, क्योंकि वह वर्णमाला से सर्वथा अपरिचित था।

मेरे विचार से वर्णमाला से अपरिचित होने पर यदि हमारा साधारण जन इस प्रकार का ज्ञान रखता है, तो उसका एक प्रमुख कारण यही है कि संगीतमय गाथाओं और कथाओं ने उसके हृदय में उस ज्ञान को बैठा दिया है। मैं कभी-कभी सोचा करता हूँ कि क्या कारण है, भारत ही एक ऐसा देश है, जिसमें तुलसी या कबीर जैसे कवियों की कृतियों से अनपढ़ लोग भी करोड़ों की संख्या में परिचित हैं। मैं समझता हूं कि इस रहस्य का हल यही है कि हमारे जीवन में इतना बुरा हुआ है कि सहज में ही इन कवियों के मधुर पद घर-घर और ग्राम-ग्राम की संपत्ति बन गए। आज भी ऐसे अनेक लोग मिल जाएंगे, जो अनपढ़ होते हुए भी श्रीरामचरितमानस के पद सादर सुना सकते हैं, और कबीर के पदों का तो कहना ही क्या है ?

अतः भारत के सांस्कृतिक-आध्यात्मिक विकास में संगीत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है। हमारे देश के प्राचीन युग में संगीत शास्त्रियों और संगीतज्ञों का भी बड़ा ऊंचा दर्जा होता था, जैसा कि संगीत शास्त्रियों की मुनि और ऋषि की उपाधियों से पूर्णतया स्पष्ट है। **डॉ राजेंद्र प्रसाद**